कला शिक्षा

छठी कक्षा

नि:शुल्क वितरण के लिए

टेली मानस हेल्पलाइन

Tele MANAS (Tele Mental Health Assistance and Networking Across States)

(१४४१६/१८००-८९-१४४१६)

राष्ट्रीय मानसिक स्वास्थ्य कार्यक्रम के अंतर्गत केंद्र द्वारा प्रायोजित योजना 'टेली मानस' महाराष्ट्र राज्य में अक्तूबर २०२२ से कार्यान्वित की गई है। 'टेली मानस' कार्यक्रम के अंतर्गत हेल्पलाइन नंबर १४४१६ द्वारा निःशुल्क एकात्मिक और सर्वसमावेशक मानसिक स्वास्थ्य सेवा २४x७ प्रदान की जाती है। इसमें विविध मानसिक समस्याओं के लिए विशेषज्ञों द्वारा उपचार और समुपदेशन किया जाता है। 'टेली मानस' हेल्पलाइन पर आपके द्वारा दी गई जानकारी को पूर्णतः गोपनीय रखा जाता है। इस कारण विद्यार्थी अपनी समस्याएँ हेल्प लाइन नंबर पर कॉल करके निःसंकोच बताएँ तथा मन में उत्पन्न किसी भी शंका के संबंध में पूछकर उसके निराकरण और अपनी समस्या से संबंधित मार्गदर्शन प्राप्त करें और अन्य लोगों को भी इस सुविधा का लाभ उठाने हेतु प्रोत्साहित करें।

मनोदर्पण

शिक्षा मंत्रालय द्वारा राष्ट्रीय शैक्षणिक संशोधन व प्रशिक्षण परिषद के अंतर्गत जुलाई २०२० से मनोदर्पण (८४४८४४०६३२) हेल्पलाइन की निःशुल्क दूरध्वनि सेवा आरंभ की गई है। यह सुविधा विद्यार्थियों, अभिभावकों एवं शिक्षकों के लिए मनोवैज्ञानिक मार्गदर्शन तथा सहायता प्रदान करने हेतु प्रतिदिन प्रातः ८ बजे से संध्या ८ बजे की कालावधि में उपलब्ध कराई गई है। विद्यार्थी, अभिभावक एवं शिक्षक हेल्पलाइन पर संपर्क करके मार्गदर्शन एवं समुपदेशन प्राप्त कर सकते हैं।

शासन निर्णय क्रमांक : अभ्यास-२११६/(प्र.क्र.४३/१६) एसडी-४ दिनांक २५.०४.२०१६ के अनुसार समन्वय समिति का गठन किया गया।
दि. ०१. ०६.२०२६ को हुई इस समिति की बैठक में यह पाठ्यपुस्तक शैक्षणिक वर्ष २०२६-२०२७ से निर्धारित करने हेतु मान्यता प्रदान की गई है।

कला शिक्षा

छठी कक्षा

समग्र शिक्षा

महाराष्ट्र राज्य पाठ्यपुस्तक निर्मिती व अभ्यासक्रम संशोधन मंडळ, पुणे - ४११ ००४

चौखट में दिए गए Q.R.Code को स्मार्ट फोन द्वारा स्कैन करने पर तुम्हें डिजिटल पाठ्यपुस्तक एवं पाठ्यपुस्तक में दिए घटकों से संबंधित दृक, श्रव्य एवं दृक-श्रव्य रूप में अध्ययन-अध्यापन सामग्री भी उपलब्ध होगी।

प्रथमावृत्ति : २०२६ © महाराष्ट्र राज्य पाठ्यपुस्तक निर्मिती व अभ्यासक्रम संशोधन मंडळ, पुणे–४११००४
इस पुस्तक का सर्वाधिकार महाराष्ट्र राज्य पाठ्यपुस्तक निर्मिती व अभ्यासक्रम संशोधन मंडळ के अधीन सुरक्षित है। इस पुस्तक का कोई भी भाग महाराष्ट्र राज्य पाठ्यपुस्तक निर्मिती व अभ्यासक्रम संशोधन मंडळ के संचालक की लिखित अनुमति के बिना प्रकाशित नहीं किया जा सकता।

'कला शिक्षा' विषय समिति

श्री श्रीराम महाजन (अध्यक्ष)
श्री अजय पाटील (सदस्य)
श्री दीपक जोगदंड (सदस्य)
श्री विकास आहेर (सदस्य)
श्री पुरेंद्रकुमार देवगिरकर (सदस्य)
श्री मिलिंद जाधव (सदस्य)
श्री गंगाधर गोतारणे (सदस्य)
श्री सुनिल देसाई (सदस्य)
श्री धनाजी कराडे (सदस्य)
श्री उमेश डोंगे (सदस्य)
श्री मोहन भोजपूरे (निमंत्रित)
डॉ. सुमेधा ठाकूर (निमंत्रित)
श्री अनिल जाधव (निमंत्रित)
श्री शिवाजी हांडे (निमंत्रित)
डॉ. सागर कुलकर्णी (निमंत्रित)
श्रीमती रश्मी जोशी (निमंत्रित)
श्रीमती जुई देशिंगकर (निमंत्रित)
श्रीमती निताली हरगुडे (निमंत्रित)
श्री नंदकिशोर नगरकर (निमंत्रित)
श्री शशिकांत देशमुख (निमंत्रित)
श्री ओंकार वैरागकर (निमंत्रित)
श्री अमोल बोधे (निमंत्रित)
डॉ. गीतांजली बोरुडे (अभ्यासक्रम समन्वयक)
डॉ. अजयकुमार लोळगे (सदस्य सचिव)

समीक्षक

श्री अभिजीत धोंडफळे (गुणवत्ता परीक्षक)
ॲड. संदेश साखरे (विधि तज्ञ)
प्रा. विलास पंडीत (CWSN तज्ञ)

संयोजक

डॉ. अजयकुमार लोळगे
विशेषाधिकारी कार्यानुभव (वि. का.)
प्र. विशेषाधिकारी कलाशिक्षण

हिंदी भाषांतर संयोजन

डॉ. अलका पोतदार
विशेषाधिकारी, हिंदी (वि.का)

*** हिंदी भाषांतर विषय तज्ञ ***

श्री महेश खैरनार
डॉ. प्रमोद शुक्ल
श्रीमती रंजना पिंगळे
डॉ. निर्मला राजपूत

मुखपृष्ठ एवं अंतर्गत चित्राकृति :
श्री लक्ष्मीकांत काळे, श्रीमती प्राजक्ता केरकर
अक्षरांकन : मुद्रा विभाग, पाठ्यपुस्तक मंडळ, पुणे
कागज : ७० जी.एस.एम. क्रीमवोव
मुद्रणादेश : N/PB/2026-27/Qty.3700
मुद्रक : Audumbar Prints, Pune

निर्मिति

श्रीमती मिताली शितप
प्र. मुख्य निर्मिति अधिकारी

श्री संदीप अजगावकर
निर्मिति अधिकारी

प्रकाशक

श्री हेमंत बाबर
प्र. नियंत्रक
पाठ्यपुस्तक निर्मिती मंडळ, प्रभादेवी, मुंबई – २५

भारत का संविधान

उद्देशिका

हम, भारत के लोग, भारत को एक **संपूर्ण प्रभुत्व-संपन्न समाजवादी पंथनिरपेक्ष लोकतंत्रात्मक गणराज्य** बनाने के लिए, तथा उसके समस्त नागरिकों को :

सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक **न्याय,**

विचार, अभिव्यक्ति, विश्वास, धर्म

और उपासना की **स्वतंत्रता,**

प्रतिष्ठा और अवसर की **समता**

प्राप्त कराने के लिए,

तथा उन सब में

व्यक्ति की गरिमा और राष्ट्र की एकता

और अखंडता सुनिश्चित करने वाली **बंधुता**

बढ़ाने के लिए

दृढ़संकल्प होकर **अपनी इस संविधान सभा में** आज तारीख 26 नवंबर, 1949 ई. (मिति मार्गशीर्ष शुक्ला सप्तमी, संवत् दो हजार छह विक्रमी) **को एतद् द्वारा इस संविधान को अंगीकृत, अधिनियमित और आत्मार्पित करते हैं ।**

भारत का संविधान

भाग ४ क

मूल कर्तव्य

अनुच्छेद ५१ क

मूल कर्तव्य– भारत के प्रत्येक नागरिक का यह कर्तव्य होगा कि वह –

(क) संविधान का पालन करे और उसके आदर्शों, संस्थाओं, राष्ट्रध्वज और राष्ट्रगान का आदर करे;

(ख) स्वतंत्रता के लिए हमारे राष्ट्रीय आंदोलन को प्रेरित करने वाले उच्च आदर्शों को हृदय में संजोए रखे और उनका पालन करे;

(ग) भारत की संप्रभुता, एकता और अखंडता की रक्षा करे और उसे अक्षुण्ण रखे;

(घ) देश की रक्षा करे और आह्वान किए जाने पर राष्ट्र की सेवा करे;

(ङ) भारत के सभी लोगों में समरसता और समान भ्रातृत्व की भावना का निर्माण करे जो धर्म, भाषा और प्रदेश या वर्ग पर आधारित सभी भेदभावों से परे हो, ऐसी प्रथाओं का त्याग करे जो स्त्रियों के सम्मान के विरुद्ध हैं;

(च) हमारी सामासिक संस्कृति की गौरवशाली परंपरा का महत्त्व समझे और उसका परिरक्षण करे;

(छ) प्राकृतिक पर्यावरण की, जिसके अंतर्गत वन, झील, नदी और वन्य जीव हैं, रक्षा करे और उसका संवर्धन करे तथा प्राणिमात्र के प्रति दयाभाव रखे;

(ज) वैज्ञानिक दृष्टिकोण, मानववाद और ज्ञानार्जन तथा सुधार की भावना का विकास करे;

(झ) सार्वजनिक संपत्ति को सुरक्षित रखे और हिंसा से दूर रहे;

(ञ) व्यक्तिगत और सामूहिक गतिविधियों के सभी क्षेत्रों में उत्कर्ष की ओर बढ़ने का सतत प्रयास करे जिससे राष्ट्र निरंतर बढ़ते हुए प्रयत्न और उपलब्धि की नई ऊँचाइयों को छू ले;

(ट) यदि माता-पिता या संरक्षक है, छह वर्ष से चौदह वर्ष तक की आयुवाले अपने, यथास्थिति बालक या प्रतिपाल्य के लिए शिक्षा के अवसर प्रदान करे।

राष्ट्रगान

जनगणमन - अधिनायक जय हे
भारत - भाग्यविधाता ।
पंजाब, सिंधु, गुजरात, मराठा,
द्राविड, उत्कल, बंग,
विंध्य, हिमाचल, यमुना, गंगा,
उच्छल जलधितरंग,
तव शुभ नामे जागे, तव शुभ आशिस मागे,
गाहे तव जयगाथा,
जनगण मंगलदायक जय हे,
भारत - भाग्यविधाता ।
जय हे, जय हे, जय हे,
जय जय जय, जय हे ।।

प्रतिज्ञा

भारत मेरा देश है । सभी भारतीय मेरे भाई-बहन हैं ।

मुझे अपने देश से प्यार है । अपने देश की समृद्ध तथा विविधताओं से विभूषित परंपराओं पर मुझे गर्व है ।

मैं हमेशा प्रयत्न करूँगा/करूँगी कि उन परंपराओं का सफल अनुयायी बनने की क्षमता मुझे प्राप्त हो ।

मैं अपने माता-पिता, गुरुजनों और बड़ों का सम्मान करूँगा/करूँगी और हर एक से सौजन्यपूर्ण व्यवहार करूँगा/करूँगी ।

मैं प्रतिज्ञा करता/करती हूँ कि मैं अपने देश और अपने देशवासियों के प्रति निष्ठा रखूँगा/रखूँगी । उनकी भलाई और समृद्धि में ही मेरा सुख निहित है ।

राज्यगीत

जय जय महाराष्ट्र माझा, गर्जा महाराष्ट्र माझा
जय जय महाराष्ट्र माझा, गर्जा महाराष्ट्र माझा ।।धृ।।

भिती न आम्हा तुझी मुळी ही गडगडणाऱ्या नभा
अस्मानाच्या सुलतानीला जबाब देती जिभा
सह्याद्रीचा सिंह गर्जतो शिव शंभू राजा
दरी दरीतून नाद गुंजला महाराष्ट्र माझा
जय जय महाराष्ट्र माझा, गर्जा महाराष्ट्र माझा ।।१।।

काळ्या छातीवरी कोरली, अभिमानाची लेणी
पोलादी मनगटे खेळती, खेळ जीवघेणी
दारिद्र्याच्या उन्हात शिजला
निढळाच्या घामाने भिजला
देश गौरवासाठी झिजला
दिल्लीचे ही तख्त राखितो, महाराष्ट्र माझा
जय जय महाराष्ट्र माझा, गर्जा महाराष्ट्र माझा
जय जय महाराष्ट्र माझा ।।२।।

प्रस्तावना

विद्‌यार्थी मित्रो,

छठी कक्षा में तुम सभी का स्वागत है। छठी कक्षा की ‘कला शिक्षा’ यह पाठ्‌यपुस्तक तुम्हारे हाथों में सौपते हुए हमें अत्यंत आनंद हो रहा है।

कला सीखते समय आनंद देने वाली और तुम्हारी कल्पनाओं को शक्ति देने वाली यह पाठ्‌यपुस्तक है। चित्र बनाना, रंग भरना, गीत गाना, अभिनय करना, नृत्य करना या अलग-अलग गतिविधियों के माध्यम से भावनाएँ व्यक्त करना, इन सभी बातों को ही कला शिक्षा कहते हैं। कला के माध्यम से हम अपने विचार और भावनाओं को सुंदर तरीके से व्यक्त कर सकते हैं।

इस पाठ्‌यपुस्तक में दृश्य कला, रंगमंच, संगीत, नृत्य और गति ये अलग-अलग चार कला प्रकारों का समावेश किया गया है। दृश्य कला में तुम रेखांकन, स्मरणचित्र, वस्तुचित्र, संकल्पचित्र, शिल्पकला, अक्षरलेखन और कला संस्कृति जैसी चीजें सीखोगे। रंगमंच के माध्यम से अभिनय का अनुभव प्राप्त करोगे। संगीत में गायन और वादन सीखोगे तो नृत्य और गतिविधियों के माध्यम से शरीर की लय और संतुलन का अनुभव कर पाओगे। इस पाठ्‌यपुस्तक में दिए गए उपक्रम तुम्हें स्वयं विचार करने, कल्पना करने और नई चीजों को प्रस्तुत करने में सहायता करेंगे। कुछ उपक्रम अकेले करने हैं तो कुछ उपक्रम मित्रों के साथ समूह में करने हैं। इससे सीखना और भी मजेदार और आनंददायी होगा।

इस पाठ्‌यपुस्तक में चित्र बनाते समय और कलाकृतियाँ बनाते समय अलग-अलग साधनों, सामग्री और तकनीकों का उपयोग करने का अवसर दिए गए हैं। जितना संभव हो सके पर्यावरण के अनुकूल सामग्री का उपयोग करने का प्रयास करो। अपने आस-पास उपलब्ध वस्तुओं से भी सुंदर कला प्रस्तुत की जा सकती है, इसका तुम अनुभव करोगे। स्थानीय और प्रादेशिक कला, कलाकारों और संस्कृति की पहचान कराने के लिए कुछ उपक्रम और क्षेत्र भ्रमण सुझाए गए हैं जिससे हमारी परंपरा के सुंदर कलावैभव को तुम करीब से देख पाओगे।

प्रत्येक विद्‌यार्थी अलग होता है और प्रत्येक में कुछ न कुछ विशेष गुण होते हैं। इसलिए इस पुस्तक के उपक्रम करते समय अपनी कल्पनाओं को स्वतंत्र रूप से व्यक्त करो। गलती होने का डर नहीं रखो। प्रयास करते रहो और कला के प्रकारों को सीखने का आनंद लो। यह पाठ्‌यपुस्तक तुम्हारे अंदर के कलाकार को जागृत करेगी और सीखने की यात्रा को और अधिक सुंदर बनाएगी, ऐसा हमें विश्वास है।

आइए, आनंद से सीखो और अपनी कल्पनाओं को रंग दो!

(अनुराधा ओक)
संचालक
महाराष्ट्र राज्य पाठ्‌यपुस्तक निर्मिती व
अभ्यासक्रम संशोधन मंडळ, पुणे ४

पुणे

दिनांक : १ मई २०२६

भारतीय सौर दिनांक : वैशाख ११, शके १९४८

महाराष्ट्र दिन

शिक्षकों के लिए

शिक्षक मित्रो,

पूर्व माध्यमिक स्तर पर कला शिक्षा विद्यार्थियों की अभिव्यक्ति का माध्यम है। विद्यार्थियों में सृजनशीलता, कल्पनाशक्ति और रसास्वादन करने की प्रवृत्ति विकसित करने के लिए कुछ बातों को ध्यान में रखना आवश्यक है।

१. आनंददायी वातावरण की निर्मिति :

कला कक्षा में अनुशासन के साथ-साथ खुलेपन का वातावरण रखें। नये-नये प्रयोग करने के लिए प्रेरणा कला के समय बिना किसी दबाव के स्वतंत्र रूप से स्वयं को व्यक्त करने के लिए प्रोत्साहित करें।

२. प्रक्रिया को महत्त्व :

- तैयार की गई कलाकृति कितनी परिपूर्ण है, इसकी अपेक्षा उसे तैयार करते समय कितने प्रयास किए गए और क्या सीखा गया, इस प्रक्रिया को अधिक महत्त्व दें।
- प्रत्येक विद्यार्थी की सीखने की गति और शैली अलग होती है, इसका ध्यान रखें।

३. प्रात्यक्षिक और प्रस्तुतीकरण :

- केवल सैद्धांतिक जानकारी न देते हुए स्वयं कुछ करके दिखाएँ (जैसे किसी एक तान को लेकर दिखाना, रंगों का मिश्रण करना या अभिनय की कोई मुद्रा करके दिखाना)।
- विद्यार्थियों में प्रस्तुतीकरण का आत्मविश्वास निर्माण करने के लिए कक्षा में छोटे प्रदर्शन या प्रस्तुतीकरण आयोजित करें।

४. सामग्री का उपयोग :

- महँगी सामग्री के बजाय आस-पास के परिसर में आसानी से उपलब्ध होने वाली सामग्री (जैसे मिट्टी, पत्थर, पत्ते, बेकार वस्तुएँ) का उपयोग करने के लिए विद्यार्थियों को प्रेरित करें।
- बर्तन, रंग और अन्य साधनों की देखभाल कैसे करें इसका शास्त्रीय प्रशिक्षण दें।

५. बहुआयामी दृष्टिकोण :

- चित्रकला, संगीत, नृत्य और नाट्य ये कलाएँ एक-दूसरे से कैसे जुड़ी हुई हैं, यह बताए। (जैसे संगीत के ताल पर चित्र बनाना या कविता पर आधारित नाट्यीकरण करना)।
- कला विषय का संबंध अन्य विषयों (भाषा, इतिहास, विज्ञान आदि) से जोड़कर शिक्षा को अधिक रोचक बनाएँ।

६. रसास्वादन और मूल्यांकन :

- मूल्यांकन करते समय केवल गलतियाँ निकालने के बजाय सकारात्मक बातों को बताएँ।
- प्रसिद्‌ध कलाकारों की कलाकृतियाँ दिखाएँ जिससे 'रसग्रहण' (Appreciation) करने की प्रवृत्ति बढ़ेगी।
- शासन द्‌वारा समय-समय पर निर्धारित की गई मूल्यांकन पद्‌धति का उपयोग करें। प्रात्यक्षिकों पर विशेष ध्यान दें।

७. समावेशकता :

- कक्षा के विशेष आवश्यकता वाले (CWSN) विद्यार्थियों के संबंध में अध्ययन-अध्यापन करते समय उचित भाषा तथा अन्य सहायक अध्यापन पद्‌धतियों का विचार करें साथ ही उपक्रम और मूल्यांकन में आवश्यक बदलाव करें ताकि वे भी आनंदपूर्वक सहभागी हो सकें।

पाठ्यपुस्तक में दी गई सैद्‌धांतिक जानकारी की अपेक्षा प्रायोगिक कार्य पर अधिक जोर दें।

कला शिक्षा विषय समिति
पाठ्यपुस्तक मंडळ, पुणे

विद्यार्थियों के लिए

विद्यार्थी मित्रो,

छठी कक्षा का यह वर्ष तुम्हारी कलात्मक यात्रा का एक महत्त्वपूर्ण चरण है। दृश्य कला, रंगमंच, संगीत, नृत्य और गति ये चारों कलाएँ तुम्हारे जीवन में आनंद और अनुशासन का निर्माण करती हैं। इन विषयों का अध्ययन करते समय निम्नलिखित बातों को ध्यान में रखना चाहिए।

१. निरीक्षण और सजगता

- अपने आसपास के प्रकृति, रंगों, आवाजों और व्यक्तियों की गतिविधियों का ध्यानपूर्वक निरीक्षण करना चाहिए।
- प्रकृति में होने वाले बदलाव (जैसे वर्षा ऋतु में पेड़ों के बदलते रंग, पक्षियों की विभिन्न आवाजें) का सूक्ष्म निरीक्षण करके उनसे सीखने का प्रयास करना चाहिए।

२. निरंतर अभ्यास

- कोई भी कला एक दिन में प्राप्त नहीं होती, चाहे वह चित्र बनाना हो, गीत गायन हो या नाटक / नृत्य की गतिविधियाँ; इसलिए उनका प्रतिदिन अभ्यास करना चाहिए।
- 'कला' रटने की चीज नहीं है, बल्कि यह अनुभव करने की चीज है।

३. सामग्री की देखभाल और स्वच्छता

- कलाविष्कार की सामग्री और साधनों, वाद्य या वेशभूषा की देखभाल करनी चाहिए।
- कलाकृति पूरी होने के बाद कला की सामग्री को सही जगह पर व्यवस्थित रूप से रखना चाहिए।

४. कल्पनाशक्ति और प्रयोगशीलता

- दूसरों की नकल करने के बजाय अपनी कल्पना से कुछ नया करने का प्रयास करना चाहिए।
- गलतियाँ होंगी, इसका डर नहीं रखना चाहिए; कला में प्रत्येक गलती कुछ नया सीखने का अवसर होती है।

५. रसास्वादन और सम्मान

- अपनी कला के साथ-साथ अपने मित्रों की कला का भी सम्मान करो। एक-दूसरे के काम में अच्छी बातें खोजने की आदत डालो।
- प्रसिद्ध कलाकारों, गायकों और नर्तकों की जानकारी पढ़ो और उनके कार्यक्रम देखने का प्रयास करो।

६. एकाग्रता और अनुशासन

- गायन या वादन करते समय अपने शरीर की स्थिति (Posture) सही रखनी चाहिए।
- चित्र बनाते समय या अभिनय करते समय अपना पूरा ध्यान उस कार्य पर केंद्रित करना चाहिए।

कलाएँ केवल अंकों के लिए नहीं हैं, बल्कि ये तुम्हारे व्यक्तित्व के विकास के लिए हैं इसलिए आनंद और उत्साह के साथ इस प्रक्रिया में सहभागी बनो।

छठी कक्षा

क्रमांक	अध्ययन निष्पत्ति
विषय : दृश्य कला	
पाठ्यक्रम उद्देश्य : CG – 1 : विभिन्न कला रूपों का अन्वेषण करने तथा आत्मविश्वासपूर्वक अभिव्यक्त होने के लिए विकसित करना।	
क्षमता : C – 1.1 : विभिन्न दृश्य कला प्रकारों द्वारा अपने व्यक्तिगत तथा दैनिक जीवन के अनुभव आत्मविश्वास से व्यक्त करता है।	
06AE01	यांत्रिक साधनों के बिना विभिन्न रेखाओं का रेखांकन करता है।
06AE02	परिसर के विभिन्न परिचित घटकों और आकारों का आत्मविश्वासपूर्वक चित्रण करता है।
06AE03	विभिन्न छोटे प्रसंग, दृश्य, घटनाएँ और खेलों को स्मरण कर उनपर आधारित चित्रण करता है।
क्षमता : C – 1.2 : सहयोगपूर्वक दृश्य कला अभ्यास विकसित करने की प्रक्रिया में लचीलापन प्रदर्शित करता है।	
06AE04	व्यक्तिगत अथवा समूह कार्य के माध्यम से कोलाज निर्माण करता है।
06AE05	पर्यावरण-अनुकूल वस्तुओं का सृजनात्मक उपयोग करके व्यक्तिगत अथवा समूह में त्रिविमिय कलाकृति तथा कोलाज तकनीक का उपयोग कर सजावट करता है।
पाठ्यक्रम उद्देश्य : CG – 2 : कला के माध्यम से वैकल्पिक विचारों की खोज करने के लिए सृजनशीलता और कल्पनाशक्ति का उपयोग करना।	
क्षमता : C – 2.1 : :प्रसंग प्रसंगों अथवा कहानियों पर आधारित ऐसी दृश्य कलाकृतियाँ तैयार करता है, जो उसके आस-पास की रूढ़ धारणाओं को चुनौती देती हैं (जैसे लिंगभेद आधारित भूमिकाएँ)।	
06AE06	प्रकृति के विभिन्न घटकों का स्मृति के आधार पर चित्रण करता है।
06AE07	सामाजिक जागरूकता विषयों पर आधारित सृजनात्मक चित्रण करता है।
06AE08	चित्रों में अपने कल्पनाशील विचार स्वतंत्र रूप से प्रस्तुत करता है।
क्षमता : C – 2.2 : दृश्य प्रतिमाओं, प्रतीकों और दृश्य रूपकों को अपने व्यक्तिगत अनुभवों, भावनाओं तथा कल्पनाओं से जोड़ता है।	
06AE09	वस्तुचित्र और स्थिरचित्र के बीच का अंतर समझकर शीघ्र रेखांकन करता है।
06AE10	सममित तथा असममित रचना पद्धतियों का उपयोग करके सृजनात्मक संरचना तैयार करता है।
06AE11	सामने रखी वस्तुओं को आकार के अनुसार वर्गीकृत कर उनके अंतर को समझते हुए चित्रण करता है।
पाठ्यक्रम उद्देश्य : CG – 3 : कला के तत्वों, प्रक्रियाओं और तकनीकों को समझना तथा उनका उपयोग करना।	
क्षमता : C – 3.1 : दृश्य कला में विभिन्न सामग्रियों, उपकरणों और तकनीकों का उपयोग करते समय सावधानी रखता है तथा उचित चयन करता है।	
06AE12	रंगों की श्रेणियों का परिचय प्राप्त कर संरचना में उनका उपयोग करता है।
06AE13	चित्र की सौंदर्य रचना के लिए विभिन्न तकनीकों का कल्पनाशील उपयोग करता है।
06AE14	अंकों तथा अक्षरों के विशिष्ट लेखन के लिए विभिन्न माध्यमों, उपकरणों और तकनीकों का उपयोग करता है।
06AE15	कंप्यूटर पर उपलब्ध विभिन्न प्रकार के फॉन्ट की विशेषताओं का अध्ययन कर उनका सृजनात्मक उपयोग करता है।
क्षमता : C – 3.2 : योजना से लेकर अंतिम प्रदर्शन तक विचारों और दृश्य अभिव्यक्ति की तकनीकों को विकसित करता है तथा संपूर्ण प्रक्रिया की समीक्षा करता है।	
06AE16	रचना के मूल तत्वों का उपयोग कर संकल्पना चित्र तैयार करता है।
06AE17	मिट्टी के माध्यम से विभिन्न ज्यामितीय ठोस आकृतियों का निर्माण करता है।
06AE18	मिट्टी के माध्यम से विभिन्न ज्यामितीय ठोस आकृतियों का निर्माण करता है।
पाठ्यक्रम उद्देश्य : CG – 4 : क्षेत्रीय कला और सांस्कृतिक परंपराओं के सौंदर्यबोध से स्वयं को परिचित करना।	
क्षमता : C – 4.1 : विभिन्न स्थानीय और क्षेत्रीय कलाओं से जुड़ाव स्थापित करता है।	
06AE19	परिसर में उपलब्ध दृश्य कला प्रकारों अथवा कला व्यवसायों की जानकारी संगृहित करता है।
06AE20	स्थानीय अथवा क्षेत्रीय दृश्य कलाओं का अनुकरण कर अपने अनुभव का वर्णन करता है।
क्षमता : C – 4.2 : अपने क्षेत्र तथा भारत के कुछ दृश्य कलाकारों के जीवन और कार्यों का वर्णन करता है।	
06AE21	स्थानीय अथवा क्षेत्रीय परिचित शिल्प कलाओं की नवीन कला-शैली संबंधी जानकारी का संकलन करता है।
विषय : रंगमंच	
पाठ्यक्रम उद्देश्य : CG – 1 : विभिन्न कला रूपों के माध्यम से आत्म-अभिव्यक्ति तथा आत्मविश्वास विकसित करना।	
क्षमता : C – 1.1 : व्यक्तिगत और दैनिक जीवन के अनुभवों को विभिन्न नाट्य गतिविधियों के माध्यम से आत्मविश्वासपूर्वक व्यक्त करना।	
06AE22	दैनिक जीवन के विभिन्न प्रसंगों का निरीक्षण कर छोटे प्रसंगों का आत्मविश्वास से वर्णन करता है।
06AE23	दैनिक जीवन के अनुभवों का उत्स्फूर्त रूप से प्रस्तुतीकरण करता है।
06AE24	चयनित प्रसंग का समूह में प्रस्तुतीकरण करता है।
क्षमता : C – 1.2 : सहयोगपूर्वक नाटक विकसित करने की प्रक्रिया में लचीलापन प्रदर्शित करता है।	

06AE25	नाट्य प्रवेश (नाटक के अंश) का वाचन करता है।
06AE26	परस्पर सहयोग से नाटक के पात्रों का चयन करके नाट्य प्रसंग का समूह में प्रस्तुतीकरण करता है।
पाठ्यक्रम उद्देश्य : CG – 2 : कला के माध्यम से वैकल्पिक कल्पनाओं की खोज करने के लिए सृजनशीलता एवं कल्पनाशक्ति का उपयोग करना।	
क्षमता : C – 2.1 : प्रसंग अथवा कहानी पर आधारित ऐसी नाट्यकृतियाँ तैयार करता है, जो उसके आस-पास की रूढ़ धारणाओं को चुनौती देती हैं (जैसे – लैंगिक भूमिकाएँ)।	
06AE27	अपने आस-पास की रूढ़ धारणाओं को समझकर छोटे प्रसंग का लेखन करता है।
06AE28	कहानी अथवा किसी प्रसंग पर आधारित नाट्यछटा तैयार करता है।
क्षमता : C – 2.2 : दृश्य प्रतिमाओं, प्रतीकों तथा दृश्य रूपकों को अपने व्यक्तिगत अनुभवों, भावनाओं और कल्पनाओं से जोड़ता है।	
06AE29	मूक अभिनय करते समय नवरसों में से उपयुक्त रसों का प्रयोग करता है।
पाठ्यक्रम उद्देश्य : CG – 3 : कला के घटकों, प्रक्रियाओं और तकनीकों को समझना तथा उनका उपयोग करना।	
क्षमता : C – 3.1 : रंगमंच के मूलभूत शिष्टाचारों का सावधानीपूर्वक पालन करता है तथा विभिन्न सामग्री, साधनों और नाट्यकला की तकनीकों का उपयोग करते समय सूचित चयन करता है।	
06AE30	प्रस्तुतीकरण करते समय रंगमंच के मूलभूत शिष्टाचारों का पालन करता है।
06AE31	प्रस्तुतीकरण के लिए रंगमंच पर उपलब्ध साधन-सामग्री का संग्रह करता है।
क्षमता : C – 3.2 : दर्शकों के लिए नाटक की योजना के प्रारंभिक चरण से अंतिम प्रस्तुतीकरण तक विचारों और तकनीकों को गुणवत्तापूर्ण बनाता है तथा संपूर्ण प्रक्रिया का पुनरावलोकन करता है।	
06AE32	रंगमंच एवं प्रेक्षागृह के बारे में जानकारी प्राप्त कर कक्षा में नाट्य प्रस्तुति करता है।
06AE33	प्रस्तुतीकरण के विभिन्न चरणों की जानकारी लेकर दिए गए प्रसंग पर रंगभूषा एवं वेशभूषा सहित प्रस्तुतीकरण करता है।
पाठ्यक्रम उद्देश्य : CG – 4 : प्रादेशिक कला और सांस्कृतिक परंपराओं की सौंदर्यात्मक संवेदनशीलता के विस्तार से स्वयं को परिचित कराना।	
क्षमता : C – 4.1 : रंगमंच के विभिन्न स्थानीय एवं प्रादेशिक स्वरूपों की पहचान करता है।	
06AE34	स्थानीय लोककला की जानकारी प्राप्त कर उनमें से किसी एक लोककला पर लेखन करता है।
06AE35	लोककला का समूह में प्रस्तुतीकरण करता है।
क्षमता : C – 4.2 : अपने प्रदेश तथा संपूर्ण भारत के कुछ रंगमंच कलाकारों के जीवन एवं कार्यों का वर्णनात्मक लेखन करता है।	
06AE36	स्थानीय क्षेत्र के लोककलाकारों की जानकारी प्राप्त कर उनका वर्णन एवं लेखन करता है।
विषय : संगीत	
पाठ्यक्रम उद्देश्य : CG – 1 : विभिन्न कला रूपों के माध्यम से स्वयं का अन्वेषण करने तथा स्वतंत्र रूप से अभिव्यक्त होने के लिए विकसित करना।	
क्षमता : C – 1.1 : विभिन्न संगीत रचनाओं के माध्यम से अपने व्यक्तिगत और दैनिक जीवन के अनुभव आत्मविश्वासपूर्वक व्यक्त करता है।	
06AE37	विभिन्न गीत प्रकारों में लय की पहचान करता है।
क्षमता : C – 1.2 : सामूहिक रूप से संगीत पद्धति विकसित करने की प्रक्रिया में लचीलापन प्रदर्शित करता है।	
06AE38	समूहगान में सहभागी होकर प्रस्तुति देता है।
पाठ्यक्रम उद्देश्य : CG – 2 : कला के माध्यम से वैकल्पिक कल्पनाओं की खोज करने के लिए सृजनशीलता एवं कल्पनाशक्ति का उपयोग करना।	
क्षमता : C – 2.1 : गीत एवं संगीत रचनाएँ तैयार कर प्रस्तुत करता है जो उसके आस-पास के रूढ़ वातावरण को चुनौती देती हैं (जैसे – लैंगिक भूमिकाएँ)।	
06AE39	युगल गीतों का चयन कर प्रस्तुतीकरण करता है।
क्षमता : C – 2.2 : गीत, राग, ताल, ध्वनि, लय एवं आकृतिबंध जैसे संगीत तत्वों को व्यक्तिगत अनुभवों, भावनाओं और कल्पनाओं से जोड़ता है।	
06AE40	हार्मोनियम पर बजाए गए स्वरों तथा स्वरों के अंतर की पहचान करता है।
06AE41	तबले के बोल सुनकर ताल की पहचान करता है।
06AE42	विभिन्न गीत प्रकारों में राग, लय, ताल एवं आकृतिबंध जैसे संगीत तत्त्वों का विश्लेषण करता है।
पाठ्यक्रम उद्देश्य : CG – 3 : कला के घटकों, प्रक्रियाओं और तकनीकों को समझना तथा उनका उपयोग करना।	
क्षमता : C – 3.1 : रंगमंचीय शिष्टाचार एवं वाद्यों की देखभाल का ध्यान रखते हुए संगीत के संसाधनों एवं तकनीकों का उपयोग करते समय सूचित चयन करता है।	
06AE43	रंगमंचीय शिष्टाचार की जानकारी बताता है।
06AE44	विभिन्न वाद्यों की देखभाल की विधियों के बारे में जानकारी देता है।

क्षमता : C – 3.2 : योजना के प्रारंभिक चरण से प्रस्तुतीकरण के अंतिम चरण तक विचारों और संगीत अभिव्यक्ति की पद्धतियों को गुणवत्तापूर्ण बनाता है तथा संपूर्ण प्रक्रिया का पुनरावलोकन करता है।	
06AE45	प्रस्तुतीकरण के लिए आवश्यक घटकों की जानकारी स्पष्ट करता है।
06AE46	राग भूप का परिचय देकर छोटा खयाल गाता है।
पाठ्यक्रम उद्देश्य : CG – 4 : प्रादेशिक कला एवं सांस्कृतिक परंपराओं में निहित सौंदर्यबोध के विस्तार से स्वयं को परिचित कराना।	
क्षमता : C – 4.1 : संगीत के विभिन्न स्थानीय एवं प्रादेशिक स्वरूपों से परिचय प्राप्त करता है।	
06AE47	स्थानीय लोकसंगीत की जानकारी का संकलन करता है।
06AE48	स्थानीय लोकसंगीत में प्रयुक्त वाद्यों की जानकारी का संकलन करता है।
क्षमता : C – 4.2 : अपने प्रदेश तथा भारत के कुछ संगीत कलाकारों के जीवन एवं कार्य का वर्णन करता है।	
06AE49	स्थानीय संगीत कलाकारों के जीवन एवं कार्य का परिचय प्राप्त करता है।
06AE50	स्थानीय कलाकारों की गायन एवं वादन शैली की जानकारी का संकलन करता है।
विषय : नृत्य एवं गति	
पाठ्यक्रम उद्देश्य : CG – 1 : विभिन्न कला रूपों के माध्यम से स्वयं का अन्वेषण करने तथा स्वतंत्र रूप से अभिव्यक्त होने के लिए विकसित करना।	
क्षमता : C – 1.1 : विभिन्न प्रकार के नृत्य एवं गतियों के माध्यम से अपने व्यक्तिगत तथा दैनिक जीवन के अनुभव आत्मविश्वासपूर्वक व्यक्त करता है।	
06AE51	विभिन्न शास्त्रीय नृत्य शैलियों की जानकारी देता है तथा उनमें पाई जाने वाली विविधताओं एवं अंतरों को स्पष्ट करता है।
06AE52	विभिन्न नृत्य प्रकारों को समझकर किसी एक विशिष्ट शास्त्रीय नृत्य शैली की गतियों का सहजता से प्रदर्शन करता है।
क्षमता : C – 1.2 : नृत्य एवं गति के अभ्यास तथा सहयोगात्मक विकास की प्रक्रिया में लचीलापन प्रदर्शित करता है।	
06AE53	चयनित शास्त्रीय नृत्य शैली में प्रारंभिक स्तर का प्रस्तुतीकरण करता है।
पाठ्यक्रम उद्देश्य : CG – 2 : कला के माध्यम से वैकल्पिक विचारों की खोज करने हेतु सृजनशीलता एवं कल्पनाशक्ति का उपयोग करना।	
क्षमता : C – 2.1 : नृत्य एवं गतियों की प्रस्तुति करते समय अपने आसपास के वातावरण में विद्यमान रूढ़ धारणाओं को चुनौती देता है (जैसे – लैंगिक भूमिकाएँ)।	
06AE54	शास्त्रीय नृत्य के माध्यम से प्रस्तुत किए जाने वाले विभिन्न पात्रों के अभिनय तथा लयबद्ध गतियों का प्रदर्शन करता है।
क्षमता : C – 2.2 : नृत्य एवं गति (मुद्राएँ, हावभाव, अभिनय आदि) के तत्वों को व्यक्तिगत अनुभवों, भावनाओं एवं कल्पनाओं से जोड़ता है।	
06AE55	शास्त्रीय नृत्य में प्रयुक्त असंयुक्त हस्तमुद्राओं (एक हाथ से की जाने वाली मुद्राओं) के नाम बताकर उनका प्रदर्शन करता है।
06AE56	शास्त्रीय नृत्य की असंयुक्त हस्तमुद्राओं का भावपूर्ण प्रयोग करके प्रदर्शन करता है।
06AE57	नाट्यशास्त्र में वर्णित अभिनय के चार प्रकारों की विस्तृत जानकारी देता है।
पाठ्यक्रम उद्देश्य : CG – 3 : कला के घटकों, प्रक्रियाओं एवं तकनीकों को समझना तथा उनका उपयोग करना।	
क्षमता : C – 3.1 : रंगमंचीय शिष्टाचार एवं मंचीय उपकरणों की देखभाल का ध्यान रखता है तथा नृत्य एवं गति तकनीकों का उपयोग करते समय मंचीय सामग्री एवं वेशभूषा का सूचित चयन करता है।	
06AE58	नृत्य में उपयोग किए जाने वाले रंगमंचीय शिष्टाचार की जानकारी प्राप्त कर उसका व्यवहार में उपयोग करता है।
06AE59	रंगमंच पर नृत्य प्रस्तुति के लिए आवश्यक उपकरणों की जानकारी देता है।
क्षमता : C – 3.2 : योजना के प्रारंभिक चरण से अंतिम प्रस्तुति तक नृत्य एवं गति में प्रयुक्त विचारों तथा अभिव्यक्ति की पद्धतियों का पुनर्गठन करता है और संपूर्ण प्रक्रिया का पुनरावलोकन करता है।	
06AE60	प्रस्तुति प्रक्रिया के विभिन्न चरणों की योजना बनाता है।
06AE61	विभिन्न घटकों के आधार पर की गई योजना का प्रस्तुतीकरण करता है।
पाठ्यक्रम उद्देश्य : CG – 4 : प्रादेशिक कला एवं सांस्कृतिक परंपराओं में निहित सौंदर्यबोध से स्वयं को परिचित कराना।	
क्षमता : C – 4.1 : नृत्य एवं गति के विभिन्न स्थानीय और प्रादेशिक स्वरूपों से परिचय प्राप्त करता है।	
06AE62	स्थानीय क्षेत्र के नृत्य एवं गति विषयक जानकारी एकत्र कर उस पर प्रतिवेदन/वृत्तांत (रिपोर्ट) प्रस्तुत करता है।
क्षमता : C – 4.2 : अपने प्रदेश तथा भारत के कुछ नर्तकों के जीवन एवं कार्य का वर्णन करता है।	
06AE63	स्थानीय क्षेत्र के कुछ नर्तकों तथा उनके कार्यों का वर्णन करता है।

सूचना : विशेष आवश्यकतावाले विद्यार्थियों के लिए अध्ययन-अध्यापन प्रक्रिया संचालित करते समय सांकेतिक भाषा (Sign Language) तथा अन्य पूरक शिक्षण विधियों का उपयोग किया जाना चाहिए। विशेष आवश्यकतावाले विद्यार्थियों को उनकी सुविधा एवं क्षमता के अनुसार अपनी अभिव्यक्ति प्रस्तुत करने का अवसर दिया जाना चाहिए।

विषय सूची

अ. क्र	घटक	पृष्ठ
	दृश्य कला	
१.	रेखाएँ, आकार और सौंदर्य	०१
२.	स्मृति चित्र एवं कल्पना	०७
३.	संकल्पना का अंतरंग	१२
४.	मेरे अक्षर	२३
५.	त्रिविमीय सृजन	२८
६.	परिवेश की दृश्य कलाएँ	३४
	रंगमंच	
७.	आओ, स्वयं को अभिव्यक्त करो...	४१
८.	अभिनय की छटाएँ...	४५
९.	चलो, रंगमंच पर...	५०
१०.	नाट्य की परंपरा...	५७
	संगीत	
११.	लय और ताल की पहचान	६२
१२.	समूह गीत और युगल गीत	६८
१३.	आओ, सीखें शास्त्रीय संगीत	७१
१४.	स्थानीय लोक संगीत का परिचय	८२
	नृत्य एवं गतिविधियाँ	
१५.	अपनी शास्त्रीय नृत्य शैलियाँ	८७
१६.	नृत्य और अभिव्यक्ति	९२
१७.	नृत्य प्रस्तुति के विभिन्न पहलू	९९
१८.	स्थानीय नृत्य शैलियाँ एवं नर्तक	१०३

दृश्य कला

१ रेखाएँ, आकार और सौंदर्य

रेखा चित्रकला का सबसे मूलभूत और प्रभावशाली माध्यम है। किसी भी चित्र की शुरुआत रेखा से ही होती है। हमारे आस-पास के पेड़, पहाड़, नदियाँ, घर या विभिन्न वस्तुओं का ध्यानपूर्वक निरीक्षण करने पर उनमें छिपी हुई विभिन्न प्रकार की रेखाएँ और आकार स्पष्ट रूप से दिखाई देते हैं।

यांत्रिक साधनों का उपयोग किए बिना केवल हाथ से मुक्त रेखांकन करने पर हमारी निरीक्षण क्षमता और रेखांकन कौशल विकसित होने में सहायता मिलती है। सीधी खड़ी, आड़ी, तिरछी, लयदार, वलयाकार, उलझी हुई तथा उत्सर्जक जैसी विभिन्न प्रकार की रेखाओं से अनेक आकार बनते हैं और उनके माध्यम से विभिन्न भावनाएँ भी व्यक्त होती हैं। आओ, हम कुछ रेखाओं के प्रकार देखें।

रेखाओं के प्रकार एवं उनके प्रतीकात्मक अर्थ

लयदार रेखा (Rhythmic Line) :

पानी की लहरों की तरह मुड़ती हुई रेखा को **लयदार रेखा** कहते हैं।

उदाहरण : पानी की लहरें, घाट का रास्ता, हवा में लहराती फसलें, बेलों के आकार आदि।

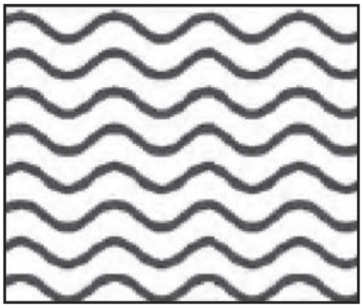

वलयाकार रेखा (Spiral Line) :

एक बिंदु से प्रारंभ होकर गोलाकार घुमाव लेते हुए आगे बढ़ने वाली रेखा को **वलयाकार रेखा** कहते हैं।

उदाहरण : शंख, घोंघे का खोल, चकली आदि।

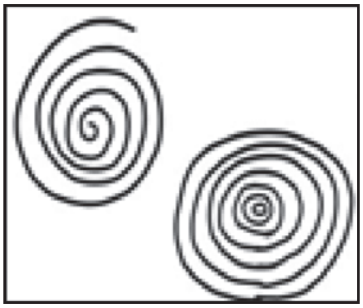

छेदक रेखा (Intersecting Lines) :

जो रेखाएँ एक-दूसरे को काटती हैं उन्हें **छेदक रेखाएँ** कहते हैं।

उदाहरण : फर्श की टाइलें, ग्राफ पेपर, शतरंज की बिसात, खिड़की की जाली, एक-दूसरे को काटने वाली सड़कें आदि स्थानों पर हमें छेदक रेखाएँ दिखाई देती हैं।

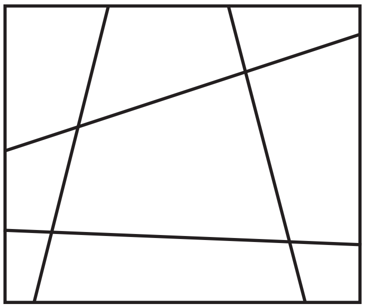

उलझी हुई रेखा (Tangled/Confused Line) :

जो रेखाएँ आपस में मुड़ती हुई, उलझती हुई या जाल जैसी दिखाई देती हैं, उन्हें **उलझी हुई रेखा** कहते हैं।

उदाहरण : उलझी हुई डोरी, पक्षियों का घोंसला आदि।

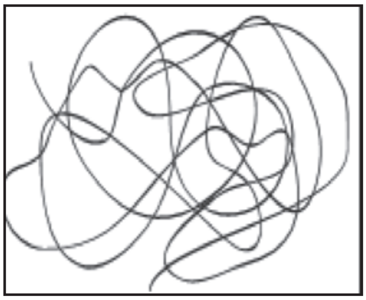

- **उत्सर्जक रेखा (Radiating Line) :**
  एक केंद्र बिंदु से विभिन्न दिशाओं में फैलने वाली रेखाओं को **उत्सर्जक रेखा** कहते हैं।
  उदाहरण : फूलों की पंखुड़ियों का विस्तार, सूर्य की किरणें आदि।

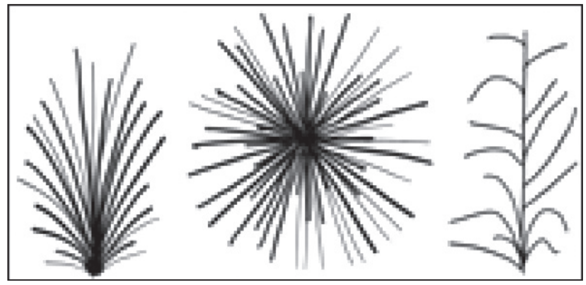

- **आओ, रेखाओं से आकृतियाँ बनाओ!**

नीचे दी गई रेखाओं का उपयोग करके अपनी परिचित वस्तु का रेखाचित्र दिए गए खाली चौकोर में बनाओ।

रेखाओं के प्रकार	बनने वाली आकृतियों के नमूने	मेरी कृति
लयदार रेखा	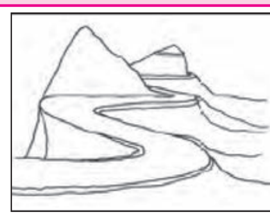	
वलयाकार रेखा	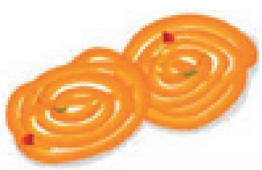	
छेदक रेखा	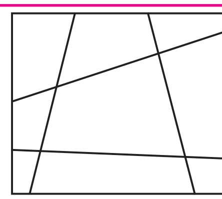	
उलझी हुई रेखा		
उत्सर्जक रेखा		

- स्केल या अन्य यांत्रिक साधनों का उपयोग किए बिना मुक्तहस्त रेखांकन का अभ्यास करने के लिए कहें।
- लयदार, छेदक, वलयाकार तथा उत्सर्जक रेखाओं का अभ्यास करवाएँ। अभ्यास के लिए विभिन्न माध्यमों का उपयोग करवाएँ, जैसे – रंगीन पेन्सिल, स्केच पेन, रंगीन खड़ियाँ आदि।

CG - 1
C-1.1
LO-06AE01

- **आकार से वस्तु (Shape to Object) :**

नीचे दिए गए ज्यामितीय आकारों का उपयोग करके अपनी परिचित वस्तुओं का चित्र बनाओ और उनमें रंग भरो।

	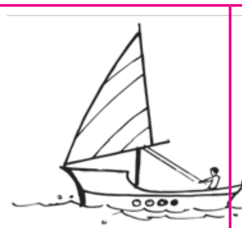	
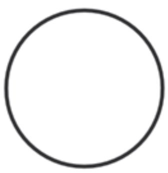		

- **ढूँढ़ो तो :**

आकारों को सरल बनाकर दिखाने वाला चश्मा

हमारे आस-पास की अनेक वस्तुओं में वर्ग, वृत्त, त्रिभुज जैसे ज्यामितीय आकार छिपे हुए होते हैं। इन छिपे हुए आकारों की पहचान करने से वस्तुओं का रेखांकन करना अधिक आसान हो जाता है।

कल्पना करो कि तुमने एक ऐसा जादुई चश्मा पहन रखा है जिससे देखने पर तुम्हें वस्तुओं के केवल ज्यामितीय आकार ही दिखाई देते हैं।

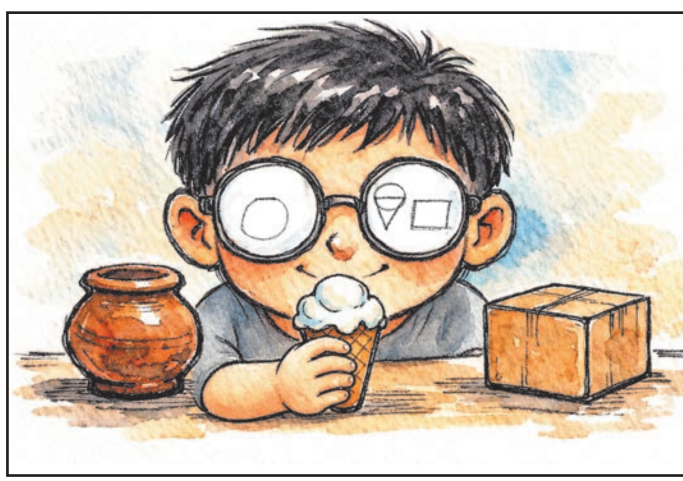

- शुरुआत में विद्यार्थियों को सरल और परिचित वस्तुओं का निरीक्षण करके उनका रेखांकन करने के लिए प्रोत्साहित करें।
- विद्यार्थियों के प्रयासों की सराहना करके उनका आत्मविश्वास बढ़ाएँ।

CG - 1
C-1.1
LO-06AE02

- **चलो, अब यह प्रयोग करके देखो!**

१) तुम जहाँ बैठे हो, वहाँ से आस-पास की विभिन्न वस्तुओं का ध्यानपूर्वक निरीक्षण करो। उदाहरण : खिड़की, बोतल, अलमारी, डिब्बा आदि।

२) उन वस्तुओं में कौन-सा ज्यामितीय आकार छिपा हुआ है, इसे पहचानो।

३) तुमने जो मूल आकार पहचाना है, उसका अपनी कॉपी में रेखांकन करो और उसमें आवश्यक विवरण जोड़कर चित्र बनाने का अभ्यास करो। उदाहरण : अलमारी के लिए खड़ा आयत / गेंद के लिए वृत्त / कंपास पेटी के लिए आड़ा आयत / विदूषक की टोपी के लिए त्रिकोण आदि।

- **आकारों में सौंदर्य :**

अब तक हमने रेखाओं के विभिन्न प्रकारों तथा रेखाओं के अभ्यास से नये-नये आकार बनाने का अनुभव प्राप्त किया है। अब हम अपने आस-पास की दो या अधिक वस्तुओं की व्यवस्था तथा उनके परस्पर संबंधों का निरीक्षण करके उनका चित्र बनाने का अभ्यास करेंगे।

- **वस्तुचित्र (Object Drawing) :**

सामने रखी किसी वस्तु का हूबहू चित्र बनाना **वस्तुचित्र** कहलाता है। वस्तुचित्र बनाने का अनुभव हम पहले भी प्राप्त कर चुके हैं। उदाहरण : कप, पुस्तक, फल आदि।

- **स्थिरचित्र (Still Life) :**

चयनित वस्तुओं को कलात्मक ढंग से सजाकर, उस वस्तु समूह का पृष्ठभूमि सहित किया गया सौंदर्यपूर्ण चित्रण **स्थिरचित्र** कहलाता है। उदाहरण : मेज पर रखी हुई प्लेट, फल, कप, पुस्तक आदि का एक साथ बनाया गया समूह चित्र।

- **वस्तुओं के आकार का निरीक्षण एवं चित्रण :**

  किसी भी वस्तु का चित्र बनाने से पहले उसका ध्यानपूर्वक निरिक्षण करना अत्यंत महत्त्वपूर्ण होता है। हमारे आस-पास उपलब्ध विभिन्न वस्तुओं के आकार, उनका छोटा-बड़ा होना तथा रंग संयोजन आदि का सूक्ष्म अध्ययन करने से रेखांकन करना आसान हो जाता है।

- **शीघ्र रेखांकन :**

  किसी वस्तु, प्रसंग या दृश्य का कम समय में और सीमित रेखाओं के माध्यम से बनाया गया चित्र शीघ्र रेखांकन कहलाता है। इसमें अनावश्यक बारीकियों पर अधिक ध्यान न देकर वस्तु के मूल आकार, अनुपात तथा उसकी गतियों के चित्रण पर मुख्य रूप से बल दिया जाता है। नियमित अभ्यास से निरीक्षण शक्ति बढ़ती है और आत्मविश्वास के साथ चित्र बनाने का कौशल विकसित होता है।

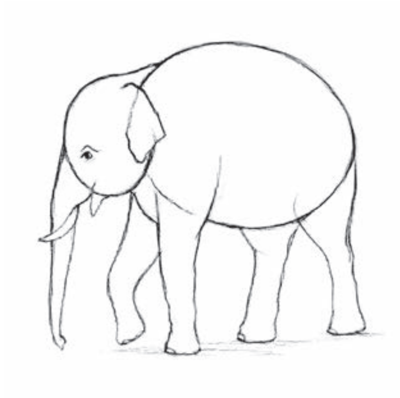

- **वस्तु समूह की रचना :**

  स्थिरचित्र बनाने के लिए विभिन्न आकारों की वस्तुओं के समूह की रचना करो। वस्तुओं के परस्पर अनुपात, रंग तथा प्रकाश-छाया का ध्यानपूर्वक निरीक्षण करो।

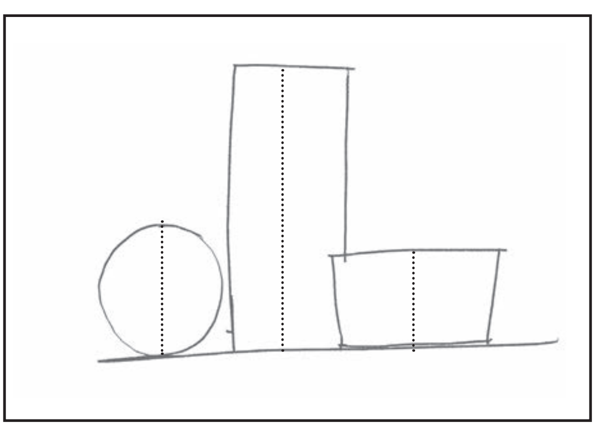

- **प्रारंभिक रेखांकन (Rough Sketch) :**

  सभी वस्तुएँ कागज के मध्य भाग में तथा बड़े आकार में दिखाई दें इस प्रकार ज्यामितीय आकारों के आधार पर शीघ्र रेखांकन करो।

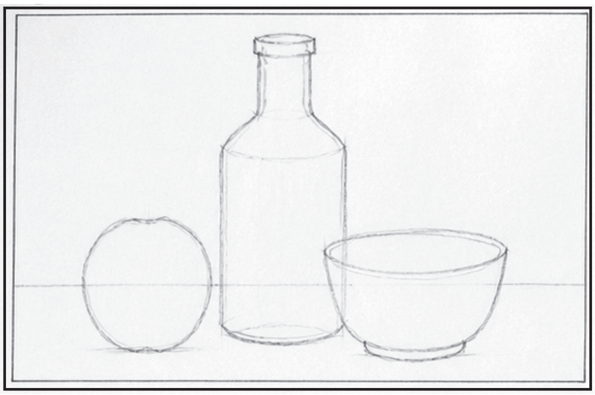

- **आकार निर्धारण एवं विवरण (Refining) :**
रेखांकन पूरा होने के बाद प्रत्येक वस्तु के मूल आकार को अधिक स्पष्ट करो। अनावश्यक रेखाओं को मिटा दो।

- **रंगकार्य एवं प्रकाश-छायांकन (Coloring & Shading) :**
प्रकाश वाली ओर हल्के रंग तथा छाया वाली ओर गहरे रंगों का उपयोग करके सरल तरीके से रंग भरो।

स्वाध्याय

- किसी भी यांत्रिक साधन का उपयोग किए बिना रेखाओं और आकृतियों का रेखांकन करो। यह करते समय तुम्हें जो अनुभव हुआ, उसे संक्षेप में लिखो।
- अपने आस-पास के वातावरण में तुम्हें कौन-कौन-से प्रकार की रेखाएँ दिखाई देती हैं, उन्हें उदाहरण सहित लिखो।
- स्थिरचित्र बनाते समय किन-किन बातों का निरीक्षण करके स्पष्ट करो।
- आपके सामने रखी वस्तुओं के समूह का ध्यानपूर्वक निरीक्षण करो। उदाहरण : बाल्टी, ताँबे का बर्तन, फल आदि वस्तुओं के मूल आकार तथा उनके परस्पर आकार के अनुपात को ध्यान में रखते हुए, बिना किसी यांत्रिक साधन के उनका सरल शीघ्र रेखांकन करने का अभ्यास करो।
- सामने रखी किसी भी तीन वस्तुओं के समूह का अनुपात, प्रकाश-छायांकन तथा उचित रंगों का उपयोग करते हुए सुंदर स्थिरचित्र का रेखांकन करो और उसमें रंग भरो।

- विद्यार्थियों से चित्र को बिल्कुल हूबहू बनाने का आग्रह न करें।
- मौखिक चर्चा तथा शीघ्र रेखांकन के माध्यम से वस्तुचित्र और स्थिरचित्र के बीच का अंतर स्पष्ट करें।
- निरीक्षण के मानदंडों के आधार पर मौखिक प्रश्न पूछें।
- वस्तुओं के आकार एवं आकार में अंतर को ध्यान में रखते हुए उचित रेखांकन कराएँ।

CG - 2
C-2.2
LO-06AE10,11

२ स्मृति चित्र एवं कल्पना चित्र

- **स्मृति चित्र (Memory Drawing) :**

हम अपने दैनिक जीवन में अनेक घटनाएँ, खेल, त्योहार-उत्सव तथा प्रकृति में होने वाले परिवर्तन अनुभव करते हैं। इनमें से कुछ क्षण या घटनाएँ हमारे मन में हमेशा के लिए अंकित हो जाती हैं। इन संचित स्मृतियों को रेखाओं, आकृतियों और रंगों के माध्यम से कागज पर चित्रित करना **स्मृति चित्र** कहलाता है। देखी हुई घटनाओं और प्रसंगों को याद करके, उनकी व्यवस्था तथा परस्पर संबंधों को समझकर चित्र बनाया जाए तो वह अधिक जीवंत और प्रभावशाली बनता है।

- **आओ, करके देखें :**

स्वयं देखा हुआ कोई एक प्रसंग याद करो, जैसे कि विद्यालय में मित्रों के साथ खेला गया खेल, जन्मदिन, कोई त्योहार-उत्सव या भ्रमण का प्रसंग। उस प्रसंग में कौन-कौन-से व्यक्ति थे, आस-पास का वातावरण कैसा था, कौन-कौन-सी वस्तुएँ दिखाई दे रही थीं, इसपर विचार करो। इसके बाद कागज पर उस प्रसंग की रूपरेखा हल्की रेखाओं से बनाओ। मानवी आकृतियों को पर्याप्त बड़ा बनाकर पृष्ठभूमि का रेखांकन करो। सभी घटक एक-दूसरे की तुलना में उचित आकार में होने चाहिए। उदाहरण : हाथी की तुलना में मनुष्य कितना बड़ा दिखाई देगा। चित्र में गतिविधियाँ, भाव तथा उपयुक्त पार्श्वभूमि रेखांकन का प्रयास करो। अंत में उचित रंगों का प्रयोग करके चित्र पूर्ण करो।

- स्मृति चित्र बनाने के लिए निम्नलिखित चरणबद्ध क्रियाएँ की जा सकती हैं :

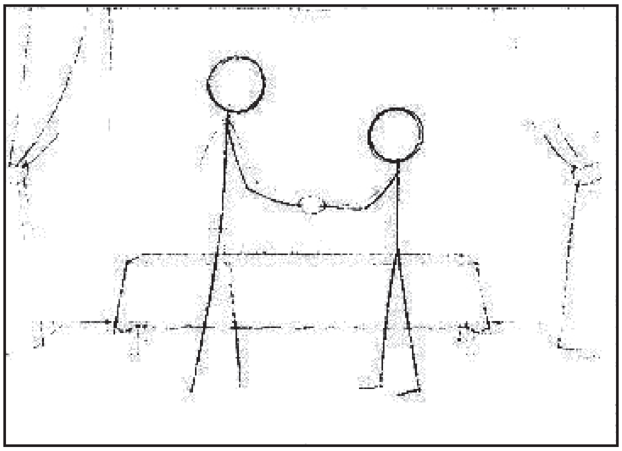

कृति – १

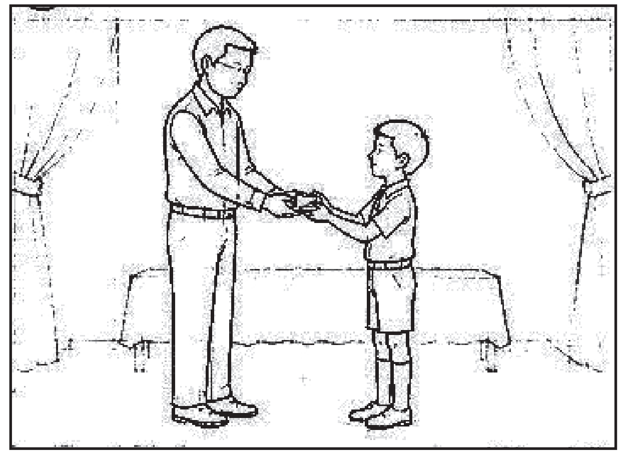

कृति – २

कृति – ३

कृति – ४

- विभिन्न छोटे प्रसंगों, दृश्यों, घटनाओं तथा खेलों को स्मरण कराके उनके चित्र बनवाएँ।
- विद्यार्थियों को प्राकृतिक तथा मानव निर्मित विभिन्न घटकों के स्मृति चित्र बनाने के लिए प्रोत्साहित करें। विद्यार्थियों द्वारा बनाए गए चित्रों पर चर्चा करें।

CG –1, 2
C– 1.1, 2.1
LO–06AE03,06

- **कल्पना चित्र :**

अपने मन की कल्पनाओं को कागज पर चित्र के रूप में प्रस्तुत करना ही **कल्पना चित्र** कहलाता है। कल्पना चित्र के लिए प्रत्यक्ष अनुभव की आवश्यकता नहीं होती; इसमें स्वतंत्र विचार और सृजनशीलता को पूरा अवसर मिलता है। इसमें आकार, रंग और रचना के संबंध में प्रयोग करने के अनेक अवसर प्राप्त होते हैं। उदाहरण : भविष्य का हाई टेक शहर, परीकथा की दुनिया, चंद्रमा पर मेरा घर, मेरा सपना आदि।

- **सदैव याद रखो :**

स्मृति चित्र हमें अपने भूतकाल के अनुभवों को पुनः जीने में सहायता करता है जबकि कल्पना चित्र भविष्य की कल्पनाशीलता को खोजने तथा स्वतंत्र रूप से सोचने के लिए प्रेरित करता है।

- **सामाजिक जनजागृति चित्रण :**

समाज हमारी एक बड़ी पहचान है। समाज में अच्छी आदतों, मानवीय मूल्यों तथा महत्त्वपूर्ण संदेशों को लोगों तक पहुँचाने के लिए कला का उपयोग किया जाता है, इसे ही **सामाजिक जनजागृति चित्रण** कहा जाता है। केवल शब्दों की अपेक्षा चित्रों का प्रभाव अधिक गहरा होता है। जब हम सड़क सुरक्षा, प्रकृति संरक्षण, स्वच्छता, जल संरक्षण या शिक्षा के महत्त्व जैसे विषयों पर अपनी कल्पनाशक्ति से चित्र बनाते हैं तब वह चित्र देखने वाले को सोचने के लिए प्रेरित करता है। ऐसे चित्रण में उचित संदेश प्रस्तुत करने की विधि अधिक महत्त्वपूर्ण होती है।

- **पहचानो तो!**

  पास में दिए गए कल्पनाचित्र में विभिन्न पशुओं और पक्षियों के अंगों को एक साथ जोड़ा गया है। पहचानो कि वे किन-किन पशु-पक्षियों के अंग हैं और इनपर अपने मित्रों के साथ चर्चा करो।

- **फ्लिप बुक ड्रॉइंग (Flip Book Drawing) :**

  फ्लिप बुक छोटे-छोटे चित्रों की एक शृंखला होती है। जब इसके पन्नों को तेजी से पलटा जाता है तो चित्र चलते हुए दिखाई देते हैं। यह एनीमेशन की प्रारंभिक और सरल विधि है। इस गतिविधि के माध्यम से हमें गति, निरीक्षण और सृजनात्मकता का अनुभव प्राप्त होता है।

आओ, करके देखो :

१) समान आकार के कागज के १२ टुकड़े लो।

२) सभी कागजों को क्रम से लगाकर पुस्तक की तरह एक ओर से स्टेपल कर दो।

३) तैयार की गई पुस्तक के पहले पृष्ठ पर बीच में एक बड़ा गिलास का आकार बनाओ।

४) ट्रेसिंग तकनीक का उपयोग करके शेष प्रत्येक पृष्ठ के बीच में भी गिलास का वही आकार बनाओ।

५) पहले पृष्ठ पर गिलास के तले से थोड़ा ऊपर एक क्षैतिज रेखा खींचो। उस रेखा तक नारंगी रंग भरो।

६) इसी प्रकार प्रत्येक अगले पृष्ठ पर एक-एक रेखा ऊपर बढ़ाते जाओ और उस रेखांकन में नारंगी रंग भरते जाओ।

गिलास के ऊपरी भाग तक यह प्रक्रिया दोहराओ।

तुम्हारी 'जूस ग्लास' फ्लिप बुक तैयार हो गई।

(इस संदर्भ में अधिक जानकारी के लिए प्रथम पृष्ठ पर दिए गए क्यू. आर. कोड को स्कैन करो।)

- **क्या तुम जानते हो?**

फ्लिप बुक को एनीमेशन की प्रारंभिक विधि माना जाता है। इसी सिद्‌धांत के आधार पर आगे चलकर पुराने समय की कार्टून फिल्मों में हजारों चित्रों का उपयोग करके चलचित्र और कार्टून फिल्में बनाई जाती थीं।

- **चर्चा करो :**
  - चित्र में पार्श्वभूमि आवश्यक है क्या, चर्चा करो।
  - चित्र में दिखाई देने वाली गति या हलचल के लिए कौन-सा वैज्ञानिक सिद्‌धांत जिम्मेदार है, इसपर चर्चा करो।
  - चित्रों के माध्यम से सामाजिक संदेश को अधिक प्रभावी कैसे बनाया जा सकता है, इसपर चर्चा करो।
  - चित्रों की प्रदर्शनी लगाओ तथा प्रत्येक चित्र की विशेषता और भिन्नता पर चर्चा करो।

स्वाध्याय

१) त्योहार, उत्सव अथवा मेरा प्रिय खेल, इनमें से किसी एक विषय पर स्मृति चित्र बनाओ और उसमें रंग भरो।
२) अपनी कल्पना के आधार पर कोई एक कल्पना चित्र बनाओ तथा उसका वर्णन करो।
३) किसी एक विषय पर सामाजिक जागरूकता से संबंधित चित्र बनाओ तथा उसके नीचे उपयुक्त घोषवाक्य (स्लोगन) लिखो।
४) तुम्हारी रुचि के अनुसार १२ से १६ चित्रों का एक सरल फ्लिप बुक तैयार करो।
५) तुम्हारे आस-पास की प्राकृतिक तथा मानव निर्मित वस्तुओं का रेखांकन करो।

- विद्‌यार्थियों से स्मृति चित्र तथा कल्पना चित्र बनवाएँ।
- ट्रेसिंग तकनीक का उपयोग करके एक ही आकार को बार-बार कैसे बनाया जाता है, इसका प्रदर्शन करें।
- सामाजिक जनजागरूकता के लिए प्रेरणादायक चित्र बनाने हेतु विद्‌यार्थियों को प्रोत्साहित करें।

CG - 2
C-2.1
LO-06AE07, 08

३ संकल्पना का अंतरंग

दैनिक जीवन में हम अनेक वस्तुओं का उपयोग करते हैं। इन वस्तुओं का चयन करते समय हम उनके आकार, रंग तथा उनपर बने डिजाइनों का विचार करते हैं। रेखाओं, आकारों और रंगों की उचित व्यवस्था करके किसी वस्तु को अधिक सुंदर और आकर्षक बनाने हेतु किया गया सौंदर्यपूर्ण चित्रण '**संकल्पना चित्र**' कहलाता है।

हम अपने आस-पास वस्तुएँ, पेड़, फूल, पशु, मनुष्य आदि अनेक घटकों को देखते हैं। इन घटकों का ध्यानपूर्वक निरीक्षण करने पर कुछ घटक दोनों ओर से एक जैसे अर्थात **सममित** दिखाई देते हैं, जबकि कुछ घटक एक ओर से अलग और दूसरी ओर से अलग अर्थात **असममित** दिखाई देते हैं। आइए चित्रों के घटकों की सममित और असममित रचना को समझें।

- **सममित रचना :**

यदि किसी चित्र के मध्य में एक सीधी खड़ी रेखा खींचने पर चित्र के दो समान भाग बन जाते हैं तो उसे सममित रचना कहते हैं। संक्षेप में, दोनों ओर समानता होने वाली रचना सममित रचना कहलाती है। उदाहरण : प्रवेश द्वार, तितली, चेहरा आदि।

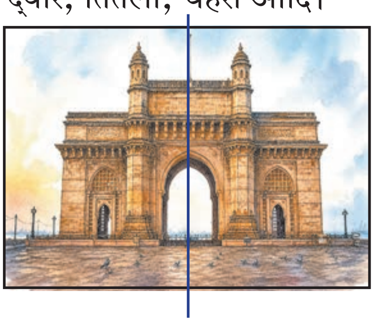
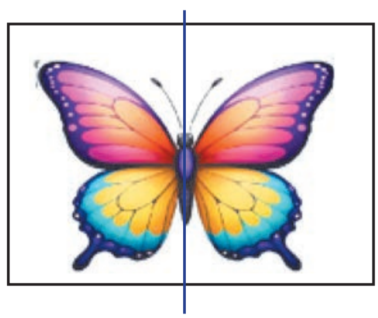
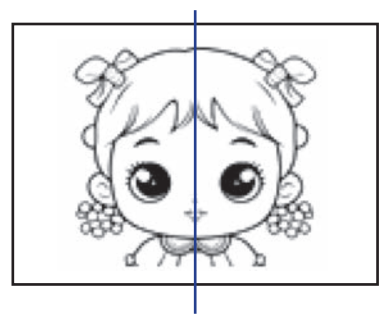

- **असममित रचना :**

जिन चित्रों को दो समान भागों में विभाजित नहीं किया जा सकता, ऐसी रचनाओं को '**असममित रचना**' कहते हैं। उदाहरण : पक्षी, बादलों के आकार, पेड़ों की शाखाएँ आदि।

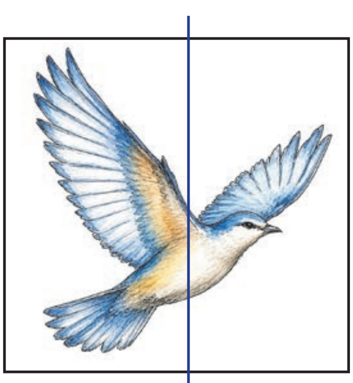
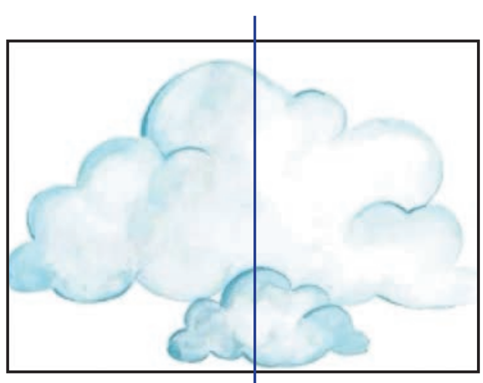
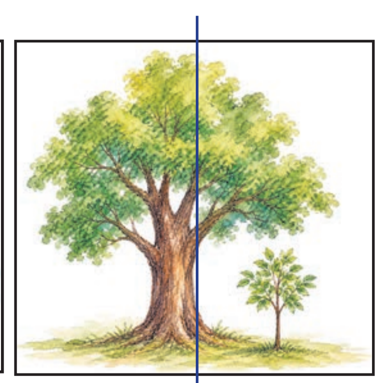

पहचानो तो!

नीचे दिए गए चित्रों में यदि चित्र के मध्य में एक सीधी खड़ी रेखा खींची जाए तो पहचानिए कि चित्र सममित है या असममित चित्र के नीचे लिखो।

A 7 अ

....

- **करके देखो :**

  १) तुम्हारे आस-पास दिखाई देने वाले सममित/समअंगी और असममित/विषमअंगी घटकों के नाम लिखो।

  २) अपनी कॉपी में दो वर्ग बनाओ। ज्यामितीय आकृतियों का उपयोग करके एक वर्ग में सममित रचना तथा दूसरे वर्ग में असममित रचना का संकल्प चित्र बनाकर रँगो।

- **रंग और रंग श्रेणी :**

प्रकृति में रंगों की सुंदर छटा दिखाई देती है। आकाश का नीला रंग, पेड़ों की हरियाली, फूलों की रंग-बिरंगी सुंदरता और इंद्रधनुष के सात रंग मन को आकर्षित करते हैं। ये रंग हमारे मन में आनंद, उत्साह और प्रसन्नता उत्पन्न करते हैं। जब किसी चित्र में रंग भरे जाते हैं तो वह चित्र अधिक जीवंत, प्रभावशाली और आकर्षक दिखाई देता है तथा उसकी एक अलग पहचान बनती है। इसलिए हमारे दैनिक जीवन और चित्रकला में रंगों का अत्यंत महत्त्वपूर्ण स्थान है। यहाँ हम रंगों की पहचान और **रंग श्रेणियों** का अध्ययन करेंगे।

कुछ रंग अपने **मूल** रूप में होते हैं, जबकि कुछ विभिन्न रंगों के मिश्रण से बनते हैं। इनके बारे में जानकारी प्राप्त करेंगे।

प्रथम श्रेणी के रंग (Primary Colours) :

जो रंग किसी अन्य रंग के मिश्रण से नहीं बनाए जा सकते, उन्हें '**मूल रंग**' या '**प्रथम श्रेणी के रंग**' कहते हैं।

उदाहरण : लाल, पीला, नीला

लाल **पीला** **नीला**

- आस-पास की वस्तुओं का सममित और असममित रूप में वर्गीकरण कर दोनों के बीच का अंतर समझाएँ।
- विद्यार्थियों की गतिविधियों को सकारात्मक प्रतिक्रिया दें।
- केवल चित्र की सुंदरता पर ही ध्यान न देकर रचना में संतुलन और असंतुलन के तत्त्वों को भी महत्त्व दिया जाए।

CG -2
C-2.2
LO-06AE09

द्‌वितीय श्रेणी के रंग (Secondary Colours) :

प्रथम श्रेणी के किसी भी दो रंगों को समान मात्रा में मिलाने पर जो रंग बनता है, उसे **द्‌वितीय श्रेणी का रंग** या **मिश्रित रंग** कहते हैं। इनमें नारंगी, हरा और बैंगनी द्‌वितीय श्रेणी के रंग हैं।

लाल + पीला = नारंगी

पीला + नीला = हरा

नीला + लाल = बैंगनी

- **क्या तुम जानते हो ?**
  - प्रकृति में उपलब्ध विभिन्न तत्त्वों से प्राकृतिक रंग तैयार किए जा सकते हैं। ये रंग सुरक्षित तथा पर्यावरणपूरक होते हैं। आस-पास उपलब्ध विभिन्न प्राकृतिक पदार्थों जैसे पत्तियाँ, फूल, हल्दी, चुकंदर, मिट्‌टी, गेरू आदि से प्राकृतिक रंग बनाए जा सकते हैं।

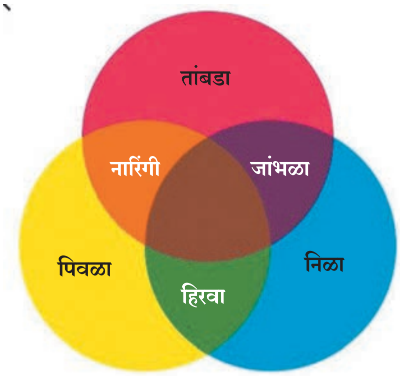

- **करके देखो :**
  - कागज पर समान आकार के दो वर्ग बनाओ। उनमें अपनी पसंद के ज्यामितीय आकारों और रेखाओं की सहायता से विशेष रचना तैयार करो। पहले वर्ग में एक ही रंग की हल्की और गहरी रंग छटाओं का उपयोग करके रंग भरो। दूसरे वर्ग में प्रथम तथा द्‌वितीय श्रेणी के रंगों की छटाओं का उपयोग करके रंग भरो। दोनों प्रकार के चित्रों में रंग भरते समय प्राप्त हुए अनुभवों पर चर्चा करो।

- **रंग छटाएँ (Shades of Colours) :**

प्रकृति में हमें अनेक प्रकार के रंग दिखाई देते हैं। एक ही रंग की विभिन्न रंग छटाएँ भी देखने को मिलती हैं। उदाहरण के लिए, पेड़ों की पत्तियों में हरे रंग की अनेक छटाएँ दिखाई देती हैं, जैसे- हल्का हरा, गहरा हरा, पीला-हरा, नारंगी-हरा आदि। किसी रंग का कम या अधिक उजला अथवा गहरा दिखाई देने वाला रूप **रंग छटा** कहलाता है।

- विद्‌यार्थियों को प्रथम श्रेणी तथा द्‌वितीय श्रेणी के रंगों की जानकारी दें।
- द्‌वितीय श्रेणी के रंग बनाने का प्रत्यक्ष अनुभव कराएँ।
- विभिन्न रंग छटाओं का निरीक्षण करने के लिए प्रोत्साहित करें।

CG - 3
C-3.1
LO-06AE12

किसी भी रंग में सफेद या काला रंग कम या अधिक मात्रा में मिलाने से उस रंग की विभिन्न रंग छटाएँ बनाई जा सकती हैं।

(साथ दिए गए चित्र में पत्तियों की रंग छटाओं का निरीक्षण करो।)

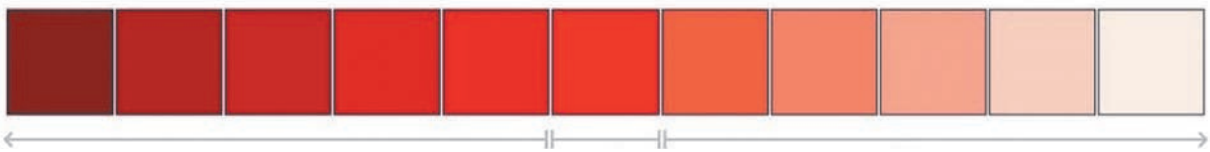

- **करके देखो :**

१) कागज पर नीचे दिए गए अनुसार वर्ग (चौकोन) बनाओ। बीच वाले वर्ग में अपनी पसंद का कोई एक रंग भरो।

२) उस रंग में थोड़ा सफेद रंग मिलाओ। इससे रंग की एक नई छटा बनेगी। उसमें फिर थोड़ा और सफेद रंग मिलाकर और हल्की (उजली) छटा तैयार करो। इसी प्रकार तीन से चार हल्की छटाएँ तैयार करो। सभी हल्की छटाओं को मूल रंग के दाईं ओर बने वर्गों में क्रम से भरो।

३) इसके बाद चुने हुए रंग में थोड़ा-सा काला रंग मिलाओ। बनी हुई गहरी छटा को कागज पर लगाओ। आवश्यकता अनुसार काले रंग की मात्रा बढ़ाकर तीन से चार गहरी छटाएँ तैयार करो। सभी गहरी छटाओं को मूल रंग के बाईं ओर बने वर्गों में क्रम से भरो।

- **क्या तुम जानते हो ?**

रंग केवल आकर्षक ही नहीं होते बल्कि उनका अपना एक विशेष अर्थ भी होता है। रंगों को देखकर हमारे मन में अनेक भावनाएँ उत्पन्न होती हैं।

उदाहरणार्थ. -

लाल रंग : शौर्य

पीला रंग : तेज

बैंगनी रंग : वैभव

सफेद रंग : पवित्रता

नीला रंग : शांति

हरा रंग : समृद्धि

नारंगी रंग : त्याग

काला रंग : भय

- आस-पास के विभिन्न घटकों में पाए जाने वाले रंगों और रंग छटाओं के बारे में मार्गदर्शन करें।
- विभिन्न रंग छटाएँ दिखाकर उनकी तुलना करने के लिए प्रेरित किया जाए तथा निरीक्षण और अनुभव पर विशेष बल दें।
- 'मेरी गैलरी' उपक्रम के अंतर्गत कक्षा में 'रंग छटा दीवार' उपक्रम को प्रोत्साहित करें।

CG - 3
C-3.1
LO-06AE12

- **संकल्पना के मूलतत्त्व –**

किसी भी चित्र को अधिक सुंदर और आकर्षक बनाने के लिए कुछ महत्त्वपूर्ण बातों का ध्यान रखना आवश्यक होता है। चित्र में किसी आकार या रंग का बार-बार उपयोग करना, आकारों में छोटा-बड़ा परिवर्तन करना, रंगों और आकारों को उचित अनुपात में व्यवस्थित करना तथा तत्त्वों के बीच संतुलन बनाए रखना जैसी बातों से चित्र प्रभावशाली और मनमोहक दिखाई देता है। संकल्पचित्र को आकर्षक बनाने के लिए उसमें कुछ मूलभूत तत्त्वों का उपयोग किया जाता है। जैसे – पुनरावृत्ति, परिवर्तन, उत्सर्जन, अनुपात, संतुलन तथा लय संकल्परचना के महत्त्वपूर्ण मूलतत्त्व हैं।

- **पुनरावृत्ति (Repetition) :**

चित्र में एक ही प्रकार के आकार का बार-बार उपयोग करना **पुनरावृत्ति** कहलाता है। जब चित्र में एक समान आकार या तत्त्व को बार-बार प्रयोग किया जाता है, तब चित्र अधिक सुंदर, व्यवस्थित और आकर्षक दिखाई देता है। उदाहरण – फर्श की टाइलें, पेड़ की पत्तियाँ, कपड़ों पर बनी एक जैसी नक्काशी।

- **परिवर्तन (Change) :**

तुम्हारे आस-पास के पेड़ों की पत्तियों का निरीक्षण करो। कुछ पत्तियाँ बड़ी होती हैं तो कुछ छोटी होती हैं। कुछ हल्के रंग की होती हैं तो कुछ गहरे रंग की होती हैं। अर्थात उनके आकार और रंग में थोड़ा-थोड़ा बदलाव दिखाई देता है। इसी को **परिवर्तन** कहते हैं। इस परिवर्तन के कारण चित्र अधिक सुंदर और आकर्षक दिखाई देता है।

- **उत्सर्जन (Radiation) :**

सूर्य के मध्य भाग से प्रकाश की किरणें सभी दिशाओं में फैलती हैं। फूलों की पंखुड़ियाँ केंद्र से बाहर की ओर फैलती हैं। साइकिल के पहिये के केंद्र से तीलियाँ (स्पोक्स) बाहर निकलती हैं। इसी प्रकार घास की पत्तियाँ भी जड़ से ऊपर की ओर फैली हुई दिखाई देती हैं। चित्र में विभिन्न तत्त्व जब किसी एक केंद्र से बाहर की ओर फैलते हैं, तब उस रचना को **उत्सर्जन** कहा जाता है। उदाहरण – नारियल के पत्ते, मोर का पंख, मकड़ी का जाला आदि।

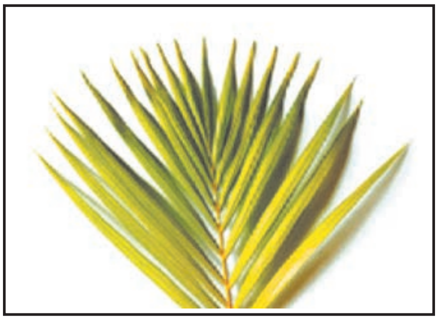

- **पैमाना/अनुपात (Proportion) :**

चित्र के विभिन्न घटकों / तत्त्वों का आपस में जो संबंध होता है, उसे **अनुपात** कहते हैं। एक आकार दूसरे आकार की तुलना में कितना बड़ा या छोटा होना चाहिए, इसका सही अनुमान '**अनुपातबद्धता**' कहलाता है।

उदाहरण – एक बड़े पेड़ और एक छोटे पेड़ का अनुपात।

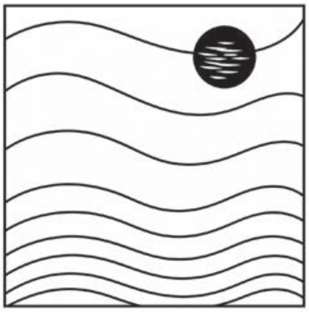

- **संतुलन (Balance) :**

संतुलन का अर्थ है अनेक आकारों, उनके आकारमान (क्षेत्रफल), रंगों तथा रंग छटाओं का आपस में उचित संबंध। प्रकृति का सूक्ष्म निरीक्षण करने पर पता चलता है कि कुछ तत्त्वों में सम संतुलन होता है तो कुछ में असम संतुलन होता है लेकिन प्रत्येक प्राकृतिक रचना में एक छिपा हुआ 'संतुलन' अवश्य होता है। प्रकृति की तरह यदि चित्र में भी संतुलन हो तो वह अधिक आकर्षक, संतुलित और प्रभावशाली दिखाई देता है।

उदाहरण – मानवी चेहरा और तितली सम-संतुलन के उदाहरण हैं, जबकि पेड़ का तना और शाखाएँ विषम संतुलन के उदाहरण हैं।

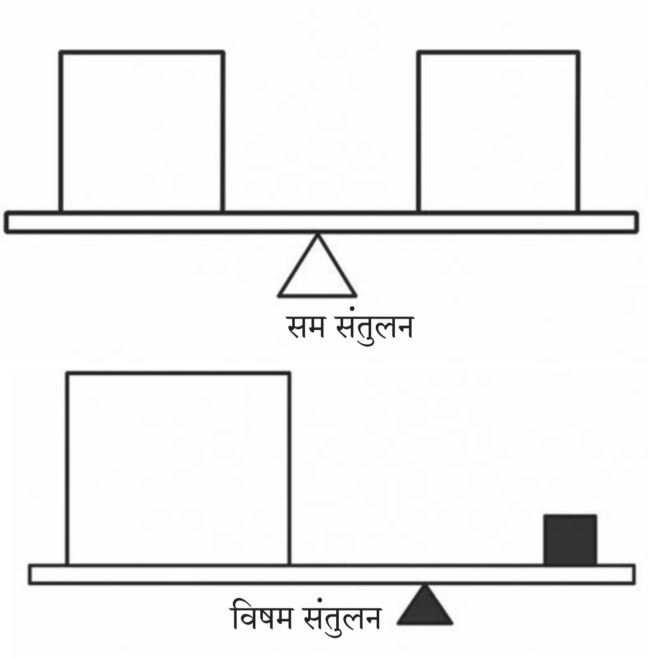

- **लय (Rhythm) :**

चित्र में आकारों, रेखाओं अथवा रंगों की किसी विशेष क्रम में तथा पुनरावृत्ति के साथ की गई रचना को **लय** कहते हैं। उदाहरण के लिए कपड़े पर बनी डिजाइन, दीवार पर ईंटों की सजावट, रंगोली की बार-बार दोहराई जाने वाली आकृतियाँ, गेहूँ की बालियाँ तथा पानी पर बनने वाली लहरों में 'लय' दिखाई देती है।

मूल तत्त्वों से युक्त करने वाले संकल्प चित्र

- **करके देखो :**

१) फलों अथवा सब्जियों के समान आकार के टुकड़ों को एक थाली में रखकर सुंदर रचना बनाओ तथा उसका छायाचित्र (फोटो) खींचो।

२) बड़े पत्थर पर छोटा पत्थर, इस प्रकार क्रम से पत्थरों की रचना करो। इस गतिविधि में कौन-सा मूलतत्त्व दिखाई देता है, उसे लिखो।

३) एक मोटी रस्सी को जमीन पर सीधा रखो। एक जैसी दिखाई देने वाली पेड़ की पत्तियों को चित्र में दिखाए अनुसार रस्सी के नीचे समान दूरी पर रखो। संभव हो तो प्रत्येक पत्ती के बीच में एक फूल रखो। इससे बहुत सुंदर बंदनवार (तोरण) बनाया जा सकता है। (यह कृति समूह में की जा सकती है।)

- पुनरावृत्ति, परिवर्तन, उत्सर्जन, अनुपात, संतुलन तथा लय जैसे संकल्पना के मूलतत्त्वों को समझाएँ।
- संकल्पना के मूलतत्त्वों को ध्यान में रखते हुए संकल्पचित्र (रचनात्मक चित्र) बनाने के लिए कहें।

CG – 3
C–3.2
LO–
06AE16

- **चित्र में सौंदर्य निर्माण की तकनीकें**

कोई भी चित्रकृति केवल रेखाओं, आकारों और रंगों से पूर्ण नहीं होती, बल्कि चित्र को अधिक सुंदर और आकर्षक बनाने के लिए बनावट (Texture) का बहुत महत्त्व होता है। मुद्रण तकनीक, कोलाज, स्टिपलिंग, तरंग मुद्रण जैसी तकनीकों का उपयोग करके कलाकृति में विभिन्न प्रकार की बनावट (structure) और उभार उत्पन्न किए जा सकते हैं।

- **मुद्रण तकनीक (Print Making) :**

किसी सतह पर ठप्पा लगाकर चित्र या डिजाइन बनाने की प्रक्रिया को मुद्रण तकनीक कहते हैं। यह तकनीक सरल, सृजनात्मक और आनंददायी होती है। विभिन्न वस्तुओं की ठप्पा बनाने के लिए जलरंग, पोस्टर रंग, स्याही आदि सामग्री का उपयोग किया जा सकता है। उदाहरण – पेड़ों की पत्तियाँ, फल तथा फल-सब्जियों की ठप्पे।

- **चित्र संयोजन (कोलाज/Collage) :**

विभिन्न रंगों के कागज, समाचारपत्र, पेड़ों की सूखी पत्तियाँ अथवा अन्य उपलब्ध सामग्री के टुकड़ों को काटकर या फाड़कर किसी सतह पर कल्पनाशील ढंग से चिपकाकर चित्ररचना तैयार की जाती है, उसे **कोलाज** कहते हैं। बेकार वस्तुओं से उपयोगी तथा पर्यावरण अनुकूल कलाकृतियाँ बनाने के लिए कोलाज तकनीक का उपयोग किया जा सकता है। कोलाज निर्माण के लिए रंगीन कागज, पुराने समाचार पत्र, रंगीन पत्रिकाओं के पृष्ठ, पुराने विवाह निमंत्रण पत्र, रंगीन कपड़े के टुकड़े, ऊन, सूखी पत्तियाँ, कैंची, गोंद आदि सामग्री का उपयोग किया जा सकता है।

- **स्टिपलिंग तकनीक (Stippling Technique) :**

चित्र बनाते समय केवल बिंदुओं (ठिपकों) की सहायता से आकार, प्रकाश-छाया तथा बनावट (Texture) उत्पन्न करने की विधि को **स्टिपलिंग** तकनीक कहते हैं। इस तकनीक में रेखाओं का उपयोग किए बिना बिंदुओं की सघनता (घनत्व) कम या अधिक करके गहरा या हल्का प्रभाव बनाया जाता है। जहाँ बिंदु अधिक सघन होते हैं, वहाँ गहरी छाया दिखाई देती है। जहाँ बिंदु विरल होते हैं, वहाँ छाया हल्की दिखाई देती है। इस प्रकार बिंदुओं की विशेष रचना से चित्र में गहराई और त्रि-आयामी (3D) प्रभाव उत्पन्न किया जा सकता है। इस तकनीक के लिए मुख्यतः बारीक नोक वाले पेन, जेल पेन, स्केच पेन, स्याही वाले पेन, पेन्सिल आदि साधनों का उपयोग किया जाता है।

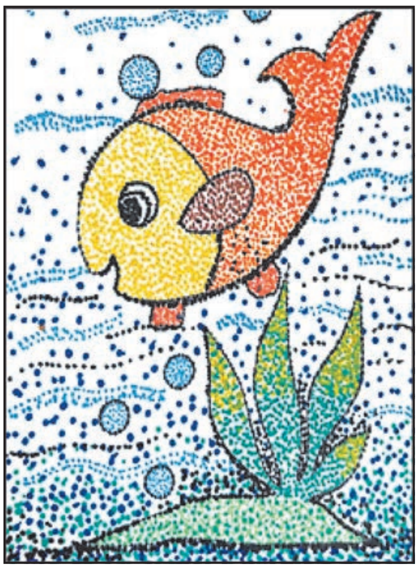

- **करके देखो :**

समाचार पत्र अथवा पत्रिका में छपे हुए रंगीन चित्र उत्तल लैंस (भिंग) के माध्यम से देखो। क्या दिखाई दे रहा है, इसका निरीक्षण करो। समाचार के रंगीन पृष्ठों के नीचे चार रंगों के छोटे बिंदु चौकोन क्यो होते हैं; इसपर विचार करो और चर्चा करो।

- **तरंग मुद्रांकन (नवीनता से युक्त तकनीक)**

क्या तुमने कभी वर्षा के बाद जमा हुए पानी में तेल की एक बूँद गिरते हुए देखी है? उसमें इंद्रधनुष की तरह विभिन्न रंग दिखाई देते हैं। इसी प्रकार का एक रोचक खेल खेलते है।

  - एक चौड़ी ट्रे में आधी ऊँचाई तक पानी भरो।
  - उस पानी में तैलरंग (ऑयल पेंट) की कुछ बूँदें डालो।
  - एक तीली की सहायता से पानी को धीरे-धीरे गोलाकार घुमाओ।
  - एक सफेद कागज को बहुत सावधानी से पानी की सतह को स्पर्श करने दो।
  - कागज का एक कोना पकड़कर उसे तुरंत धीरे-धीरे ऊपर उठाओ।
  - पानी पर तैर रहे सभी रंग कागज पर चिपक जाएँगे और एक सुंदर, नवीनता से युक्त आकृति (नक्काशी) बन जाएगी।
  - कागज को छाया में सूखने दो। इस प्रकार कागज पर 'तरंग मुद्रांकन' लेकर उस कागज का उपयोग विभिन्न प्रकार की सजावट के लिए करो।

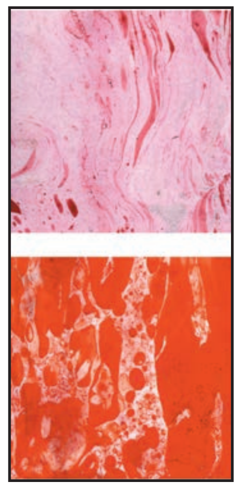

- **सदैव ध्यान में रखो :**

  प्रिंटिंग मशीन का उपयोग करके अनेक प्रिंट निकाली जाती हैं जो एक जैसी होती हैं। इसके विपरीत, **तरंग मुद्रा** की पद्‌धति अलग होती है। इसमें प्रत्येक प्रिंट एक-दूसरे से भिन्न होते हैं।

- **करके देखो :**

  १) तुम्हें पसंद आने वाले किसी फल का पत्तियों सहित बाहरी आकार का रेखांकन करो।

  २) फल के आकार को स्टिपलिंग तकनीक का उपयोग करते हुए बिंदुओं (डॉट्स) से भरो।

  ३) पत्तियों के लिए मुद्रण तकनीक का उपयोग करके ठप्पा (प्रिंट) लो और उन्हें कोलाज पद्‌धति से चिपकाओ।

- चित्र में सौंदर्य निर्माण के लिए विभिन्न तकनीकों का कल्पनाशील ढंग से उपयोग कैसे किया जाए, इस विषय में मार्गदर्शन करें।
- उपलब्ध सामग्रियों का उपयोग करके चित्र बनवाएँ।
- विद्‌यार्थियों को आस-पास के वातावरण से विभिन्न प्रकार की बनावट (टेक्सचर) या पोत खोजने के लिए कहें।
- ठप्पा लेते समय रंग की मात्रा उचित कैसे रखनी चाहिए, यह प्रत्यक्ष कृति द्‌वारा दिखाएँ।
- स्टिपलिंग तकनीक में बिंदु बनाते समय जल्दबाजी न करके धैर्यपूर्वक बिंदु बनाने के लिए विद्‌यार्थियों को प्रेरित करें।

CG - 3
C-3.1
LO-06AE13

स्वाध्याय

१) अपने आस-पास के वातावरण का ध्यानपूर्वक निरीक्षण करो और जिन तत्त्वों में पुनरावृत्ति दिखाई देती है, ऐसे किन्हीं भी पाँच तत्त्वों के नाम लिखो।

२) प्रकृति में ऐसे तत्त्वों को खोजो जिनके आकार और रंग में विभिन्न रंग छटाएँ दिखाई देती हों तथा उनके नामों की सूची तैयार करो।

३) मुद्रण तकनीक, कोलाज तकनीक और स्टिपलिंग तकनीक इन तीनों का एकत्रित उपयोग करके चित्र बनाओ। कौन-कौन-सी सामग्री एवं साधन उपलब्ध हो सकते हैं, उनकी सूची तैयार करो।

४) तरंग प्रिंट किए गए कागज से एक शुभकामना/भेंट कार्ड (ग्रीटिंग कार्ड) बनाओ।

५) कागज के गिलास (पेपर कप) पर तरंग प्रिंट लेकर उसकी सजावट करो।

६) भौमितिक आकृतियों का उपयोग करके एक कल्पना चित्र (संकल्प चित्र) बनाओ तथा उसे विभिन्न रंग छटाओं का उपयोग करके रंग भरो।

४ मेरे अक्षर

सुंदर, कलात्मक और आकर्षक ढंग से किए गए अक्षरों के विन्यास /रचना को **अक्षरलेखन** (Calligraphy) कहते हैं। विभिन्न साधनों का उपयोग करके अक्षर कैसे लिखे जाते हैं, यह हम सीखेंगे। केवल कागज पर ही नहीं, बल्कि संगणक पर भी अक्षरों के विभिन्न **फॉन्टों** का उपयोग कैसे किया जाता है, इसका अभ्यास करेंगे।

संगणक पर एक क्लिक से हम अक्षरों का आकार, मोटाई और रंग बदल सकते हैं, जिससे विज्ञापन, समाचार-पत्र और पुस्तकें अधिक आकर्षक दिखाई देती हैं। अपने आस-पास के अक्षरों की सुंदरता को समझें और अपनी कल्पनाशक्ति के साथ पेन्सिल, ब्रश तथा विभिन्न तकनीकों का उपयोग करके प्रभावशाली अक्षरलेखन करेंगे।

- **आओ, जानकारी लो :**
  अक्षरलेखन के लिए विभिन्न साधनों का उपयोग किया जाता है, जिन्हें माध्यम कहा जाता है। अक्षरलेखन को आकर्षक बनाने के लिए उचित साधनों का चयन महत्त्वपूर्ण होता है।

- **माध्यम :**

अक्षरलेखन के लिए पेन्सिल, रंगीन खड़ियाँ, मोटा स्केच पेन, सरकंडे की कलम और टाक, संगणक (फॉन्ट) आदि साधनों का उपयोग किया जाता है।

सरकंडे की कलम और टाक (Bamboo Pen)	कट-निब पेन (Cutnib Pen)	मोटा स्केच पेन (Bold sketch Pen)
रंगीन खड़ियाँ (Colored Chalk)	चपटा ब्रश (Flat Brush)	स्केच पेन (Sketch Pen)
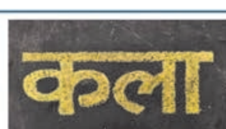		

- **क्या तुम जानते हो ?**

हमारी लिपि विरासत

देवनागरी लिपि : आज हम मराठी, हिंदी, संस्कृत, कोंकणी आदि भाषाएँ लिखने के लिए जिस लिपि का उपयोग करते हैं, उसे '**देवनागरी लिपि**' कहा जाता है। इस लिपि में प्रत्येक अक्षर के ऊपर एक क्षैतिज रेखा खींची जाती है, जिसे '**शिरोरेखा**' कहते हैं। देवनागरी लिपि को वैज्ञानिक दृष्टि से अत्यंत परिपूर्ण माना जाता है क्योंकि इस लिपि में जैसा बोला जाता है, वैसा ही लिखा जाता है।

श्रवणबेलगोला में देवनागरी (मराठी) लिपि का शिलालेख।

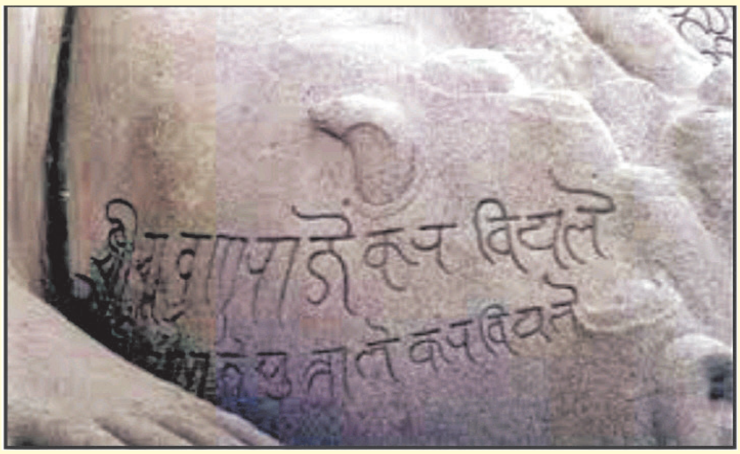

- **करके देखो :**

झाड़ू की डंडी, बाँस की डंडी आदि अपने आस-पास उपलब्ध साधनों को कटर की सहायता से चपटा करके सरकंडे की कलम (कलम) बनाओ। सरकंडे की कलम की सहायता से स्याही या रंग का उपयोग करके अपनी कॉपी में जय हिंद, जय महाराष्ट्र, भारत माता जैसे शब्द लिखो।

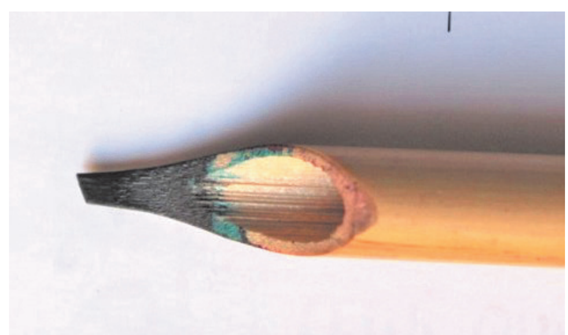

- **आओ, चर्चा करें :**

१) उपरोक्त विधि से लेखन करते समय आपको कैसा अनुभव हुआ ?

२) अक्षरों की मोटाई और पतलापन क्यों बनता है, इस विषय पर अपने मित्रों के साथ चर्चा करो।

३) सरकंडे की कलम से लिखते समय और आधुनिक पेन से लिखते समय आपको क्या अंतर अनुभव हुआ ?

४) प्राचीन काल में अक्षर लेखन के लिए किन प्राकृतिक साधनों का उपयोग किया जाता था ?

- **सदैव याद रखो :**
  - **शिलालेख** – पत्थर पर उकेरे गए लेखन को 'शिलालेख' कहते हैं।
  - **ताम्रपट** – ताँबे की पट्टिका पर उकेरे गए लेखन को 'ताम्रपत्र' कहते हैं।
  - **भूर्जपत्र** –प्राचीन काल में कागज उपलब्ध न होने के कारण 'भोजपत्र' (वृक्ष की छाल) पर लेखन किया जाता था।

- **क्या तुम जानते हो ?**

- पंखों से बनी लेखनी के कारण ही अक्षरों को विशेष मोड़ तथा मोटा-पतला बनाने की कला विकसित हुई, जिससे आगे चलकर आधुनिक सुलेखन (कैलिग्राफी) का जन्म हुआ।
- नाम के अनुसार अर्थपूर्ण अक्षर लिखे जा सकते हैं।
- अक्षरों के माध्यम से चित्र निर्माण भी किया जा सकता है।

- **करके देखो : श्यामपट्ट (ब्लैकबोर्ड लेखन)**

१) विद्यालय के मुख्य भाग में लगे फलक (ब्लैकबोर्ड) पर रंगीन चॉक से श्यामपट्ट लेखन करो।

२) श्यामपट्ट पर छोटे-बड़े तथा घुमावदार अक्षर बनाओ।

३) सामूहिक रूप से सजावटी आकृतियाँ बनाकर फलक को आकर्षक ढंग से सजाओ।

४) श्यामपट्ट लेखन करते हुए तुमने क्या नया सीखा, इसे संक्षेप में लिखो।

डिजिटल अक्षररचना (Digital Typography) :

वर्तमान समय में हम केवल हाथ से ही नहीं लिखते बल्कि संगणक, मोबाइल और टैब की सहायता से भी लिखते हैं। संगणक पर अक्षरों को टाइप करना और उन्हें आकर्षक रूप देना ही **'डिजिटल अक्षररचना'** कहलाता है। संगणक पर अक्षर जिस विशेष शैली में दिखाई देते हैं, उन्हें **फॉन्ट (Font)** कहा जाता है। विज्ञापन पट्ट (Hoardings) पर दिखाई देने वाली आकर्षक अक्षररचना उस विज्ञापन के विषय के अनुसार तैयार की जाती है। किसी फिल्म के पोस्टर पर लिखे गए अक्षर बहुत आकर्षक और अलग शैली के होते हैं। अक्षरों की कलात्मक रचना के कारण जानकारी / पाठ अधिक प्रभावशाली लगता है।

- विद्यार्थियों को अक्षरों के आकार, अक्षरों के बीच उचित दूरी तथा उनकी सही रचना बनाए रखने के बारे में मार्गदर्शन करें।

CG – 3
C–3.1
LO–06AE14

- **डिजिटल नाम बनाकर देखेंगे :**

संगणक पर किसी भी ऐप में अपना नाम देवनागरी या रोमन लिपि में टाइप करो। विभिन्न फॉन्टों का उपयोग करके अक्षरों में बदलाव करके देखो। अपने नाम को अलग-अलग शैलियों में लिखकर उसकी विविधता का अनुभव करो।

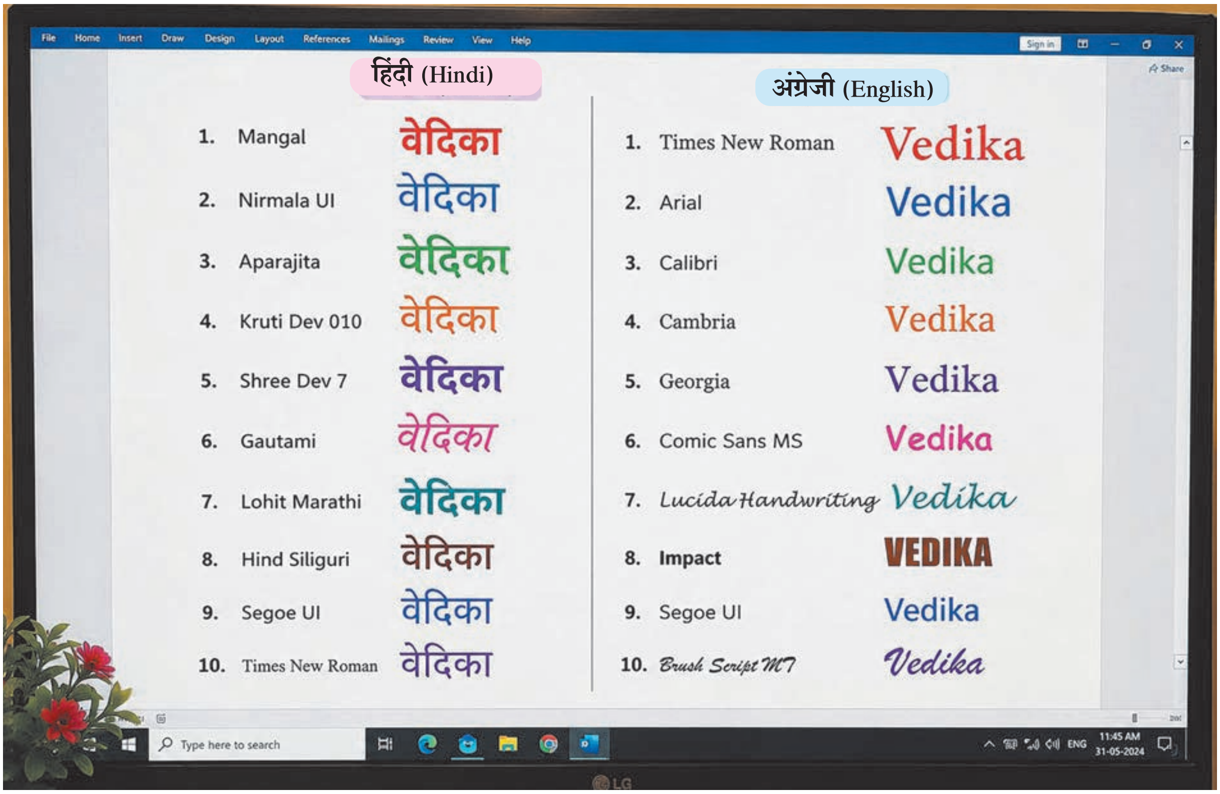

- अधिक जानकारी प्राप्त करने के लिए प्रथम पृष्ठ पर दिए गए क्यू आर कोड (क्यू आर कोड) को स्कैन करो।

- **सदैव ध्यान में रखो :**
  - स्मार्टबोर्ड पर भी विभिन्न रंगों और आकारों में सुंदर अक्षर लिखे जा सकते हैं।
  - संगणक की तरह मोबाइल में भी अनेक प्रकार के उपकरण (Tools) उपलब्ध होते हैं। इनकी सहायता से अक्षरलेखन का अभ्यास किया जा सकता है।

- **क्या तुम जानते हो?**

सुलेखकार: पद्‌मश्री अच्युत रामचंद्र पालव

अच्युत रामचंद्र पालव एक प्रसिद्‌ध सुलेखकार हैं। उनका जन्म २७ जनवरी १९६० को महाराष्ट्र के मुंबई में हुआ था। उन्होंने देवनागरी लिपि के अक्षरों को नई ऊँचाइयों तक पहुँचाया है। उन्होंने सर जे. जे. स्कूल ऑफ आर्ट, मुंबई से अपनी शिक्षा पूर्ण की। उन्होंने अक्षरों के केवल बाहरी आकार तक सीमित न रहकर उनमें निहित

सौंदर्य की खोज शुरू की। उन्होंने अक्षरों को केवल लिखने का माध्यम न मानकर उन्हें एक जीवंत कलाकृति के रूप में दुनिया के सामने प्रस्तुत किया। उनकी लेखनी से निर्मित अक्षर कभी किसी चित्र की तरह दिखाई देते हैं तो कभी उनमें से कोई मधुर कविता बहती हुई प्रतीत होती है। अक्षरों की इस यात्रा में उन्होंने पारंपरिक और आधुनिक दोनों प्रकार के साधनों का उपयोग किया। उन्होंने कागज के साथ-साथ कपड़े, दीवारों और कैनवास जैसे विभिन्न माध्यमों पर भी अक्षरों के प्रयोग किए। इस कला को नई पीढ़ी तक पहुँचाने का महत्त्वपूर्ण कार्य भी उन्होंने किया है। उनके इस योगदान को देखते हुए भारत सरकार ने वर्ष २०२५ में उन्हें पद्‌मश्री सम्मान से सम्मानित किया गया है।

स्वाध्याय

१) उपलब्ध लेखन साधनों की सहायता से अपना नाम विशेष और आकर्षक ढंग से लिखो।
२) संगणक के किसी एक फॉन्ट का आधार लेकर अक्षरों को आधुनिक रूप दो।
३) हाथ से किए गए अक्षरलेखन और संगणक पर किए गए अक्षरलेखन में एक अंतर बताओ।
४) समाचारपत्रों, विज्ञापनपत्रों अथवा पत्रिकाओं में प्रकाशित विज्ञापनों के अक्षरों का निरीक्षण करके उनमें दिखाई देने वाले विभिन्न प्रकार के अक्षर, शब्द और फॉन्ट काटकर अपनी कॉपी में चिपकाओ।

- रेखा अभ्यास, (ग्राफ) कागज, श्यामपट्ट लेखन तथा डिजिटल उपकरणों का उपयोग करके नियमित अभ्यास करने के लिए प्रवृत्त करें।
- विद्‌यार्थियों के प्रयासों और उनकी कल्पनाशीलता की सराहना करते हुए उन्हें प्रोत्साहित करें।

CG - 3
C-3.1
LO-06AE15

५ त्रिविमीय सृजन

कला केवल कागज पर चित्र बनाना ही नहीं है, बल्कि अपने हाथों से सुंदर वस्तुएँ बनाना भी है। अब हम मिट्टी से विभिन्न आकार बनाना सीखेंगे साथ ही बेकार कागज और कागज की लुगदी (Paper Pulp) से सुंदर वस्तुएँ भी बनाएँगे।

हम मिट्टी के माध्यम से विभिन्न ज्यामितीय ठोस आकृतियों की रचना करना सीखेंगे। कागज के गोले और कागज की लुगदी (Paper Pulp) का उपयोग करके आकर्षक त्रिविमीय कलाकृतियाँ तैयार करेंगे।

कला की यह यात्रा केवल व्यक्तिगत नहीं है, बल्कि समूह कार्य के माध्यम से चित्र संयोजन '**कोलाज**' बनाते समय हमें सहयोग की भावना का भी अनुभव होगा। प्रकृति में उपलब्ध पर्यावरण अनुकूल वस्तुओं का कल्पनाशील उपयोग करके अपने आस-पास के परिसर को कैसे सजाया जा सकता है, इसका प्रत्यक्ष अभ्यास भी करेंगे।

मिट्टी के विभिन्न प्रकार एवं विशेषताएँ :

मिट्टी के कार्य के लिए प्रकृति में विभिन्न प्रकार की मिट्टी उपलब्ध होती है लेकिन कार्य के स्वरूप और मिट्टी के गुणों को ध्यान में रखकर ही मिट्टी का चयन करना आवश्यक होता है।

१) परिसर की मिट्टी : यह मिट्टी नालों, नदी के किनारों, खेतों तथा बगीचों में उपलब्ध होती है। इससे भी विभिन्न प्रकार की वस्तुएँ बनाई जा सकती हैं लेकिन इनमें दरारें पड़ सकती हैं। यदि इस मिट्टी में गोबर, भूसा आदि मिलाकर उससे शिल्प बनाए जाएँ तो उनमें दरारें कम पड़ती हैं।

२) चिकनी मिट्टी (टेराकोटा) : यह मिट्टी मुख्य रूप से लाल रंग की तथा अत्यंत लचीली होती है। बड़े आकार के घन, शंकु अथवा मिट्टी की मूर्तियाँ बनाने के लिए इसका प्रमुख रूप से उपयोग किया जाता है।

३) शाडू मिट्टी : यह मिट्टी चिकनी और चिपचिपी होती है। इसका उपयोग बार-बार किया जा सकता है। यह पर्यावरण के अनुकूल होती है। इसका रंग धूसर (ग्रे) होता है।

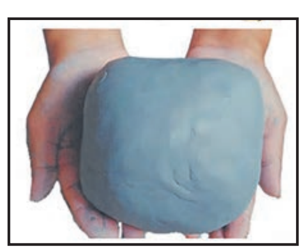

४) **प्लास्टिसिन क्ले :** इस कृत्रिम मिट्टी का उपयोग बार-बार किया जा सकता है। यह विभिन्न रंगों में उपलब्ध होती है।

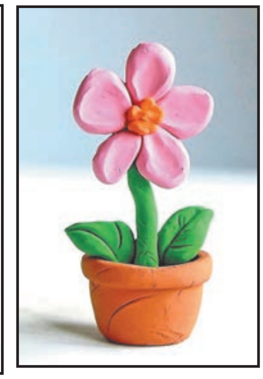

द्विविमीय (Two Dimensional – 2D)

जिन आकृतियों में केवल लंबाई और चौड़ाई होती है, उन्हें '**द्विविमीय आकार**' कहा जाता है। ये आकृतियाँ पूरी तरह समतल होती हैं। उदाहरण : कागज पर बनाया गया चित्र, वर्ग, आयत, वृत्त, त्रिभुज आदि।

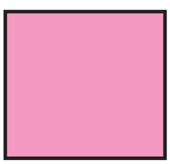

वर्ग

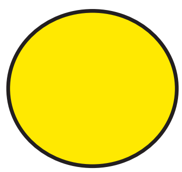

वृत्त

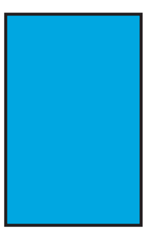

आयत

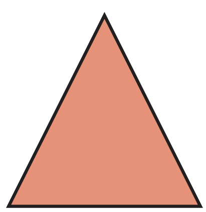

त्रिभुज

त्रिविमीय (Three Dimensional – 3D) आकार

जिन आकृतियों में लंबाई और चौड़ाई के साथ-साथ मोटाई, ऊँचाई या गहराई भी होती है, उन्हें **त्रिविमीय आकार** अथवा **घनाकार** कहा जाता है। उदाहरण : घन (Cube), गोला (Sphere), बेलन (Cylinder), शंकु (Cone)।

घन

गोला

बेलन

शंकु

पर्यावरण :

अपने आस-पास उपलब्ध अनुपयोगी अथवा पर्यावरण सामग्री से कोई त्रिविमीय वस्तु तैयार करो। उदाहरण : – नारियल के खोल से कटोरी बनाना, कागज के खोके से बचत पेटी (पिगी बैंक) बनाना। बनाई गई वस्तुओं को फलियों के छिलकों, कागज के गोले आदि सामग्री की सहायता से कोलाज बनाकर सजाओ। (यह गतिविधि कृति रूप से या गुट में की जा सकती है।)

- द्विविमीय और त्रिविमीय आकारों के बीच का अंतर समझाएँ।
- विभिन्न प्रकार की मिट्टियों का परिचय कराइए।
- उपलब्ध मिट्टी से विभिन्न घनाकार (त्रिविमीय) आकृतियाँ समझाएँ।

CG – 3
C–3.2
LO–06AE17

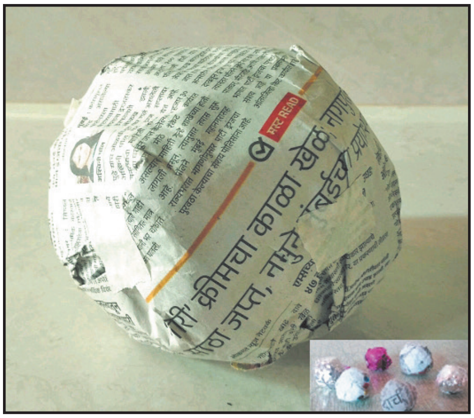

- **सदैव ध्यान में रखो :**

आस-पास के वातावरण में विभिन्न प्रकार की प्राकृतिक, मानव निर्मित तथा पर्यावरण अनुकूल वस्तुएँ उपलब्ध होती हैं। (जैसे – पत्थर, शंख, सीपियाँ, कागज के डिब्बे आदि।) ऐसी वस्तुओं का कल्पनाशील और सौंदर्यपूर्ण दृष्टि से उपयोग करके आकर्षक 'कोलाज कार्य' किया जा सकता है।

पेपर क्विलिंग (Paper Quilling) :

कागज की पतली-पतली पट्टियों को मोड़कर और लपेटकर विभिन्न प्रकार की नक्काशी तथा डिजाइन बनाने की कला को पेपर क्विलिंग कहते हैं। इसके माध्यम से सुंदर सजावटी वस्तुएँ और कलात्मक रचनाएँ तैयार की जा सकती हैं।

कागज की लुगदी (Paper Pulp) तैयार करना :

विभिन्न नाटकों, नृत्यों तथा कार्यक्रमों में अलग-अलग प्रकार के मुखौटों (Masks) का उपयोग किया जाता है। ये मुखौटे रद्दी कागज अथवा कागज की लुगदी से आसानी से बनाए जा सकते हैं। मुखौटे बनाने के लिए उपयोगी कागज की लुगदी निम्न प्रकार से तैयार की जा सकती है।

विधि :

१) रद्दी कागज के छोटे-छोटे टुकड़े करके उन्हें एक बाल्टी में कम-से-कम एक दिन तक पानी में भिगोकर रखो।

२) दूसरे दिन भीगे हुए कागज के टुकड़ों को हाथ से अच्छी तरह मसलकर मिला लो।

३) तैयार लुगदी (Pulp) को एक सूती कपड़े में रखो और उसे कसकर निचोड़कर अतिरिक्त पानी निकाल दो।

४) अब इस लुगदी में थोड़ा गोंद और मेथी पाउडर मिलाओ। इससे लुगदी में चिपचिपापन आता है तथा सूखने के बाद कलाकृति कठोर और मजबूत बनती है। इसमें थोड़ा-सा खड़िया चूर्ण (चॉक पाउडर) मिलाने से लुगदी अधिक चिकनी और सुडौल बनती है। उपरोक्त विधि से तैयार की गई कागज की लुगदी का उपयोग विभिन्न प्रकार की वस्तुएँ, खिलौने तथा मुखौटे बनाने के लिए किया जा सकता है।

- **सदैव ध्यान में रखो :**
  - लुगदी तैयार करते समय उसमें थोड़ा-सा मेथी पाउडर मिलाने से उसमें कीड़े / फफूँद नहीं लगती।
  - यदि लुगदी का तुरंत उपयोग नहीं करना हो तो उसे एक थैली में अच्छी तरह लपेटकर ठंडी जगह पर रखना चाहिए।
  - लुगदी से बनी वस्तु पूरी तरह सूख जाने के बाद ही उसपर रंगकाम करो।

- विद्‍यार्थियों को स्वयंनिर्मिति के अवसर दें।
- निर्दोष होने की अपेक्षा रचनात्मकता को प्रोत्साहन दें।
- अनुपात एवं आकार की ओर विद्‍यार्थियों को ध्यान देने के लिए सजग करें।

CG - 3
C-3.2
06AE18

कागज की लुगदी (Paper Pulp) से मुखौटा बनाना :

१) सबसे पहले बड़े आकार का एक गुब्बारा लो। रद्‌दी कागज की पट्‌टियों को पानी में भिगोकर गुब्बारे के बाहरी आधे भाग पर पहली परत अच्छी तरह चिपका दो।

२) कागज की पट्‌टियों की परत के ऊपर कागज की लुगदी लगाकर मुखौटे का आकार तैयार करो।

३) इस प्रकार तैयार किए गए मुखौटे को तेज धूप में पूरी तरह सूखने दो तथा बाद में गुब्बारा निकाल दो।

४) आँखों का आकार बनाकर रंगो और उन्हें काट लो।

५) मुखौटे में रंग भरकर उसपर नाक, भौंहें और होंठ बनाकर उसे आकर्षक रूप से सजाओ।

६) आस-पास उपलब्ध पर्यावरण अनुकूल सामग्री का कौशलपूर्वक उपयोग करके मुखौटे को सजाओ। (जैसे- दाढ़ी के लिए नारियल के रेशे, सजावट के लिए बीज, शंख-सीपियाँ आदि।) इस प्रकार तैयार किए गए मुखौटों का उपयोग नाटक और नृत्य जैसी प्रस्तुति कलाओं में किया जा सकता है।

१.

२.

३.

४.

- **सदैव ध्यान में रखो :**
  - कलाओं में मुखौटों का उपयोग केवल चेहरा ढँकने के लिए नहीं होता, बल्कि वे नाटक और नृत्य में किसी विशेष पात्र (चरित्र) को दर्शकों तक प्रभावी ढंग से पहुँचाने का एक सशक्त माध्यम होते हैं।

कागज की लुगदी से मुखौटे तैयार करने की अधिक जानकारी प्राप्त करने के लिए प्रथम पृष्ठ पर दिए गए क्यू आर कोड को स्कैन करो।

- लुगदी बनाने की प्रक्रिया समझाकर बताएँ तथा लुगदी से मुखौटा कैसे बनाया जाता है, इसका मार्गदर्शन करें।
- प्रत्येक विद्‌यार्थी के प्रयासों की सराहना करके उनका आत्मविश्वास बढ़ाएँ।

CG - 3
C-3.2
06AE18

स्वाध्याय

१) तुम्हारे आस-पास उपलब्ध मिट्टी से अपनी पसंद की कोई त्रिविमीय (3D) आकृति तैयार करो।

२) तुम्हारे द्‌वारा बनाई गई मिट्टी की प्रतिकृति को कक्षा में प्रदर्शित करो तथा प्राप्त अनुभवों के आधार पर चर्चा करो।

३) मिट्टी का काम करने के लिए आपको कौन-सी मिट्टी अधिक उपयुक्त लगी? क्यों?

४) प्राकृतिक मिट्टी और कृत्रिम मिट्टी के उपयोग से पर्यावरण पर क्या प्रभाव पड़ सकता है? अपने विचार लिखो।

५) मुखौटे का उपयोग प्रस्तुति की किन-किन कलाओं में किया जा सकता है, लिखो।

६) तुम्हारे आस-पास उपलब्ध अनुपयोगी अथवा पर्यावरण-अनुकूल वस्तुओं का उपयोग करके एक त्रिविमीय कलाकृति (3D Model) तैयार करो। इस कलाकृति को सजाने के लिए 'कागज की लुगदी / कागज के गोले' अथवा 'कोलाज तकनीक' का उपयोग करो।

क्षेत्र भ्रमण :

स्थानीय क्षेत्र में मिट्टी के काम (मृदा शिल्प) से जुड़े व्यवसाय स्थल का भ्रमण करके जानकारी इकट्ठा करो। उसे अपनी कॉपी में लिखो। अधिक जानकारी प्राप्त करने के लिए प्रथम पृष्ठ पर दिए गए क्यू आर कोड को स्कैन करो।

६ परिवेश की दृश्य कलाएँ

मानव जीवन को समृद्‌ध और सुंदर बनाने के लिए विभिन्न कलाओं, संस्कृतियों और परंपराओं का उद्‌गम हुआ है। हमारे आस-पास की सामाजिक और सांस्कृतिक विरासत चित्रकला, शिल्पकला तथा हस्तकला जैसी विभिन्न दृश्य कलाओं के रूप में दिखाई देती है। ये कलाएँ केवल मनोरंजन का साधन नहीं हैं बल्कि इनके माध्यम से उस समय की जीवनशैली और मानवीय मूल्यों का यथार्थ दर्शन भी होता है।

ये पारंपरिक कलाएँ आज भी अनेक कलाकारों और कारीगरों के माध्यम से जीवित हैं। उपलब्ध साधनों और सामग्रियों का रचनात्मक उपयोग करके निर्मित यह लोक कला हमारी संस्कृति का अभिन्न अंग है। आधुनिकता के इस दौर में इस समृद्‌ध विरासत का संरक्षण करना और कलाकारों को प्रोत्साहित करना समय की आवश्यकता है। आओ, अपने आस-पास की इन सांस्कृतिक धरोहरों की खोज करें और उसे सहेजने का प्रयास करें।

दृश्य कला

कला व्यवसाय

- **रंगोली :**

  रंगोली हमारी सांस्कृतिक परंपरा की एक सुंदर दृश्य कला है। रंगोली से घर और आस-पास के वातावरण में प्रसन्नता निर्माण होती है। रंगोली बनाने की परंपरा आज भी निरंतर जारी है। देश भर में विभिन्न प्रकारों और साधनों से रंगोली बनाई जाती है। उदाहरण : बिंदुओं वाली रंगोली, मुक्तहस्त रंगोली, फूलों की रंगोली, पानी पर बनाई जाने वाली रंगोली, संस्कार भारती रंगोली आदि।

- विद्‌यार्थियों को प्रकल्प का उद्‌देश्य स्पष्ट रूप से समझाएँ तथा उदाहरणों के माध्यम से उसे स्पष्ट करें।
- संभव हो तो स्थानीय शिल्पकृतियों के चित्र अथवा लघु चलचित्र (वीडियो) दिखाएँ।

CG - 4
C-4.1
LO-06AE19

१) बिंदुओं वाली रंगोली :

निश्चित दूरी पर बिंदु बनाकर उन्हें जोड़कर ज्यामितीय आकृतियाँ तैयार की जाती हैं। यह रंगोली बहुत सुंदर और आकर्षक दिखाई देती है।

२) मुक्तहस्त रंगोली :

इसमें बिंदुओं का उपयोग किए बिना सीधे हाथ से आकृति बनाई जाती है।

३) संस्कार भारती रंगोली :

यह रंगोली हाथ की पाँचों उँगलियों का उपयोग करके बनाई जाती है। इसमें बड़े आकार और घनी सजावट वाली आकृतियाँ होती हैं। यह रंगोली मुख्य रूप से त्योहारों और समारोहों में बनाई जाती है।

४) फूलों की रंगोली :

विभिन्न प्रकार के फूलों की पंखुड़ियों, फूलों और पत्तियों का उपयोग करके यह रंगोली बनाई जाती है।

५) पानी पर बनाई जाने वाली रंगोली :

थाली में पानी लेकर उसपर कोयले का चूर्ण या तेल डालकर रंगोली को तैरता हुआ रखा जाता है।

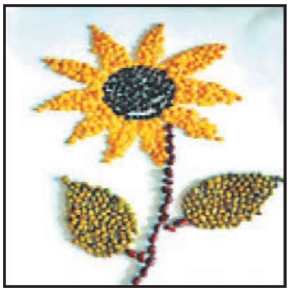

६) अनाज/बीजों की रंगोली :

विभिन्न रंगों की दालें, अनाज और बीजों का उपयोग करके यह रंगोली सजाई जाती है।

७) त्रिविमीय (3D) रंगोली :

विभिन्न रंगीन कागजों का उपयोग करके यह रंगोली ऐसी बनाई जाती है कि वह उभरी हुई या जीवंत प्रतीत हो।

- **क्या तुम जानते हो ?**

भिन्न-भिन्न प्रदेशों में रंगोली के विविध संबोधन हैं।

महाराष्ट्र - रांगोळी	राजस्थान - मांडणा	मध्यप्रदेश - चौकपूरना
बिहार - अरिपन	तमिळनाडु - कोलम	उत्तरप्रदेश - सोन रखना
हिमाचल - लिखनू	बुंदेलखंड - कोहबर	ओरिसा - झोटी या चिता
गुजरात - सातिया	कर्नाटक - चितरा रंगोली	आंध्रप्रदेश - मुग्गु

- **सदैव ध्यान रखो :**

पहले रंगोली बनाने के लिए चावल के आटे का उपयोग किया जाता था ताकि चींटियों और पक्षियों को वह भोजन के रूप में मिल सके। यह प्रकृति के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करने का एक तरीका था।

- **लकड़ी की शिल्पकला :**

सातपुड़ा पर्वतशृंखला के कोरकू आदिवासियों की कला आज भी समृद्ध है। उनके द्‌वारा लकड़ी से बनाए गए मुखौटे प्राकृतिक रंगों से रँगे हुए होते हैं और उनका सांस्कृतिक तथा धार्मिक महत्त्व होता है। ये मुखौटे मुख्य रूप से सागौन या स्थानीय लकड़ी पर नक्काशी करके बनाए जाते हैं। इन्हें प्राकृतिक रंगों का उपयोग करके रँगा जाता है। मुखौटे मानव या पशुओं के चेहरों के रूप में बनाए जाते हैं। उनकी यह हस्तकला पीढ़ी-दर-पीढ़ी चली आ रही है। विभिन्न प्रकार के उत्सवों में इनका उपयोग पारंपरिक वेशभूषा के एक भाग के रूप में किया जाता है। वर्तमान में ऐसे मुखौटों का उपयोग घर की सजावट (Home Decor) के लिए भी बड़े पैमाने पर किया जा रहा है, जिससे आदिवासी कलाकारों को रोजगार के अवसर प्राप्त हो रहे हैं।

सिंधुदुर्ग जिले के सावंतवाड़ी में लकड़ी के खिलौने और अन्य वस्तुएँ बनाने का व्यवसाय प्राचीन काल से चला आ रहा है। आज पारंपरिक विधि से बनाए गए लकड़ी के खिलौनों के लिए सावंतवाड़ी विश्वप्रसिद्‌ध है। हल्की लकड़ी का उपयोग और आकर्षक रंग इन खिलौनों की विशेषता हैं।

- **सदैव ध्यान में रखो :**

अपने आस-पास हमें मिट्‌टी का काम करने वाले, बाँस से वस्तुएँ बनाने वाले, घास से वस्तुएँ बनाने वाले तथा अन्य पारंपरिक व्यवसायों के माध्यम से कलाकृतियाँ तैयार करने वाले अनेक कलाकार दिखाई देते हैं। वे भी अपनी पारंपरिक कला और कौशल का संरक्षण कर रहे होते हैं। उनसे संवाद करके तथा उनके कुछ कौशल सीखने का प्रयास करके हम भी इन परंपराओं के संरक्षण और संवर्धन में सहभागी बन सकते हैं।

- **दृश्य कला कृतियों का अनुकरण :**

अपने आस-पास हम अनेक कलाकारों या कला से जुड़े व्यवसाय करने वाले कारीगरों को देखते हैं। जैसे – बाँस से वस्तुएँ बनाने वाले कारीगर, लकड़ी की वस्तुएँ बनाने वाले कारीगर आदि। इनमें से कुछ व्यवसाय बहुत प्राचीन समय से चले आ रहे हैं। ऐसे कार्यों का निरीक्षण करने पर हमें उनमें निहित कौशलों को समझने का अवसर मिलता है। यदि हम अपनी कल्पनाशक्ति का उपयोग करके उन कौशलों का अनुकरण करें तो हमें भी कला-निर्मिति का आनंद प्राप्त होता है। इससे हमारी निरीक्षण शक्ति विकसित होती है तथा साथ ही हस्तकौशल (Motor Skills) भी विकसित होते हैं।

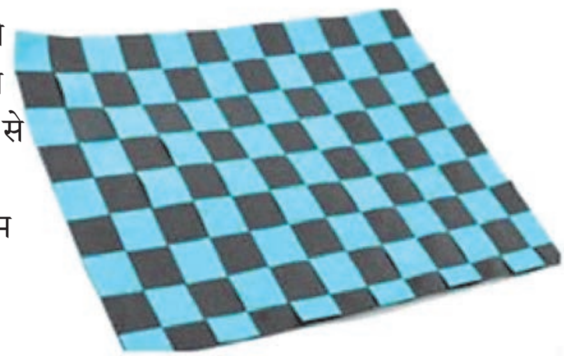

कागज की चटाई

- **कला और कलाकार**

चित्रकला, शिल्पकला, हस्तकला आदि विभिन्न कला रूपों में अनेक कलाकार कार्य करते हैं। उनके कौशल के कारण कला परंपराएँ समृद्‌ध होती दिखाई देती हैं।

आइए कुछ कलाकारों का परिचय प्राप्त करते हैं।

वारली चित्रकार : जिव्या सोमा म्हसे

जिव्या सोमा म्हसे महाराष्ट्र के वारली आदिवासी समाज के प्रसिद्‌ध चित्रकार थे। उनका जन्म सन १९३४ में महाराष्ट्र के पालघर में हुआ था। उन्होंने पारंपरिक वारली चित्रकला को कागज और कैनवास पर साकार करके इस लोक कला को राष्ट्रीय तथा अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रसिद्‌धि दिलाई। उनके चित्रों में दैनिक जीवन, खेती, त्योहार, उत्सव, नृत्य और प्रकृति का सुंदर चित्रण सरल रेखाओं तथा त्रिकोण, वृत्त और चतुर्भुज जैसी ज्यामितीय आकृतियों की सहायता से किया गया है। उनके कार्यों के कारण वारली चित्रकला केवल एक लोक कला न रहकर आधुनिक भारतीय कला में भी महत्त्वपूर्ण स्थान प्राप्त कर सकी। उनके अतुलनीय योगदान के लिए उन्हें अनेक पुरस्कारों से सम्मानित

किया गया। भारत सरकार द्‌वारा 'पद्‌मश्री' पुरस्कार (२०११), शिल्पगुरु पुरस्कार (२००२), राष्ट्रीय पुरस्कार (१९७६) तथा महाराष्ट्र शासन का राज्य हस्तकला पुरस्कार (१९७०) सहित अनेक सम्मानों से उन्हें गौरवान्वित किया गया।

- **सदैव ध्यान रखो :**
  - जिव्या सोमा म्हसे के योगदान के कारण वारली चित्रकला का प्रचार-प्रसार देश-विदेश में हुआ और इस कला के संरक्षण में भी बहुत सहायता मिली।

शिल्पकार : पद्‌मभूषण राम वंजी सुतार

राम सुतार भारत के प्रसिद्‌ध शिल्पकार हैं। उनका जन्म १९ फरवरी १९२५ को महाराष्ट्र के धुले जिले में हुआ था। उन्होंने शिल्पकला की शिक्षा मुंबई के सर जे. जे. स्कूल ऑफ आर्ट में प्राप्त की। उन्होंने भारत के अनेक महान नेताओं और ऐतिहासिक व्यक्तित्वों की भव्य प्रतिमाएँ बनाई हैं। उनकी शिल्पकृतियों में यथार्थपरक स्वरूप, अनुपातिक संतुलन और भव्यता दिखाई देती है। उनके कार्यों के कारण भारतीय शिल्पकला को देश-विदेश में विशेष पहचान प्राप्त हुई है। उनकी प्रसिद्‌ध शिल्पकृतियों में स्टैच्यू ऑफ यूनिटी – सरदार वल्लभभाई पटेल की विश्व की सबसे ऊँची प्रतिमा (गुजरात), संसद भवन परिसर में स्थापित महात्मा गांधी की प्रतिमा, नागपुर की दीक्षाभूमि में डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर की प्रतिमा

तथा अमृतसर में स्थापित महाराजा रणजीत सिंह की प्रतिमा प्रमुख हैं।

शिल्पकार राम वंजी सुतार को भारत सरकार द्‌वारा '**पद्‌मश्री और पद्‌मभूषण**' पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है। इनके अतिरिक्त उन्हें महाराष्ट्र राज्य का सर्वोच्च नागरिक सम्मान '**महाराष्ट्र भूषण**' भी प्रदान किया गया है, साथ ही वर्ष २०१८ में उन्हें टैगोर '**सांस्कृतिक सद्‌भावना पुरस्कार**' से भी सम्मानित किया गया।

- सदैव ध्यान रखो :
  - राम वंजी सुतार की शिल्पकृतियाँ भारत के अनेक शहरों में स्थापित की गई हैं जो भारतीय इतिहास और संस्कृति की याद दिलाती हैं।
  - सरदार वल्लभभाई पटेल की 'स्टैच्यू ऑफ यूनिटी' विश्व की सबसे ऊँची (१८२ मीटर) प्रतिमा है।

स्वाध्याय

१) रंगोली बनाने के लिए रासायनिक रंगों के स्थान पर पर्यावरण अनुकूल रंगों का उपयोग करना किस प्रकार लाभदायक है?

२) बाँस की पट्‌टियों से चटाइयाँ या टोकरी कैसे बनाई जाती हैं, इसका निरीक्षण करो। कागज या कपड़े की पट्‌टियाँ बनाकर उनकी सहायता से चटाई बुनो।

३) लकड़ी पर नक्काशी कैसे की जाती है, इसका निरीक्षण करो और अपनी कल्पना के अनुसार खड़िया (चॉक) पर नक्काशी करो।

सूचना रिपोर्ट/सूचना प्रतिवेदन :

आपके गाँव/क्षेत्र में विभिन्न प्रकार की कलाएँ और कलाकार हैं (जैसे स्थानीय चित्रकला, बुनाई, धातुकला, बाँसकला आदि)। इन कलाओं में स्थानीय संस्कृति, परंपराएँ, शैली और कलात्मक विशेषताएँ दिखाई देती हैं। इनके आधार पर एक छोटा 'सूचना प्रतिवेदन' (Report) तैयार करो। संभव हो तो उस कला का चित्र बनाओ या उसका कोई नमूना तैयार करो तथा अपना अनुभव कक्षा में बताओ।

इस संबंध में अधिक जानकारी प्राप्त करने के लिए प्रथम पृष्ठ पर दिए गए क्यू आर कोड को स्कैन करो।

- विद्‌यार्थियों को अपने आस-पास उपलब्ध उपयुक्त और आसानी से सुलभ चित्राकृति/शिल्पाकृति चुनने के लिए मार्गदर्शन करें।
- सूचना संग्रह के लिए विद्‌यार्थियों को विश्वसनीय स्रोतों, अभिभावकों, स्थानीय व्यक्तियों, पुस्तकों तथा अंतरजाल का उपयोग करने के लिए प्रोत्साहित करें।
- यदि यह समूह प्रकल्प हो तो प्रत्येक विद्‌यार्थी की सहभागिता सुनिश्चित करें।

CG - 4
C-4.1/4.2
LO06AE 20/21

रंगमंच

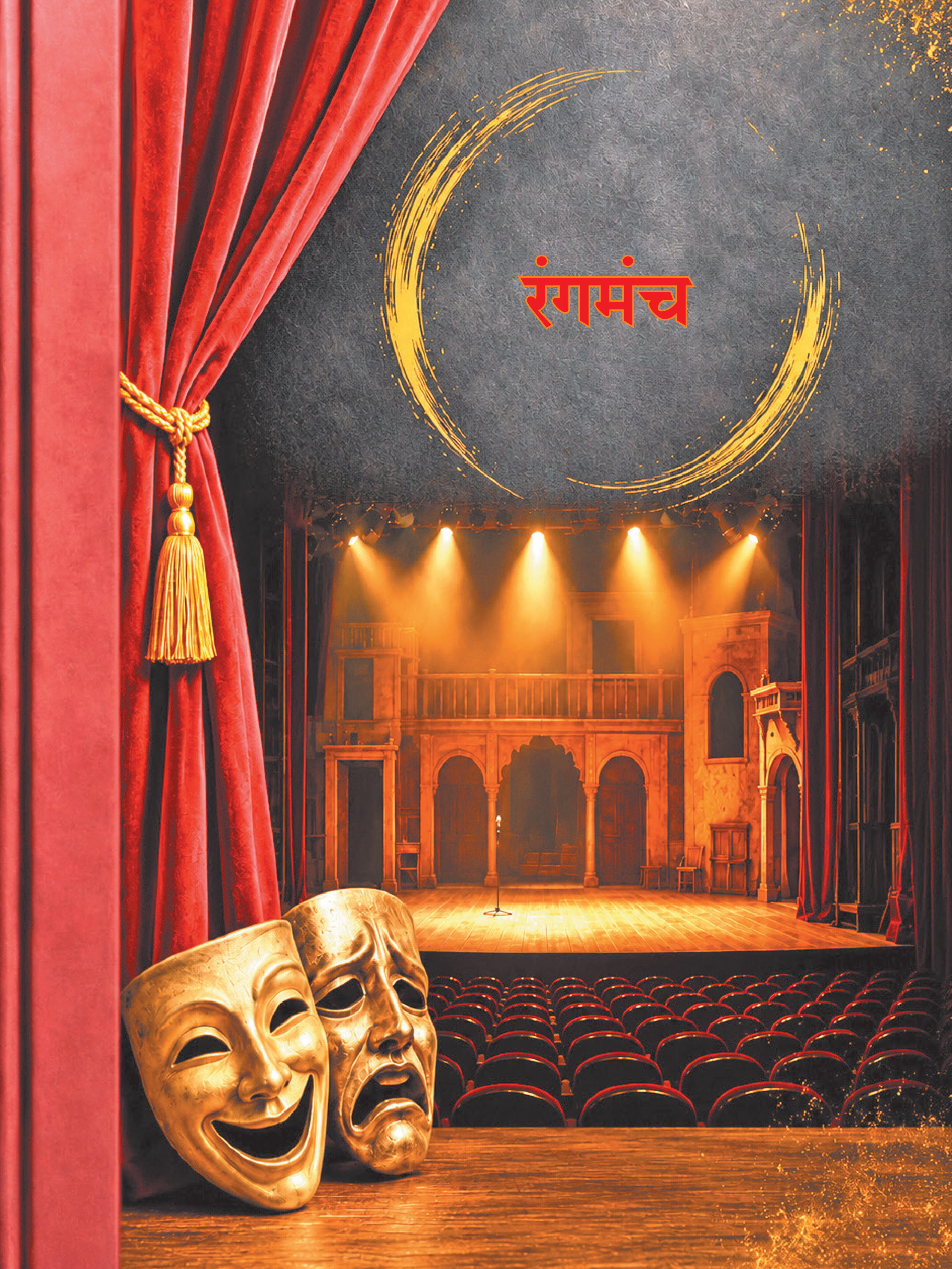

७ आओ, स्वयं को अभिव्यक्त करो...

हम अपने दैनिक जीवन में प्रतिदिन विभिन्न प्रकार के अनुभव प्राप्त करते हैं। विभिन्न प्रसंगों का सामना करते हैं। इन अनुभवों को हम दूसरों को जैसा का वैसा सुनाते हैं, उसे अनुभव कथन कहते हैं।

अब आपके ही जैसे संजू नाम के एक लड़के द्‌वारा किया गया 'अनुभव कथन' पढ़ते हैं।

अनुभव कथन

मैडम – क्या बात है संजू, तुम पढ़ाई करके क्यों नहीं आए?

संजू – मैडम, कल विद्‌यालय की छुट्‌टी होने के बाद मैं माँ के साथ बाहर गया था। इसलिए पढ़ाई नहीं कर पाया।

मैडम – अरे, लेकिन पढ़ाई पूरी करके जाना चाहिए था ना!

संजू – मैडम, माँ ने कहा कि देर हो गई तो दिंडी(यात्रा) निकल जाएगी।

मैडम – अच्छा, मतलब तुम दिंडी देखने गए थे।

संजू – जी मैडम, लेकिन लौटने में देर हो गई। इसलिए पढ़ाई नहीं कर पाया।

मैडम – तभी मैं सोच रही थी कि संजू तो रोज पढ़ाई पूरी करके आता है, लेकिन आज ऐसा क्या हुआ। आगे से या तो बताकर जाना या पढ़ाई पूरी करके जाना।

संजू – जी, ठीक है। मैं फिर ऐसा नहीं करूँगा।

मैडम – संजू, तुमने कल जो दिंडी का दृश्य देखा, वह हमें बताओ ना।

संजू – जी मैडम, बताता हूँ। हम दिंडी देखने गए तो वहाँ पहले से ही बहुत भीड़ थी। मेरी उम्र के बहुत सारे बच्चे भी वहाँ आए थे। सड़क के दोनों ओर लोगों की भीड़ लगी हुई थी। कुछ लोग तो पेड़ों पर चढ़कर दिंडी देख रहे थे। कुछ वारकरी पताका लेकर नाच रहे थे तो कुछ वारकरी मँजीरे बजाते हुए "जय हरी विठ्‌ठल" का भजन गा रहे थे। दो-तीन वारकरी ढोलकी बजा रहे थे।

मैडम – अरे संजू, उसे ढोलकी नहीं कहते, उसे पखावज या मृदंग कहते हैं।

संजू – जी मैडम। फिर हमने दिंडी के दर्शन किए और प्रसाद लेकर घर की ओर निकल पड़े लेकिन घर पहुँचने तक "जय हरी विठ्‌ठल, जय-जय विठ्‌ठल" की ध्वनि मेरे कानों में गूँजती रही। घर पहुँचते-पहुँचते अँधेरा हो गया था।

मैडम – वाह! बहुत बढ़िया। संजू, तुमने अपना अनुभव बहुत सुंदर ढंग से बताया। बच्चों, संजू ने कल अपने रोजमर्रा के जीवन से अलग एक नया अनुभव प्राप्त किया और उसे सरल शब्दों में हम सबको बहुत अच्छे से सुनाया। तुम भी अपने ऐसे अच्छे-अच्छे अनुभव कक्षा में सुनाओ ताकि हम सभी उन्हें जान सकें।

- विद्‌यार्थियों को दैनिक जीवन के विभिन्न अनुभव समूह में या कक्षा में सुनाने के लिए प्रोत्साहित करें। मौखिक अभिनय, सहजता, आत्मविश्वास, निर्भीकता तथा स्वतः अभिव्यक्ति जैसे गुणों में सुधार के लिए उचित अवसर प्रदान करें।

CG -1
C- 1.1
LO-06AE22

कहानी या प्रसंग का संवाद लेखन

नीचे एक प्रसंग दिया गया है। उसे हम ध्यानपूर्वक पढ़ेंगे।

प्रसंग:

प्रतीक और सौरभ रोज जिस रास्ते से विद्यालय जाते थे, उसी रास्ते पर शामराव का फूल और पुष्पगुच्छ बेचने की एक दुकान थी। रास्ते से जाते समय शामराव हमेशा उन दोनों की हालचाल पूछते थे लेकिन आज जब प्रतीक और सौरभ उनके फूलों की दुकान के पास से विद्यालय जा रहे थे, तब शामराव ने उनसे कुछ भी बात नहीं की। यह बात सौरभ के ध्यान में आई। उसे लगा, "आज काका को क्या हुआ होगा?" तब दोनों रुककर शाम काका का हालचाल पूछने लगे।

तब उन्हें पता चला कि शामराव ने एक ग्राहक को तीन हजार रुपये के फूल और पुष्पगुच्छ बेचे थे। ग्राहक ने उन्हें तीन हजार रुपये ऑनलाइन भेजे थे लेकिन वह राशि शामराव को प्राप्त नहीं हुई थी। इसलिए शामराव थोड़े चिंतित थे। उन्हें लग रहा था कि कहीं उनके तीन हजार रुपयों की ठगी तो नहीं हो गई।

यह सुनकर प्रतीक और सौरभ ने शामराव की मदद करने का निश्चय किया। सौरभ ने शामराव से उनका मोबाइल माँगा। तब शामराव ने बताया कि मोबाइल चार्जिंग पर लगा हुआ है। सौरभ ने मोबाइल हाथ में लिया तो उसे पता चला कि मोबाइल की बैटरी खत्म होने पर वह बंद हो गया था और उसे दोबारा चालू करना रह गया था। उधर प्रतीक उस मशीन को देखने लगा, जिसपर क्यू आर कोड स्कैन करके पैसे भेजे जाते थे। तब उसे पता चला कि उस मशीन की आवाज वाला बटन बंद था। दोनों ने क्यू आर कोड स्कैनर मशीन और मोबाइल चालू कर दिया। मोबाइल चालू होते ही पैसे प्राप्त होने का संदेश आ गया। सौरभ ने वह संदेश शामराव को दिखाया। शामराव की चिंता दूर हो गई। उन्होंने दोनों का धन्यवाद किया। सौरभ और प्रतीक विद्यालय जाने के लिए निकल पड़े। जाते-जाते उन्होंने कहा, "अगर किसी भी प्रकार की मदद की जरूरत हो तो हमें बताइएगा।"

उपरोक्त प्रसंग पर आधारित संवाद लेखन

(प्रतीक और सौरभ दोनों मित्र विद्यालय जा रहे हैं।)

सौरभ – प्रतीक, अरे! आज शायद हम विद्यालय जल्दी पहुँच जाएँगे।

प्रतीक – हाँ, आज तुमने तैयार होने में देर नहीं की। इसलिए हम विद्यालय जल्दी पहुँचेंगे।

सौरभ – अच्छा! क्या मैं हमेशा देर करता हूँ? तुम्हारे इस गलत निरीक्षण के लिए मैं शाम काका की दुकान से फूल खरीदकर तुम्हारा सम्मान करूँगा।

प्रतीक – देखो, दुकान आ गई। लो, फूल खरीदो और मेरा सम्मान करो।

सौरभ – चुप रहो, आगे चलो। लेकिन प्रतीक, तुम्हें एक बात ध्यान में आई?

प्रतीक – क्या?

सौरभ – विद्यालय जाते समय शाम काका रोज हमसे बात करते हैं लेकिन आज दुकान में कोई ग्राहक भी नहीं था, फिर भी उन्होंने हमसे बात नहीं की।

प्रतीक – हाँ रे! ऐसा लग रहा था जैसे वे किसी गहरी सोच में डूबे हों।

सौरभ – क्या हमें उनसे पूछना चाहिए कि क्या हुआ है?

- विद्यार्थियों से विभिन्न प्रसंगों पर संवाद लेखन करवाकर उनका प्रस्तुतीकरण करने का अवसर दें।

CG -1/2
C- 1.1/2.1
LO-06AE 23/27

प्रतीक – हाँ, चलो पूछते हैं।

सौरभ – काका, क्या बात है? आज तो आपका ध्यान हमारी ओर ही नहीं था। आपने हमसे कुछ बात भी नहीं की।

शामराव – अरे बच्चो, सच में मेरा ध्यान तुम्हारी ओर नहीं था।

सौरभ – क्यों, क्या हुआ? कोई परेशानी तो नहीं है?

प्रतीक – क्या हम आपकी कोई मदद कर सकते हैं?

शामराव – नहीं बेटा, ऐसी कोई विशेष बात नहीं है।

प्रतीक – ऐसा कैसे? हम रोज इसी रास्ते आपकी दुकान के सामने से जाते हैं। तब आप हमेशा पूछते हैं, "क्या बच्चों, विद्‌यालय जा रहे हो?" या "विद्‌यालय से लौट आए?" लेकिन आज क्या हुआ?

शामराव – अरे, अब क्या बताऊँ! अभी थोड़ी देर पहले एक ग्राहक ने तीन हजार रुपये की खरीदारी की। लेकिन...

सौरभ – लेकिन क्या हुआ, काका?

शामराव – उस ग्राहक ने अपने मोबाइल से मुझे ऑनलाइन पैसे भेजे थे...

सौरभ – तो फिर समस्या क्या है? उसने पैसे भेज दिए न? आपको मिल गए न?

शामराव – पैसे तो भेजे लेकिन मुझे मिले ही नहीं। न कोई संदेश आया और न ही इस मशीन से कोई आवाज आई। शायद मेरे साथ धोखाधड़ी हो गई है।

प्रतीक – काका, क्या आप उस ग्राहक को जानते हैं?

शामराव – नहीं बेटा। अब मुझे समझ नहीं आ रहा कि क्या करूँ।

सौरभ – जरा रुकिए काका, आपका मोबाइल दिखाइए। (शामराव सौरभ को मोबाइल देते हैं।) अरे काका, आपका मोबाइल तो बंद है। शायद बैटरी खत्म होने पर यह बंद हो गया होगा। चार्जिंग लगाने के बाद आप इसे चालू करना भूल गए। फिर पैसे मिलने का संदेश कैसे आएगा?

प्रतीक – और काका, इस क्यू आर कोड स्कैनर मशीन की आवाज भी बंद है। फिर आवाज कैसे सुनाई देगी? देखिए, यहाँ आवाज कम-ज्यादा करने का बटन है।

सौरभ – देखिए, मैंने मोबाइल चालू किया और यह रहा—पैसे मिलने का संदेश भी आ गया।

शामराव – बच्चो, अब इस बूढ़े आदमी को इतनी सारी बातें कहाँ समझ में आती हैं। अच्छा हुआ कि तुम दोनों ने मेरी मदद कर दी। अब मैं इन सभी बातों का हमेशा ध्यान रखूँगा। तुम दोनों का बहुत-बहुत धन्यवाद।

सौरभ – अरे काका, धन्यवाद किस बात का? हमने ऐसा कौन-सा बड़ा काम कर दिया!

प्रतीक – चलो सौरभ, विद्‌यालय का समय हो रहा है।

सौरभ – हाँ, चलो। अच्छा काका, हम चलते हैं।

शामराव – धन्यवाद बच्चों। शिक्षक दिवस पर मेरी ओर से अपने शिक्षकों के लिए फूल ले जाना। जिन्होंने तुम्हारे जैसे अच्छे विद्‌यार्थी तैयार किए हैं, उन्हें भी धन्यवाद देना चाहिए।

- इस प्रसंग के पात्रों का चयन करके उचित शब्दोच्चारण तथा आवाज के उतार-चढ़ाव के साथ संवादों का वाचन कराएँ और समूह में प्रस्तुत कराएँ।
- इस प्रसंग का कक्षा में मौखिक अभिनय सहित प्रस्तुतीकरण करवाएँ। प्रस्तुतीकरण का निरीक्षण करें तथा विद्‌यार्थियों द्‌वारा दिए गए सुझावों के अनुसार आवश्यक परिवर्तन करके पुनः प्रस्तुतीकरण करवाएँ।

CG -1
C- 1.1/1.2
LO-06AE24 /25

२. नीचे दिए गए प्रसंग के संवाद लिखो।

बरसात का मौसम शुरू हो गया था। समीर चिंतित था क्योंकि उसके घर की छत टपकने लगी थी। घर की मरम्मत करवाना आवश्यक था। उसने अपनी यह समस्या पड़ोस में रहने वाले राजाभाऊ को बताई लेकिन काम शुरू करने के लिए पैसों की समस्या थी। समीर का गद्‌दे बनाने का व्यवसाय था। बरसात के बाद ही उसका व्यवसाय वास्तव में अच्छी तरह चलने लगता था और तब उसे अधिक पैसे मिलते थे लेकिन घर के मरम्मत की आवश्यकता अभी थी।

यह सुनकर राजाभाऊ ने उसे धैर्य बँधाया। उन्होंने गाँव के सुधीर कोळी को बुलाने के लिए एक लड़के को भेजा। तभी सामने से सोनबा आता हुआ दिखाई दिया। वह बढ़ई का काम करता था। राजाभाऊ ने उसे आवाज देकर बुलाया और बताया कि समीर के घर के खंभों की मरम्मत करनी है। उसने तुरंत सहमति दे दी लेकिन दिवाली तक पैसों की व्यवस्था नहीं हो पाएगी और तब तक काम के पैसे नहीं मिल सकेंगे, यह बात राजाभाऊ ने उसे पहले ही बता दी।

इतने में सरपंच भी वहाँ आ गए। उन्होंने भी सोनबा से काम करने का अनुरोध किया। तब तक सुधीर कोळी भी वहाँ पहुँच गया। सभी ने उसे समीर की परिस्थिति समझाई। यह सुनकर उसने भी दो दिनों के भीतर छत की खपरैलें बदल देने का आश्वासन दिया। समीर बहुत खुश हुआ। उसने सभी का धन्यवाद किया। सरपंच को भी यह देखकर अच्छा लगा कि सभी लोग एक-दूसरे की मदद कर रहे थे। उन्होंने सभी को इसी प्रकार एकजुट रहकर एक-दूसरे की सहायता करने की सलाह दी। उन्होंने समझाया कि इससे गाँव का नाम प्रसिद्‌ध होगा। सभी ने उनकी बात का समर्थन किया और फिर अपने-अपने घरों की ओर चले गए।

- उपरोक्त प्रसंग के आधार पर संवाद लेखन अपनी कॉपी में लिखकर कक्षा में उसका प्रस्तुतीकरण करो।

स्वाध्याय

- अपनी भाषा या इतिहास की पाठ्‌यपुस्तक में से कोई एक प्रसंग चुनकर उसपर आधारित संवाद लेखन करके प्रस्तुतीकरण करो।

- उपरोक्त प्रसंग के पात्रों का चयन करके समूह में प्रस्तुतीकरण करवाएँ।
- प्रस्तुतीकरण के दौरान प्राप्त सुझावों पर विचार करके आवश्यक परिवर्तन सुझाएँ तथा पुनः प्रस्तुतीकरण करवाएँ।

CG -1/2
C- 1.1/1.2 /2.1
LO06AE23/26
/27

८ अभिनय की छटाएँ...

हमने पहले विभिन्न प्रसंगों पर समूह में नाटक प्रस्तुत किए हैं। समूह में सभी ने अलग-अलग भूमिकाएँ बाँटकर उनका अभिनय किया है। है ना? लेकिन अब किसी एक प्रसंग की सभी भूमिकाएँ एक ही व्यक्ति को निभानी हैं। कैसे निभानी हैं? यह प्रश्न मन में आया होगा। तो आइए, अब इसे करके देखते हैं।

१) नाट्‌यछटा

※ नीचे दी गई नाट्‌यछटा पढ़ो और समझो कि यह नाट्‌यछटा कला कैसी होती है?

चलो, आखिरकार खाना खत्म हुआ। त्योहारों पर ऐसे मिठाइयाँ और स्वादिष्ट भोजन खाने में कितना मजा आता है! और जब विद्‌यालय की छुट्‌टी हो तो जैसे सोने पे सुहागा। अब ऐसी दोपहर में पेट भरकर खाना खाने के बाद थोड़ा लेट जाऊँ तो मजा ही आ जाए। क्या कहते हो, पढ़ाई नहीं करनी है क्या? अरे, वह तो करनी ही है। विद्‌यालय है तो पढ़ाई भी होगी। लेकिन अभी तो बहुत आलस आ रहा है। थोड़ा सो लेता हूँ, फिर पढ़ने बैठूँगा। अरे माँ, क्या हुआ? मुझे क्यों बुला रही हो? अंदर आने को कह रही हो? अब अंदर क्यों आऊँ? क्या कह रही हो? रसोईघर की सफाई और सामान समेटने में थोड़ी मदद करूँ? लेकिन आपकी मदद के लिए तो दीदी वहाँ है। फिर मुझे क्यों बुला रही हो? क्या कहती हो? मेरी भी मदद की जरूरत है? अरे, लेकिन रसोई का काम मैं क्यों करूँ? आप और दीदी हैं ना! मेरी वजह से तो आपके काम में बाधा ही आएगी। उससे अच्छा मैं कोई और काम कर लेता हूँ। क्या कहती हो? दीदी हो या मैं, हम दोनों को बराबर काम करो? अरे, लेकिन घर के ये काम तो आप औरत लोग ही करो। मैं अपने काम कर लेता हूँ। क्या कहती हो दीदी? मैं कौन-सा काम करता हूँ? अभी तो मेरे लिए कोई विशेष काम नहीं है, लेकिन थोड़ी देर में कोई काम ढूँढ़ लूँगा। दीदी, तुम मेरी चिंता मत करो। क्या कहती हो? यहाँ पुरुषों और महिलाओं के अलग-अलग काम होते हैं, यह किसने कहा? चुपचाप काम करने आ जाओ? माँ, तुम दीदी को ठीक से समझाओ ना! नहीं तो बेवजह हमारी लड़ाई हो जाएगी। रुको, इससे अच्छा मैं पापा से ही शिकायत करता हूँ। पापा... ओ पापा! देखिए ना, दीदी मुझे कब से परेशान कर रही है। क्या कहते हैं पापा? क्या हुआ? अरे, मुझे अभी आराम करना है और ये लोग मुझे बेवजह काम करने के लिए कह रहे हैं। क्या कहते हो पापा? हमें एक-दूसरे के काम का सम्मान और एक-दूसरे की मदद भी करनी चाहिए? लेकिन पापा, उनका काम तो उन्हें ही करना चाहिए ना! क्या कहते हो? सारे काम समान होते हैं। उनमें स्त्री-पुरुष का भेदभाव नहीं करना चाहिए। लेकिन पापा, मैं तो यह कह रहा हूँ कि दीदी तो माँ की मदद के लिए रसोई में है ही। क्या कह रहे हो? आज दीदी है, लेकिन कल बड़ी होकर उसकी शादी हो जाएगी, तब हम दोनों को ही माँ की मदद करनी पड़ेगी? अरे हाँ! पापा, आप सही कह रहे हैं। मतलब मुझे भी आज से ही काम करने की आदत डालनी चाहिए। धन्यवाद पापा! आपने समय रहते मुझे यह बात समझा दी। अरे माँ... आ गया! बताइए, कौन-कौन-से काम बाकी हैं? जल्दी बताइए, मैं अभी सब कर देता हूँ।

क्यों दोस्तों, कैसी लगी यह नाट्‌यछटा?

- उचित उतार-चढ़ाव तथा हाव-भाव के साथ नाट्‌यछटा का प्रस्तुतीकरण करवाएँ। आवश्यक सुधार सुझाकर पुनः प्रस्तुतीकरण करवाएँ।
- विद्‌यार्थियों को उनके अपने अनुभवों पर आधारित नाट्‌यछटा लिखने के लिए मार्गदर्शन करें और विद्‌यार्थियों से नाट्‌यछटा का प्रस्तुतीकरण भी करवाएँ।

CG -1
C- 2.1
LO-06AE28

वास्तव में नाट्यछटा को याद करके फिर उसे उचित हाव-भाव के साथ मंच पर प्रस्तुत किया जाता है लेकिन पहले हम यह समझ लें कि नाट्यछटा क्या होती है? इससे उसे प्रस्तुत करना आसान हो जाएगा और हम स्वयं भी नाट्यछटा लिख सकेंगे।

नाट्यछटा वह कला है जिसमें एक ही पात्र विभिन्न पात्रों की भूमिकाएँ निभाता है।

नाट्यछटा एकल अभिनय (Solo Performance) की एक कला है। इसमें एक ही पात्र दर्शकों से बात करता है लेकिन ऐसा आभास कराता है कि उसके आस-पास और भी कई पात्र मौजूद हैं। ऊपर दी गई नाट्यछटा पढ़ते समय तुम्हें ऐसा लगा होगा कि तुम्हारी ही उम्र का एक लड़का तुमसे बात कर रहा है, लेकिन साथ ही उसकी माँ, बहन और पिता भी उसके आस-पास उपस्थित हैं। वास्तव में मंच पर केवल वही एक पात्र होता है। नाट्यछटा प्रस्तुत करने के लिए मंच सज्जा (सेट), रंग-रूप (मेकअप) या विशेष वेशभूषा आवश्यक नहीं होती। फिर भी संकेतात्मक मेकअप और वेशभूषा का उपयोग किया जा सकता है। नाट्यछटा के प्रस्तुतीकरण के लिए किसी विशेष रंगमंच या नाट्यगृह की आवश्यकता नहीं होती। इसे कक्षा, सभागार या विद्यालय के मंच पर भी प्रस्तुत किया जा सकता है। नाट्यछटा का विषय अपनी आयु समूह से संबंधित होना चाहिए। इससे उसका अर्थ समझना और उसे प्रस्तुत करना अधिक आसान हो जाता है। तुम्हारी नाट्यछटा लगभग पाँच से सात मिनट की होनी चाहिए ताकि तुम्हारी ही आयु के दर्शक ऊबे बिना उसका आनंद ले सकें।

२) मूक अभिनय का परिचय

बिना शब्दों का प्रयोग किए केवल चेहरे के भाव, शरीर की गतिविधियों और संकेतों के माध्यम से किसी कहानी, घटना या भावना को दर्शकों तक पहुँचाने की कला को **मूक अभिनय** कहते हैं। अंग्रेजी में इसे Mime Play कहा जाता है। इसमें कलाकार पूरी तरह **मौन** रहता है। मूक अभिनय की कुछ महत्त्वपूर्ण विशेषताएँ निम्नलिखित हैं।

- **शब्दों का प्रयोग न होना** – मूक अभिनय में संवादों का बिल्कुल उपयोग नहीं किया जाता। कलाकार जो कुछ कहना चाहता है, उसे अपनी शारीरिक भाषा (Body Language) के माध्यम से व्यक्त करता है।
- **चेहरे के हाव-भावों का महत्त्व** – खुशी, दुख, क्रोध, भय आदि भावनाओं को व्यक्त करने के लिए आँखों और चेहरे की मांसपेशियों का प्रभावी उपयोग किया जाता है।
- **काल्पनिक वस्तुओं का प्रयोग** – मूक अभिनय में कलाकार वास्तव में मौजूद न होने वाली वस्तुओं का अभिनय करता है, (जैसे- दरवाजा खोलना, पानी पीना, पतंग उड़ाना) कलाकार इन्हें इस प्रकार प्रस्तुत करता है कि दर्शकों को वे वस्तुएँ वास्तव में वहाँ मौजूद होने का आभास होता है।
- **मेकअप और वेशभूषा** – अक्सर मूक अभिनय करने वाले कलाकार हमेशा चेहरे पर सफेद मेकअप (White Face) लगाते हैं और काले-सफेद रंग के वस्त्र पहनते हैं, जिससे उनकी गतिविधियाँ स्पष्ट रूप से दिखाई दें। हालाँकि, पात्र के अनुसार उपयुक्त वेशभूषा भी की जा सकती है।
- **भाषा की कोई सीमा न होना** – मूक अभिनय केवल मनोरंजन का साधन नहीं है बल्कि यह संवाद का एक प्रभावशाली माध्यम भी है। जब भाषा बाधा बन जाती है तब मूक अभिनय लोगों को एक-दूसरे से जोड़ने का कार्य करता है।

क्या तुम जानते हो?

चार्ली चैप्लिन Charlie Chaplin को मूक अभिनय की दुनिया का महान कलाकार माना जाता है।

- किसी एक प्रसंग का चयन करके उसपर आधारित बिना संवाद का प्रस्तुतीकरण करवाएँ। उपलब्ध साधनों की सहायता से उसमें उपयुक्त पार्श्व संगीत (Background Music) भी जोड़ें।

३) नवरसों की सैर

नाटक देखते समय दर्शकों के मन में विभिन्न प्रकार की भावनाएँ उत्पन्न होती हैं। इसके लिए नाटक के कलाकारों को प्रसंग के अनुसार उचित भावों का प्रदर्शन करना पड़ता है। इन भावों के माध्यम से दर्शक आनंद (रस) का अनुभव करते हैं। ऐसे नौ रस, अर्थात् मनुष्य की नौ मूल भावनाएँ मानी जाती हैं। तो आइए, हम भी इन नवरसों की सैर करें।

आओ मिलकर साथ सभी, नाटक सीखें आज,
नवरसों की इस सुंदर यात्रा में करें हम सब काज।

हँसी-मजाक के दृश्य जहाँ, मन को खूब हँसाएँ,
हास्य रस की मीठी खुशियाँ, सबके चेहरे लाएँ।

डरावना जब दृश्य दिखे, मन में डर समाता,
भयानक रस का अनुभव तब, हर दर्शक कर पाता।

सुंदर वेश, मधुर मुस्कान, लज्जा का हो शृंगार,
शृंगार रस से सज उठता है, पात्रों का संसार।

घृणा जगे जब मन के भीतर, मुख बन जाए टेढ़ा,
बीभत्स रस को कलाकार तब, दिखलाता है गहरा।

क्रोध भरे जब शब्द निकलें, पाँव पटककर बोले,
रौद्र रस का रूप मंच पर, सबके मन को डोले।

युद्धभूमि में वीर खड़े हों, साहस से भर जाते,
वीर रस के उज्ज्वल रंग में, सब हैं रँगते जाते।

आँखें फैलें, मुँह खुल जाए, आश्चर्य जब दिखता,
अद्‌भुत रस का सुंदर अनुभव, मन को छूकर जाता।

दुख की घड़ी, करुण कहानी, सहानुभूति जगाती,
करुण रस की कोमल धारा, सबके मन को भाती।

गंभीर वाणी, संत विचार, शांति का संदेश,
शांत रस का दर्शन पाकर, मन हो जाए विशेष।

- **करके देखो :**

कोई भी शब्द बोले बिना केवल शारीरिक गतिविधियों और चेहरे के हावभावों द्‌वारा निम्नलिखित क्रियाएँ करो।

१) कीचड़ में चलना।
२) अँधेरे में रास्ता ढूँढ़ना।
३) सिर पर बोझ उठाकर ले जाना।
४) नारियल छीलना।
५) आईने के सामने मेकअप करना।
६) युद्‌ध के रणक्षेत्र में जाना।
७) पत्र पढ़ते-पढ़ते दुखी हो जाना।

चलो, खेल खेलेंगे :

नौ रसों की संख्या के अनुसार उतनी पर्चियाँ बनाकर उन्हें एक पात्र में रखो। एक समय में एक विद्‌यार्थी एक पर्ची उठाएगा। पर्ची में जो रस लिखा हो, उसके अनुसार छोटी-सी अभिनयात्मक क्रिया करके दिखाएगा। उसके बाद अगला विद्‌यार्थी दूसरी पर्ची उठाकर उसमें लिखे रस के आधार पर अभिनय प्रस्तुत करेगा। इस प्रकार सभी विद्‌यार्थी नौ रसों से संबंधित नौ प्रकार की क्रियाएँ करके दिखाएँगे।

- विद्‌यार्थियों की सक्रिय सहभागिता के माध्यम से उन्हें नौ रसों का परिचय कराएँ।
- इस गीत को अपनी पसंद की धुन में विद्‌यार्थियों से गवाएँ।
- गीत की जिस पंक्ति में जिस रस का उल्लेख हो, उस पंक्ति को गाते समय चेहरे पर उपयुक्त भाव और शारीरिक गतिविधियाँ करते हुए गवाएँ।

CG -2
C- 2.2
LO-06AE29

स्वाध्याय

१) तुम्हारी आयु वर्ग के अनुरूप एक नाट्‌यछटा (एकल अभिनय) लिखो अथवा तकनीक का उपयोग करके एक नाट्‌यछटा चुनो और उसका अभ्यास करना प्रारंभ करो। आवश्यकता पड़ने पर शिक्षक की सहायता लो।

२) नीचे दिए गए चेहरों का ध्यानपूर्वक निरीक्षण करके कौन-सा रस है, पहचानो।

....

....

....

....

९ चलो, रंगमंच पर...

रंगमंच की पहचान

किसी कला-कृति को प्रस्तुत करने के लिए जो मुख्य स्थान होता है, उसे रंगमंच कहा जाता है। इसकी रचना करते समय यह ध्यान रखा जाता है कि सामने प्रस्तुत की जाने वाली कला दर्शकों को बिना किसी बाधा के स्पष्ट दिखाई दे। साथ ही, कलाकार रंगमंच का उपयोग कैसे करे, पूरे रंगमंच का उपयोग करते समय किस भाग का अधिक उपयोग करे तथा मंच सज्जा (नेपथ्य) की व्यवस्था रंगमंच के किस भाग में होनी चाहिए जिससे प्रस्तुति सहज और स्वाभाविक लगे, इन बातों का भी विचार किया जाता है। इसके लिए रंगमंच का एक सामान्य प्रारूप नीचे दिया गया है।

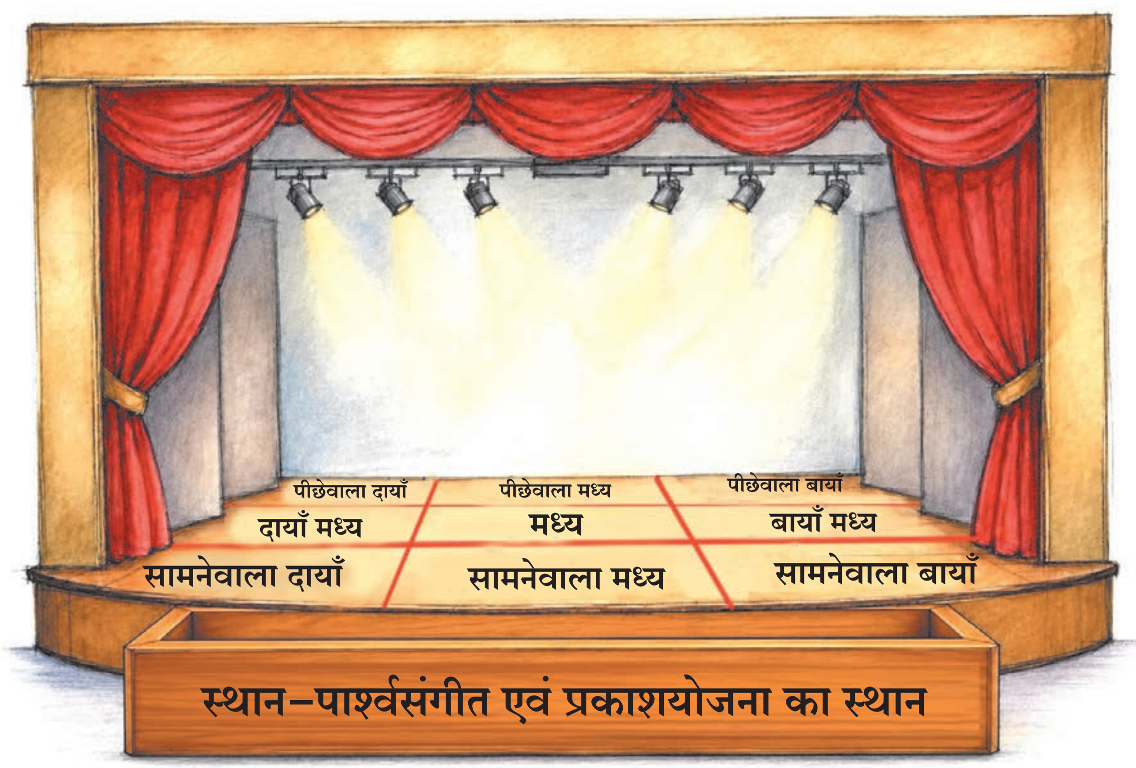

नाट्यगृह में रंगमंच के साथ-साथ मेकअप (रंग-भूषा) और वेशभूषा के लिए विशेष कमरों की भी व्यवस्था होती है। पार्श्वसंगीत और प्रकाश व्यवस्था के लिए रंगमंच के पास या उसके सामने अलग से स्थान निर्धारित किया जाता है।

- विद्यार्थियों को प्रत्यक्ष रूप से अथवा प्रतिकृति (मॉडल) के माध्यम से रंगमंच का परिचय कराएँ।

CG -3
C- 3.2
LO-06AE32

मंच सज्जा (नेपथ्य)

नाटक के दृश्यों को अधिक यथार्थवादी अर्थात् वास्तविक दिखाने के लिए रंगमंच पर आवश्यक वस्तुओं और सामग्री की व्यवस्था की जाती है। इसे **मंच सज्जा (नेपथ्य)** कहा जाता है।

नाटक का समय, काल, स्थान और प्रसंग को ध्यान में रखकर मंच सज्जा तैयार की जाती है। पर्दा खुलने पर सामने की मंच सज्जा देखकर दर्शकों को ऐसा अनुभव होना चाहिए मानो वे उसी काल और स्थान में पहुँच गए हों। इसलिए मंच सज्जा को नाटक का 'मूक पात्र' भी कहा जाता है।

मुख्य रूप से मंच सज्जा को दो भागों में बाँटा जाता है।

१. स्थिर मंच सज्जा (सेट)

२. हाथ में लेकर उपयोग की जाने वाली मंच सज्जा (हैंड प्रॉपर्टी)

रंगमंच पर स्थिर मंच सज्जा तैयार करते समय पात्रों के आने-जाने और अभिनय के लिए आवश्यक स्थान छोड़कर मंच के पिछले भाग (पिछला बायाँ, पिछला मध्य और पिछला दायाँ भाग) में सेट लगाया जाता है।

खर्च कम करने के लिए आवश्यकतानुसार संकेतात्मक मंच सज्जा (सिम्बॉलिक सेट) का भी उपयोग किया जा सकता है। उदाहरण के लिए यदि बस स्टॉप दिखाना हो तो एक खंभा लगाकर उस पर "बस स्टॉप" लिखा हुआ बोर्ड लगाया जा सकता है।

मंच सज्जा तैयार करने वाले कलाकार को 'मंच सज्जाकार (नेपथ्यकार)' कहा जाता है। वह नाटक के विषय तथा पात्रों की गतिविधियों को ध्यान में रखते हुए निर्देशक की सलाह के अनुसार मंच सज्जा की रूपरेखा तैयार करता है। अर्थात् सबसे पहले वह कागज पर मंच सज्जा का चित्र बनाता है।

कई बार रंगमंच का एक मॉडल (प्रतिकृति) बनाकर कलाकारों को मंच पर उनकी गतिविधियों और स्थानों के बारे में समझाया जाता है। इससे कलाकारों को वास्तविक प्रस्तुतीकरण करने में सहायता मिलती है।

रंगमंच की प्रतिकृति (मॉडल)

- विद्‌यार्थियों से उपलब्ध सामग्री का उपयोग करके रंगमंच की प्रतिकृति तैयार कराएँ।
- विद्‌यार्थियों को यह समझाया जाए कि रंगभूषा (मेकअप), वेशभूषा, प्रकाश व्यवस्था, ध्वनि तथा मुखौटों (मास्क) के उचित नियोजन से नाटक अधिक प्रभावशाली और जीवंत बनता है।

CG -3
C- 3.1/3.2
LO-06AE31/ 32

'नाटक की जादुई तैयारी'

नाटक का अर्थ केवल संवाद बोलना नहीं है बल्कि अपने अभिनय के माध्यम से उस पात्र को जीवंत बनाना होता है। जब कलाकार मंच पर किसी अलग रूप में दिखाई देता है तो हम सभी आश्चर्यचकित हो जाते हैं। चेहरे पर की गई रुपसज्जा (मेकअप) और शरीर पर पहनी गई वेशभूषा के कारण एक साधारण विद्‌यार्थी भी राजा, रानी या राक्षस जैसा दिखाई देने लगता है। आइए, रुपसज्जा और वेशभूषा का महत्त्व एक कहानी के माध्यम से समझते हैं।

कुछ ही दिनों में गणेशोत्सव शुरू होने वाला था। इस उत्सव में सोनाली के मोहल्ले के मित्रों ने एक छोटी-सी नाटिका प्रस्तुत करने का निश्चय किया। सभी बच्चे बड़े आनंद और उत्साह से उसकी तैयारी करने लगे। सारी तैयारियाँ पूरी हो गईं। सभी कलाकारों को अपने संवाद भी याद हो गए थे। सबने बहुत अच्छी तरह अभ्यास किया था। अब सभी नाटक प्रस्तुत करने के लिए उत्सुक थे।

नाटक के दिन सभी बच्चे मंच के पीछे इकट्‌ठा हुए। गाँव के प्रसिद्‌ध मेकअप कलाकार रमेश काका भी वहाँ उपस्थित थे। उन्हें देखकर कुछ बच्चों के मन में प्रश्न उठा। वे आपस में फुसफुसाने लगे, "नाटक के अभ्यास के समय तो रमेश काका नहीं थे, फिर आज यहाँ क्यों आए हैं?" तभी गुरु जी ने उनका प्रश्न सुन लिया और वहाँ आकर बोले, "बच्चो, तुम जिस पात्र की भूमिका निभाने वाले हो, उसकी वेशभूषा और रुपसज्जा रमेश काका करेंगे।"

बच्चे सोच में पड़ गए। उन्होंने पूछा, "रुपसज्जा?रुपसज्जा क्या होती है, गुरु जी?" गुरु जी ने उन मासूम बच्चों को अपने पास बुलाया और कहा, "रुपसज्जा का मतलब है सुंदर दिखने के लिए चेहरे पर किया गया शृंगार या किसी व्यक्ति की नकल करने के लिए की गई तैयारी। तुम्हारी भाषा में इसे मेकअप कहते हैं।" गुरु जी की सरल भाषा में समझाने पर बच्चों को रुपसज्जा और वेशभूषा का अर्थ समझ में आ गया।

असलम को इस नाटक में राजा की भूमिका निभाने का अवसर मिला था। रमेश काका ने लंबे और मजबूत शरीर वाले अस्लम का हल्का-सा मेकअप किया। उसकी घनी मूँछें बनाई, उसे पीले रंग की धोती पहनाई, कंधे पर शाल डाली, गले में मोतियों की मालाएँ पहनाईं, कानों में मोतियों के कुंडल लगाए, हाथों में बाजूबंद पहनाए, कमर में तलवार बाँधी और सिर पर मुकुट सजा दिया। असलम ने जब अपना रूप आईने में देखा तो वह खुशी से चमक उठा। अमर आश्चर्य से बोला, "वाह! असलम तो बिल्कुल असली राजा लग रहा है। रमेश काका ने तो कमाल कर दिया!"

रमेश काका जोर से हँसे और बोले, "अमर, तुम्हें तो राक्षस की भूमिका निभानी है ना? अब तुम्हें राक्षस बनाते हैं, इधर आओ।" अमर हँसते हुए उनके पास गया। रमेश काका ने उसका गहरे काले रंग से मेकअप किया। उसके सिर पर काले-सफेद रंग के छोटे-छोटे सींग लगाए। आँखों के आस-पास लाल रंग लगाया, जिससे उसकी आँखें बहुत डरावनी लगने लगीं। उसके होंठों के बाहर नकली दाँत लगाए, हाथ में तेज हथियार दिया, शरीर को काला दिखाया, कमर पर लाल वस्त्र बाँधा और गले में कौड़ियों की मालाएँ पहनाईं। इस प्रकार अमर एक भयानक राक्षस बन गया। उसे देखकर सभी बच्चे एक पल के लिए सचमुच डर गए। उसी समय अपना मेकअप करवाने के लिए आई सोनाली के सामने अमर अचानक कूद पड़ा। सोनाली बहुत डर गई। उसके पसीने छूट गए और वह रोने जैसी हो गई। तभी रोहन बोला, "अरे! सोनाली, यह अमर है। हमारे नाटक का राक्षस।" सोनाली ने बड़ी-बड़ी आँखों से उसे गुस्से में देखा। अमर हँसते हुए बोला, "सॉरी!" यह सुनकर सभी हँसने लगे। सोनाली ने अमर की पीठ पर हल्की-सी धौल जमाई और रमेश काका के पास जाकर बोली, "काका, अब मेरा मेकअप कीजिए ना।" रमेश काका ने सोनाली का मेकअप करना शुरू कर दिया।

सोनाली एक बहुत ही सुंदर लड़की थी। रमेश काका ने उसका बहुत हल्का-सा मेकअप किया। उसके गालों पर रंग लगाकर उन्हें गुलाबी बना दिया। उसके बालों की सुंदर केश सज्जा की। सोनाली ने घेरदार जालीदार गाउन पहना, कमर में नकली हीरों का कमरबंद बाँधा, कानों में हीरे जैसे कुंडल पहनें, हाथों में उसी तरह की चूड़ियाँ पहनीं। सिर पर नाजुक-सा हीरों जैसा मुकुट सजाया। उसके ऊपर उसने सुंदर सुनहरी जालीदार ओढ़नी ओढ़ी। पैरों में छन-छन बजने वाली पायलें पहनीं और माथे पर एक छोटी-सी सुंदर बिंदी लगाई। इस प्रकार सोनाली पूरी तरह तैयार हो गई। उसने आईने में अपना रूप देखा और वह स्वयं को देखकर बहुत खुश हो गई। उसने खुशी से अपने चारों ओर एक गोल चक्कर लगाया और रमेश काका को मधुर स्वर में "धन्यवाद" कहा। फिर वह दौड़कर अपनी सहेलियों के पास चली गई।

इस प्रकार रमेश काका ने सभी बच्चों की रुपसज्जा (मेकअप) और वेशभूषा पूरी की तथा उन्हें नाटक के लिए शुभकामनाएँ दीं। सभी बच्चों ने रमेश काका को नमस्कार किया और उनका धन्यवाद किया।

उधर मंच पर गाँव के दामोदर काका ने शानदार प्रकाश व्यवस्था की थी। लाल, नीले और पीले रंग की फोकस लाइटें मंच के सामने लगाई गई थीं। पूरा मंच चमक रहा था। मंच के सामने माइक भी लगाए गए थे।

- 'रुपसज्जा' (मेकअप) के कुछ व्यावहारिक प्रदर्शन उपलब्ध सामग्री की सहायता से कक्षा में कराएँ। उदाहरण के लिए – किसी वृद्‌ध व्यक्ति का रूप दिखाने के लिए दाढ़ी, मूँछ और बालों को सफेद रंग देना, या मूँछ बनाना आदि।

CG -3
C- 3.2
LO-06AE33

नाटक की तीसरी घंटी बजी और नाटक शुरू हो गया। मंच पर पर्दा खुलते ही राजदरबार में बैठे राजा पर प्रकाश की किरणें पड़ीं। मंच पर आते ही सभी विद्यार्थियों ने अपनी-अपनी भूमिकाएँ बहुत ही उत्कृष्ट ढंग से प्रस्तुत कीं। उनका अभ्यास तो अच्छा हुआ ही था, लेकिन सुंदर रुपसज्जा (मेकअप) और वेशभूषा के कारण सभी पात्र और भी प्रभावशाली दिखाई दे रहे थे। नाटक को दर्शकों की जोरदार तालियाँ मिलीं।

अब तक तुम समझ ही गए होंगे कि रुपसज्जा और वेशभूषा के कारण नाटक अधिक प्रभावशाली और आकर्षक बनता है तथा कलाकारों की भूमिका जीवंत हो उठती है। इसलिए नाट्‌य प्रस्तुति में इन दोनों तत्त्वों का बहुत महत्त्व है। अभिनय करते समय पात्र के स्वभाव के अनुसार उसके चेहरे पर उचित भाव-भंगिमाएँ दिखाने के लिए चेहरे, आँखों, बालों आदि की जो सजावट की जाती है, उसे रुपसज्जा (मेकअप) कहते हैं। इसी प्रकार पात्र को पहनाए जाने वाले वस्त्र, कपड़े, आभूषण, सिर पर धारण किए जाने वाले अलंकरण तथा अन्य उपयोगी वस्तुओं को वेशभूषा कहा जाता है। नाटक या मंचीय प्रस्तुति को अधिक प्रभावशाली बनाने के लिए रुपसज्जा और वेशभूषा का विशेष महत्त्व होता है। यह बात अब आपको अच्छी तरह समझ में आ गई होगी।

तीसरी घंटी

नाटक प्रारंभ होने से पहले थोड़े-थोड़े समय के अंतराल पर तीन बार घंटी बजाई जाती है। पहली घंटी दर्शकों को नाट्यगृह में अपने-अपने स्थानों पर स्थानापन्न होने के लिए संकेत देती है। दूसरी घंटी यह सूचना देती है कि नाटक की पूर्व तैयारी पूरी हो चुकी है और नाटक शीघ्र ही शुरू होने वाला है। तीसरी घंटी नाटक के आरंभ के समय बजाई जाती है। इसके बाद पर्दा खुलता है और नाटक का प्रारंभ हो जाता है।

रंगमंचीय शिष्टाचार

जब हम कोई नाटक देखते हैं या प्रस्तुत करते हैं, तब मंच पर अनेक कलाकार कार्य कर रहे होते हैं। जिस स्थान पर नाटक प्रस्तुत किया जाता है, उसे रंगमंच (मंच) कहते हैं। नाटक को सुंदर और अधिक प्रभावशाली बनाने के लिए कलाकारों द्‌वारा कुछ नियमों और शिष्टाचारों का पालन करना बहुत आवश्यक होता है। इन्हीं नियमों को रंगमंचीय शिष्टाचार कहा जाता है।

❊ रंगमंचीय शिष्टाचार – कलाकारों के लिए

- दिए गए संवादों को सही ढंग में कंठस्थ करो।
- प्रस्तुति के दौरान संवादों का स्पष्ट उच्चारण करो।
- अभ्यास या प्रस्तुति के स्थान पर शांति बनाए रखनी चाहिए।
- उचित देहभाषा और हाव-भाव का प्रयोग करो।
- प्रस्तुति से कुछ समय पहले मंच पर पहुँच जाना चाहिए।
- प्रस्तुति में उपयोग होने वाली सामग्री को उचित स्थान पर रखना चाहिए।
- सह कलाकारों का सम्मान करो।
- समय पर रुपसज्जा (मेकअप) और वेशभूषा पूरी कर लेनी चाहिए। निर्देशक द्‌वारा दिए गए निर्देशों के अनुसार प्रस्तुति करनी चाहिए।
- मंच पर प्रवेश करने और बाहर जाने के उचित समय का पालन करो।
- प्रस्तुति के दौरान मंच पर दौड़-भाग नहीं करनी चाहिए।
- मंच पर आत्मविश्वास के साथ व्यवहार करो।
- प्रस्तुति के दौरान दूसरों का सहयोग करो। प्रस्तुति में उपयोग की जाने वाली वस्तुओं को सावधानीपूर्वक सँभालना चाहिए।

कलाकारों के लिए जिस प्रकार रंगमंचीय शिष्टाचार का पालन करना आवश्यक है, उसी प्रकार कला की प्रस्तुति बिना किसी बाधा के सफलतापूर्वक हो सके, इसके लिए दर्शकों की भूमिका भी अत्यंत महत्त्वपूर्ण होती है।

❊ रंगमंचीय शिष्टाचार – दर्शकों के लिए

- प्रस्तुति देखने के लिए समय पर पहुंचना चाहिए।
- शांति बनाए रखने में सहयोग करो।
- पूरी प्रस्तुति देखनी चाहिए, बीच में उठकर नहीं जाना चाहिए।
- कलाकारों की प्रशंसा करनी चाहिए, उन्हें प्रोत्साहित करो तथा उचित समय पर तालियाँ बजाकर सराहना करनी चाहिए।
- प्रस्तुति के बीच मोबाइल फोन तथा अन्य तकनीकी उपकरण बंद रखने चाहिए।
- ऐसी कोई भी कृति नहीं करनी चाहिए जिससे कलाकारों का ध्यान भंग हो।

- विद्‌यार्थियों को विभिन्न भूमिकाएँ देकर इसपर चर्चा करें कि उन भूमिकाओं के अनुसार उनकी रुपसज्जा कैसे की जा सकती है।
- उपलब्ध सामग्री की सहायता से विद्‌यार्थियों को एक-दूसरे की रुपसज्जा करने के लिए प्रोत्साहित करें।
- रुपसज्जा का प्रदर्शन प्रत्यक्ष रूप से अथवा तकनीक (टेक्नोलॉजी) की सहायता से दिखाएँ।

CG -3
C- 3.2
LO-06AE33

स्वाध्याय

१) नीचे दिए गए चेहरों का नाम के अनुसार मेकअप (रुपसज्जा) करो।

राक्षस

विदूषक

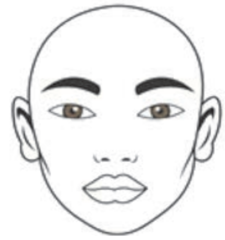

दादा जी

रानी

२) दिए गए चित्रों को उनकी वेशभूषा के अनुसार नाम दो।

....

....

....

....

३) सोचो और लिखो।

१. जंगल के दृश्य का मंचन करते समय ध्वनि और प्रकाश व्यवस्था कैसे करेंगे?

२. कक्षा में किसी भी एक दृश्य की प्रस्तुति के लिए उपलब्ध साधनों के माध्यम से ध्वनि और प्रकाश व्यवस्था कैसे करोगे, लिखो।

- विद्यार्थियों को यह जानकारी दें कि कलाकारों और दर्शकों के लिए रंगमंचीय शिष्टाचार अलग-अलग होते हैं तथा वे कौन-कौन-से होते हैं।
- रुपसज्जा (मेकअप) का प्रदर्शन प्रत्यक्ष रूप से अथवा तकनीक (टेक्नोलॉजी) की सहायता से दिखाया जाए।
- उपलब्ध सामग्री की सहायता से विद्यार्थियों को एक-दूसरे की रुपसज्जा (मेकअप) करने के लिए प्रोत्साहित करें।

CG -3
C- 3.1
LO-06AE30

१० नाट्य की परंपरा...

लोक कला और संस्कृति

महाराष्ट्र की लोक संस्कृति और लोक कला अत्यंत समृद्ध एवं विशिष्ट है। यह हमारी सांस्कृतिक विरासत की अमूल्य धरोहर है। इन लोक कलाओं का प्रदर्शन गाँव-गाँव में त्योहारों, उत्सवों, यात्राओं और मेलों में किया जाता है। इन कलाओं के माध्यम से समाज जागरूकता, मनोरंजन और संस्कारों का सुंदर संगम देखने को मिलता है।

लोक नाट्य, दशावतार, ललित, गोंधळ, भारूड, वगनाट्य, वासुदेव, कलाबाजी करनेवाले खेल, भजन और कीर्तन आदि लोक कलाओं में समाविष्ट हैं। ये सभी लोक कलाएँ नाट्य-प्रस्तुति से संबंधित हैं।

१. **तमाशा** - महाराष्ट्र की सबसे लोकप्रिय लोक नाट्य कला है। इसमें लावणी, नृत्य, गण-गवळण, वग, हास्य तथा संवादों का स्वाभाविक समावेश होता है। तमाशे के माध्यम से सामाजिक विषयों पर जनजागरण भी किया जाता है।

२. **दशावतार** - दशावतार कोंकण क्षेत्र की पारंपरिक नाट्य कला है। इस कला में भगवान विष्णु के दस अवतारों की कथाएँ प्रस्तुत की जाती हैं। रंग-बिरंगी वेशभूषा, मुखौटे और प्रभावशाली संवाद इस कला की विशेषताएँ हैं। धार्मिक एवं नैतिक संदेश देना इसका मुख्य उद्देश्य होता है।

गण-गवळण

दशावतार

भारूड

लोक नाट्य

लोक नाट्य

विद्यालय में वार्षिक स्नेह सम्मेलन की तैयारी चल रही थी। छठी कक्षा में कक्षा शिक्षिका आईं।

बहन जी – बच्चो, इस वर्ष हम लोक कला पर आधारित प्रस्तुति करने वाले हैं।

विद्यार्थी – बहुत मजा आएगा!

सोनाली – बहन जी, लोक कला वास्तव में क्या होती है?

बहन जी – हमारे महाराष्ट्र में गाँव-गाँव में प्रस्तुत की जाने वाली पारंपरिक कलाओं को लोक कला कहा जाता है। इसमें गीत, नृत्य, संवाद और हास्य का समावेश होता है। इनमें लोक नाट्य, दशावतार, गोंधळ, ललित, भारूड आदि समाविष्ट हैं। कीर्तन, वगनाट्य, वासुदेव आदि भी लोक कलाओं के प्रकार हैं।

राहुल – बहन जी, तमाशा क्या होता है?

बहन जी – तमाशा महाराष्ट्र की प्रसिद्ध लोक नाट्य कला है। इसमें गीत, नृत्य, गण-गवलण, वग, हास्य तथा सहज संवादों का समावेश होता है। इसके माध्यम से सामाजिक विषयों पर जनजागृति की जाती है।

अनिता – बहन जी, हमारे गाँव में (कोकण में) मेले के समय इसी प्रकार का एक कार्यक्रम होता है। उसे दशावतार कहा जाता है।

बहन जी – बिल्कुल सही। इसमें भगवान विष्णु के दस अवतारों की कथाएँ प्रस्तुत की जाती हैं।

सोनाली – उसमें बड़े-बड़े मुखौटे और रंग-बिरंगे वस्त्र होते हैं, है न?

बहन जी – हाँ, बिल्कुल। यही उसकी विशेषता है।

अमोल – बहन जी, ललित के बारे में बताइए न!

बहन जी – ललित महाराष्ट्र की एक पारंपरिक लोक कला है जो उत्सव के समापन के समय प्रस्तुत की जाती है। इसमें विभिन्न रूप लेकर (वेशभूषाएँ धारण करके) कीर्तन, नृत्य, गायन और अभिनय के माध्यम से जनजागृति की जाती है।

विद्यार्थी – तो फिर हम इनमें से कौन-सी लोक कला प्रस्तुत करें?

बहन जी – हम किसी सामाजिक विषय पर एक छोटा नाटक लिखेंगे और उसे अपने क्षेत्र की किसी लोक कला शैली में प्रस्तुत करेंगे।

विद्यार्थी – जी बहन जी, हम इसकी तैयारी करेंगे।

बहन जी – अब यह तय करो कि कौन-सी लोक कला चुननी है और तुरंत तैयारी में लग जाओ।

- तकनीक की सहायता से विद्यार्थियों को लोक कला प्रकारों के वीडियो दिखाएँ।
- विद्यार्थियों को ज्ञात लोक कलाओं पर चर्चा कराएँ।
- किसी एक लोक कला प्रकार का प्रस्तुतीकरण कराएँ।

CG –4
C– 4.1
LO–06AE34/35

एक कलाकार का परिचय

विद्‌यालय में छठी कक्षा में नाट्‌यकला का कालांश चल रहा था।

बच्चो, तुम सभी नाटक और फिल्में देखते हो ना? उनमें तुम्हारे कुछ पसंदीदा अभिनेता और अभिनेत्रियाँ भी रहते होंगे। तुम्हें हिंदी और मराठी फिल्मों के कई कलाकारों के नाम भी पता होंगे।

तो आज हम एक बहुमुखी अभिनेता के बारे में जानेंगे। उस अभिनेता का नाम है दिलीप प्रभावळकर।

दिलीप प्रभावळकर

जन्म – ४ अगस्त, १९४४ मुंबई में हुआ।

शिक्षा – विज्ञान शाखा में भौतिक विज्ञान विषय से स्नातक की उपाधि प्राप्त की।

लेखन – बाल साहित्य और हास्य लेखन किया है। इनके लेखन से बच्चों को मनोरंजन के साथ-साथ अच्छे संस्कार भी मिलते हैं।

''बोक्या सातबंडे' पुस्तक शृंखला बहुत लोकप्रिय है।

प्रसिद्‌ध भूमिकाएँ –

१. आबा टिपरे – मालिका 'श्रीयुत गंगाधर टिपरे'
२. तात्या विंचू – फिल्म 'झपाटलेला' में।
३. चींची चेटकीन – नाटक अलबत्या गलबत्य में।
४. हसवा फसवी – हास्य नाटक में विविध छह भूमिकाएँ।
५. महात्मा गांधी – फिल्म लगे रहो मुन्नाभाई में।
६. नंदू – एक मानसिक रूप से दिव्यांग युवक का पात्र, फिल्म 'चौकट राजा' में।
७. चिमणराव – मालिका 'चिमणराव आणि गुंड्याभाऊ'

प्राप्त पुरस्कार –

१. हिंदी फिल्म 'लगे रहो मुन्नाभाई'' में महात्मा गांधी की भूमिका के लिए सर्वश्रेष्ठ सहायक अभिनेता का राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार प्राप्त हुआ।

२. चौकट राजा फिल्म में 'नंदू' नामक मानसिक रूप से दिव्यांग युवक की भूमिका के लिए महाराष्ट्र राज्य फिल्म पुरस्कार।
३. संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार।
४. 'बोक्या सातबंडे' शृंखला के लिए बाल साहित्य पुरस्कार।
५. 'दशावतार' फिल्म के लिए सर्वश्रेष्ठ अभिनेता पुरस्कार।

स्वाध्याय

१. तुमने कौन-सा लोक नाट्य देखा है? उसका अनुभव लिखो। लोक नाट्य से मिलने वाले संदेश को अपने शब्दों में लिखो।
२. तुम्हारे परिसर की लोक कलाओं की जानकारी चित्रों के साथ इकट्ठा करो।
३. परिसर की किसी एक लोक कला का चयन करो। वह किन अवसरों पर प्रस्तुत की जाती है, इसकी जानकारी लिखो।
४.परिसर की लोक कलाओं से संबंधित वेशभूषा और वाद्‌ययंत्रों की जानकारी प्राप्त करो।
५. तुम्हारी पसंदीदा लोक कला का चित्र बनाओ और उसमें रंग भरो।
६. तुम्हारे परिसर के किसी वृद्‌ध व्यक्ति का साक्षात्कार लो तथा उनसे लोक कलाओं के बारे में जानकारी प्राप्त करो।
७. तुम्हारे प्रिय कलाकार की जानकारी, उनके छायाचित्र के साथ इकट्ठा करो। इस जानकारी के आधार पर एक रिपोर्ट प्रस्तुत करो।

- तकनीक की सहायता से दिलीप प्रभावळकर के बारे में अधिक जानकारी प्राप्त करके कक्षा में बताएँ।
- उनके द्‌वारा लिखे गए किसी नाटक या एकांकी का वाचन करवाएँ।
- विद्‌यार्थियों को अपने प्रिय कलाकार के बारे में जानकारी इकट्ठा करने के लिए कहें।
- इकट्‌ठा गई जानकारी को संकलित करके उसकी हस्तलिखित पुस्तक तैयार करवाएँ।

CG -4
C- 4.2
LO-06AE36

संगीत

११ लय और ताल की पहचान

हमारे चलने की गति, साँस लेने की गति और बोलने की गति में हमें लय का अनुभव होता है। इसी प्रकार प्रकृति में पेड़ों की हलचल तथा वर्षा की बूँदों की गति में भी एक प्रकार की लय होती है।

यदि हम घड़ी को देखें, तो उसकी तीनों सुईयाँ (घंटा, मिनट और सेकंड) अलग-अलग गति से चलते हुए दिखाई देते हैं।

- **घंटे की सुई :** विलंबित लय
- **मिनट की सुई :** मध्य लय
- **सेकंड की सुई** : द्रुत लय

संगीत में लय का अर्थ है – 'किसी क्रिया या गति का समान वेग।' जब दो मात्राओं (समय के अंतराल) के बीच की गति लगातार समान बनी रहती है, तो उसे 'लय' कहते हैं।

लय के प्रकार:

शास्त्रीय संगीत में लय के मुख्य तीन प्रकार माने जाते हैं :

१) **विलंबित लय :** यह अत्यंत धीमी गति की लय होती है। जब दो मात्राओं के बीच का समय अधिक होता है तो उसे विलंबित लय कहते हैं। (उदाहरण – घड़ी के घंटे की सुई के समान।)

२) **मध्य लय :** यह सामान्यतः घड़ी के मिनट की सुई की गति के समान होती है। यह विलंबित लय से थोड़ी अधिक तेज होती है। (उदाहरण– घड़ी के मिनट की सुई के समान।)

३) **द्रुत लय :** यह अत्यंत तेज गति की लय होती है। यह मध्य लय की दुगुनी या उससे भी अधिक गति से चलती है। (उदाहरण– घड़ी के सेकंड की सुई के समान।)

दैनिक जीवन में लय के उदाहरण

धीमी गति

मध्यम गति

तेज गति

- लय और उसके प्रकार समझाएँ।

CG -1
C- 1.1
LO-06AE37

आओ, विभिन्न लय प्रकारों को समझने के लिए विलंबित (मंद) लय में एक भावगीत सुनेंगे और गाएँगें।

विलंबित लय का भावगीत

॥घनश्याम सुंदरा॥

घनश्याम सुंदरा श्रीधरा, अरुणोदय झाला
उठी लवकरि वनमाळी उदयाचळीं मित्र आला॥ध्रु॥
आनंद कंदा प्रभात झाली,
उठी सरली राती, काढि धार क्षिरपात्र
घेउनी धेनू हंबरती,
लक्षिताती बांसुरे हरी धेनुस्तनपानाला॥१॥
सायंकाळी एकेमेळी द्विजगण अवघे वृक्षी
अरुणोदय होताच उडाले चरावया पक्षी,
प्रभातकाळी उठुनि कापडी तीर्थपंथ लक्षी
करुनि सडासंमार्जन गोपी कुंभ घेऊनी कुक्षी
यमुनाजळासी जाति मुकुंदा दध्योदन भक्षी॥२॥

कवि – शाहीर होनाजी बाळा

(भावार्थ)
यह भावगीत "घनश्याम सुंदरा" भगवान श्रीकृष्ण को प्रभात के समय प्रेमपूर्वक जगाने वाला गीत है जिसे मराठी में भूपाळी कहते हैं। इसमें प्रातःकाल का सुंदर वातावरण और गोकुल का जीवन चित्रित किया गया है।

मुखड़ा :
"घनश्याम सुंदरा श्रीधरा, अरुणोदय झाला, उठी लवकरि बनमाळी उदयाचळीं मित्र आला।"
हे सुंदर श्याम (कृष्ण)! सूर्योदय हो गया है। हे वनमाला धारण करने वाले प्रभु, जल्दी उठिए क्योंकि आपका मित्र सूर्य उदय हो चुका है।

पहला अंतरा :
"आनंद कंदा प्रभात झाली..."
हे आनंद के स्रोत प्रभु! सुबह हो गई है और रात समाप्त हो गई है। गायों का दूध निकाला जा रहा है। गायें रंभा रही हैं और ऐसा लगता है कि वे भी कृष्ण की बाँसुरी सुनने और उन्हें दूध पीते देखने की प्रतीक्षा कर रही हैं।

दूसरा अंतरा :
"सायंकाळी एकेमेळी..."
शाम को जो पक्षी वृक्षों पर बैठे थे, वे सुबह होते ही उड़कर भोजन की खोज में निकल गए। लोग तीर्थयात्रा के लिए काँवड़ लेकर जा रहे हैं। गोपियाँ घर की सफाई करके सिर पर घड़े रखकर यमुना नदी से पानी भरने जा रही हैं। वे कृष्ण के लिए दही-भात आदि भोजन भी ले जा रही हैं।

भावार्थ :
इस गीत में प्रभातकाल का मनोहर दृश्य, गोकुल का ग्रामीण जीवन और भगवान कृष्ण के प्रति प्रेम व भक्ति का सुंदर वर्णन किया गया है। पूरा वातावरण कृष्णमय दिखाई देता है और सभी लोग तथा प्रकृति उन्हें जगाने और उनकी सेवा करने के लिए उत्सुक हैं।)

विलंबित लय के अन्य गीतों के उदाहरण

१) एक धागा सुखाचा २) अशी पाखरे येती

इन गीतों को सुनकर गाने का प्रयास करो।

- विभिन्न संगीतमय गीतों को पहली बार सुनाते समय उन्हें मंद (संथ) लय में सुनवाएँ।
- प्रथम पृष्ठ पर दिए गए क्यू. आर. कोड में उपलब्ध गीत सुनाएँ और विद्यार्थियों से उसका गायन करवाएँ।

CG -1
C- 1.1
LO-06AE37

✲ भावगीत ✲

अब हम मध्य लय का गीत सीखेंगे।

मध्य लय का चलचित्र (फिल्म) गीत

ऐरणीच्या देवा तुला...

ऐरणीच्या देवा तुला ठिणगी ठिणगी वाहू दे
आभाळागत माया तुझी आम्हांवरी राहू दे!॥ धृ॥
लेऊ लेणं गरिबीचं
चणं खाऊ लोखंडाचं
जिणं व्हावं आबरूचं
धनी मातुर माझा देवा, वाघावाणी असू दे!॥ १॥
लक्ष्मीच्या हातातली
चवरी व्हावी वरखाली
इडापीडा जाईल आली, किरपा तुझी
भात्यातल्या सुरासंग गाऊ दे!॥ २॥
सुख थोडं दुख भारी
दुनिया ही भली-बुरी
घाव बसंल घावावरी
सोसायाला, झुंजायाला अंगी बळ येऊ दे!॥ ३॥

कवि : जगदीश खेबूडकर

(भावार्थ)

यह गीत एक मेहनतकश लोहार की प्रार्थना है। वह अपने देवता से धन-दौलत नहीं, बल्कि मेहनत, सम्मान और कठिनाइयों से लड़ने की शक्ति माँगता है।

मुखड़ा :

हे ऐरणी (लोहारी कार्यों में उपयोग होने वाला औजार) के देवता! मैं तुम्हें अपनी हर चिंगारी अर्पित करता हूँ। तुम्हारा आकाश जैसा विशाल प्रेम और स्नेह हमेशा हम पर बना रहे।

पहला अंतरा :

मैं गरीबी को आभूषण के रूप में पहन लूँगा और लोहे जैसे कठोर जीवन को भी सहन कर लूँगा। लेकिन मेरा जीवन सम्मान और इज्जत से भरा हो। हे मेरे पालनहार देवता! मुझे बाघ की तरह साहसी और निर्भय बना दो।

दूसरा अंतरा :

यदि माँ लक्ष्मी की कृपा हम पर बनी रहे, तो हमारे सभी दुख और परेशानियाँ दूर हो जाएँगी। तुम्हारी कृपा मिलने पर मैं अपने काम के औजारों /साधनों और भट्टी की धुन के साथ खुशी से गा सकूँ।

तीसरा अंतरा :

जीवन में सुख कम और दुख अधिक होते हैं। यह दुनिया अच्छी और बुरी दोनों तरह की है। एक के बाद एक कठिनाइयाँ आती रहती हैं। हे देवता! मुझे उन दुखों को सहने और संघर्ष करने की शक्ति प्रदान करो।

संदेश
यह गीत हमें सिखाता है कि जीवन में कठिनाइयाँ आएँगी, लेकिन हमें मेहनत, आत्मसम्मान, साहस और ईश्वर पर विश्वास के साथ उनका सामना करना चाहिए। धन से अधिक महत्त्वपूर्ण है सम्मानपूर्वक जीवन जीना और संघर्ष करने की शक्ति रखना।)

मध्य लय के गीतों के कुछ अन्य उदाहरण।

१) एका तळ्यात होती   २) हमको मन की शक्ति देना मन विजय करे

इन गीतों को सुनकर गाने का प्रयास करो।

- मध्य लय के विभिन्न गीत विद्यार्थियों को सुनाएँ।
- भाव गीत, भक्ति गीत और कोळी गीत के कुछ उदाहरण दें। इसके अतिरिक्त स्थानीय स्तर पर प्रचलित गीतों को भी सम्मिलित करें।
- प्रथम पृष्ठ पर दिए गए क्यू आर कोड में उपलब्ध गीत विद्यार्थियों को सुनाएँ तथा उनका गायन करवाएँ।

CG -1
C- 1.1
LO-06AE37

✲ पोवाडा ✲

अब हम द्रुत लय का गीत सीखेंगे। द्रुत लय, मध्य लय की अपेक्षा अधिक तेज होती है।

छत्रपति शिवाजी महाराज का पोवाडा

आधी नमन शिवरायाला। महाराष्ट्राला।
शूर वीराला मराठी सत्तेचा पहिला राजा।
जगामध्ये आहे गाजावाजा स्वीकारा लवुनी मुजरा माझा॥
राज्यांचा पाटील अभिमानी। अन्यायाचा धनी।
करी मनमानी छळाने त्रस्त झाला समुदाय। जनतेकडे
नव्हता याचा उपाय राजाने तोडले त्याचे हातपाय॥

(**गद्‍य :** स्त्रियों पर अन्याय करने वालों को कठोर दंड देकर छत्रपति शिवाजी महाराज ने महिलाओं के सम्मान की रक्षा की।)

अफझल खान कपटी सरदार। ताकदीचा फार।
अतिशय क्रूर भेटीचा त्याने टाकला डाव।
दगलबाजीने घातला घाव त्यास मारून मिळविले नाव॥

(**गद्‍य :** स्वराज्य पर आए बड़े संकट का महाराज ने स्वयं सामना किया और उसे समाप्त किया।)

मग आला शाहिस्ते खान। होऊन बेभान।
उठविले रान सैन्य संख्येने होते मोठे।
लाल महालात बिऱ्हाड थाटे।
शिवबाने कापली त्याची बोटे॥

(**गद्‍य :** छत्रपति शिवाजी महाराज ने अपनी बुद्‍धिमानी, निर्भयता और पराक्रम से शत्रुओं को पराजित किया। उन्होंने सभी धर्मों के लोगों को साथ लेकर स्वराज्य की स्थापना की।)

एक-एक लाभला शिलेदार। लहान असो थोर। उदार
जीवावर शिवा काशीद बाजीप्रभूने।
वीर तानाजी मालुसरेने दिली कितीकांनी
बलिदाने॥
जयजयकार करू राजाचा।
छत्रपतिचा राज्याभिषेकाचा।
आनंद झाला महाराष्ट्रास। सोहळा अभिमानाचा खास
प्रणाम त्या कर्तृत्वाच्या सूर्यास॥

– डॉ. गंगाधर चंद्रभागा बापू रासगे

द्रुत लय के गीतों के कुछ अन्य उदाहरण

१) शूर आम्ही सरदार ... २) म्यानातून उसळे...

इन गीतों को सुनकर गाने का प्रयास करो।

(पोवाडा "आधी नमन शिवरायाला, महाराष्ट्राला" का सरल हिंदी अर्थ : पहले नमन छत्रपति शिवाजी महाराज और महाराष्ट्र को। वे महान शूरवीर थे और मराठी सत्ता के पहले राजा थे। उनकी वीरता और महान कार्यों की चर्चा पूरे संसार में है, इसलिए मैं उन्हें झुककर प्रणाम करता हूँ।
अन्याय के विरुद्‍ध संघर्ष : एक गाँव का घमंडी पाटील (मुखिया) अपनी मनमानी करता था और लोगों पर अत्याचार करता था। उसके अन्याय से जनता परेशान थी, लेकिन कोई उपाय नहीं था। राजा छत्रपति शिवाजी महाराज ने ऐसे अत्याचारी को दंड दिया और लोगों को न्याय दिलाया।

अफजल खान से सामना : अफजल खान एक शक्तिशाली और क्रूर सेनापति था। उसने धोखे से छत्रपति शिवाजी महाराज को हराने की योजना बनाई। लेकिन छत्रपति शिवाजी महाराज ने उसकी चाल को समझ लिया और साहस व बुद्‍धिमानी से उसका सामना किया। इससे उनका नाम इतिहास में अमर हो गया।

शाइस्ता खान पर विजय : इसके बाद शाइस्ता खान बड़ी सेना लेकर आया।
उसने लाल महल में अपना डेरा जमा लिया। लेकिन छत्रपति शिवाजी महाराज ने अपनी चतुर युद्‍धनीति (गुरिल्ला कावा) से अचानक हमला किया और उसके हाथ की उंगलियाँ काट दीं।

वीर साथियों का योगदान : छत्रपति शिवाजी महाराज को अनेक वीर साथी मिले।
छोटे-बड़े सभी योद्धाओं ने अपने प्राणों की परवाह किए बिना स्वराज्य के लिए बलिदान दिए। शिवा काशीद, बाजी प्रभु देशपांडे और वीर तानाजी मालुसरे जैसे योद्धाओं ने महान साहस दिखाया।
राज्याभिषेक का उत्सव : छत्रपति शिवाजी महाराज के राज्याभिषेक से पूरे महाराष्ट्र में खुशी फैल गई। यह गर्व और सम्मान का महान अवसर था।
ऐसे महान कर्तृत्ववान सूर्य समान राजा को मेरा प्रणाम।
भावार्थ : यह पोवाडा छत्रपति शिवाजी महाराज के साहस, न्यायप्रियता, स्त्री सम्मान की रक्षा, स्वराज्य स्थापना और उनके वीर साथियों के बलिदान का वर्णन करता है।)

- लय के माध्यम से इन गीतों का अभ्यास करवाएँ।
- विद्यार्थियों को गीत सुनवाएँ।
- प्रथम पृष्ठ पर दिए गए क्यू आर कोड को स्कैन करके विलंबित, मध्य और द्रुत लय के भावगीत, भक्तिगीत, देशभक्ति गीत तथा पोवाड़ों का अभ्यास कराएँ।
- प्रथम पृष्ठ पर दिए गए क्यू आर कोड के गीत सुनवाकर उनका गायन करवाएँ।

CG -1
C- 1.1
LO-06AE37

ताल एकताल (एक पट एवं दो पट)

ताल और लय का प्रात्यक्षिक करते समय, एकताल की ताली के माध्यम से प्रस्तुति करेंगे।

ताल की जानकारी :

मात्राएँ : १२

विभाग : ६ (प्रत्येक विभाग में २ मात्राएँ)

सम : पहली मात्रा पर सम का चिह्न 'x' होता है।

खाली (काल) मात्रा : ३ और ७ वीं मात्रा पर खाली/काल का चिह्न ० होता है। इन मात्राओं को हाथ बगल में करके दिखाना चाहिए।

ताली : १, ५, ९ और ११ वीं मात्रा पर ताली बजाई जाती है। इन मात्राओं पर एक ही ताली बजानी चाहिए।

ताल एकताल – एक पट अर्थात मूल लय

मात्रा	१ २	३ ४	५ ६	७ ८	९ १०	११ १२
बोल	धिं धिं	धागे त्रक	तू ना	कत त्तीं	धागे त्रक	धि ना
चिह्न	×	०	२	०	३	४

ताल एकताल – दो पट अर्थात एक मात्रा में दो मात्रा लेना

मात्रा	१ २	३ ४	५ ६	७ ८	९ १०	११ १२
बोल	धिंधिं धागेत्रक	तूना कत्तीं	धागेत्रक धिना	धिंधिं धागेत्रक	तूना कत्तीं	धागेत्रक धिना
चिह्न	×	०	२	०	३	४

करके देखो :

- एक विद्यार्थी तबले पर बोल बजाए और अन्य विद्यार्थी ताल पहचानें।

एक पट							
धा	गे	न	ती	न	क	धि	न
दो पट							
धा गे	न ती	न क	धि न	धा गे	न ती	न क	धि न

- ताल की एक पट तथा दो पट ताली के आधार पर करके दिखाएँ और अभ्यास करवाएँ।
- पिछले वर्ष के पाठ्यक्रम में सीखे गए ताल बजाकर विद्यार्थियों से उनकी पहचान करवाएँ।
- प्रथम पृष्ठ पर दिए गए क्यू आर कोड में उपलब्ध ताल तथा उसकी दो पट सुनवाएँ और विद्यार्थियों से उसके अनुसार क्रिया करवाएँ।

CG –2
C– 2.2
LO–06AE41

स्वाध्याय

अ] उचित विकल्प चुनो।

१) संगीत में लय क्या होती है?

सा) केवल ताली बजाना   रे) गीत के शब्द और संगीत

ग) ऊँची आवाज में गाना   म) दो मात्राओं के बीच समान अंतर

उत्तर :

२) शास्त्रीय संगीत में लय के मुख्य कितने प्रकार माने जाते हैं?

सा) ४   रे) ३   ग) ५   म) २

उत्तर :

३) दो पट का क्या अर्थ है?

सा) नए बोल बनाना   रे) एक मात्रा में दो मात्राएँ कहना

ग) बोलों को तेज गति से कहना   म) एक-एक मात्रा कहना

उत्तर :

४) एकताल में कितनी खाली (काल) होती हैं?

सा) ६   रे) ३   ग) ४   म) २

उत्तर :

५) 'ऐरणीच्या देवा तुला' यह गीत किस प्रकार की लय में आता है?

सा) मध्य लय   रे) द्रुत लय   ग) विलंबित लय   म) धीमी लय

उत्तर :

६) पाठ में दिया गया कौन-सा गीत द्रुत लय के प्रकार में आता है?

सा) पोवाडा   रे) भावगीत   ग) देशभक्ति गीत   म) इनमें से सभी

उत्तर :

ब] एकताल की एक पट तथा दो पट अपनी कॉपी में लिखो।

१२ समूह गीत और युगल गीत

समूह गीत : समूह गीत का अर्थ है अनेक विद्‌यार्थियों द्‌वारा एक साथ, एक ही स्वर, ताल और भावना में गाया गया गीत। इससे एकता की भावना, सहयोग की वृत्ति तथा अनुशासन का विकास होता है। समूह गीत केवल एक संगीत प्रकार ही नहीं बल्कि व्यक्तित्व विकास के लिए भी उपयोगी है।

समूह गीत सुनेंगे और गाएँगे

हा देश माझा

हा देश माझा याचे भान,
जरासे राहू द्‌या रे
जरासे राहू द्‌या॥धृ॥

हा उंच हिमालय माझा,
हा विशाल सागर माझा
ह्या गंगा–यमुना, शेती धरती,
बाग–बगिचा माझा
अभिलाषा याची धरीता।
कुणी नजर वाकडी करता
त्या मरण द्‌यावया,
स्फुरण आपुले बाहु पावू द्‌या रे॥१॥

हे हात उत्सुकलेले,
दगडाच्या वर्षावाला
रोखा ते लावा कार्याला,
या देशाच्या प्रगतीला
हे बंद करा उत्पात,
थांबवा आपुला घात
सामर्थ्य न जावो व्यर्थ काहीसा
अर्थ ही येऊ द्‌या रे॥२॥

जरी अनेक अपुले धर्म, जरी
अनेक अपुल्या जाती
परि अभंग असू द्‌या,
सदैव आपुली माणुसकीची नाती
द्‌या सर्व दूर ललकारी,
फुकारे एक तुतारी
संदेह रोष जे द्‌वेष मनातील
वाहून जाऊ द्‌या रे॥३॥

गीत : सेनापती बापट
(पांडुरंग महादेव बापट)

(भावार्थ)

यह देश मेरा है, यह देश मेरा है, इसका ध्यान हमें हमेशा रहना चाहिए।
यह देश हमारा है, इस भावना को हमेशा अपने मन में बनाए रखें। (ध्रुवपद)
१) यह ऊँचा हिमालय मेरा है, यह विशाल समुद्र मेरा है। यह गंगा–यमुना, खेत–खलिहान और बाग–बगीचे सब मेरे देश की संपत्ति हैं।
हमें इस देश की उन्नति और रक्षा की इच्छा रखनी चाहिए। यदि कोई इस देश पर बुरी नजर डाले, तो उसका विरोध करने का साहस हमारे अंदर जागना चाहिए।
२) ये हमारे उत्साह से भरे हाथ हैं, इन्हें पत्थर फेंकने जैसे गलत कामों में नहीं, बल्कि अच्छे कार्यों में लगाएँ।
इन हाथों को देश की प्रगति के लिए काम करने दें।
उपद्रव और आपसी नुकसान को बंद करें।
अपनी शक्ति को व्यर्थ न जाने दें, उसका सही उपयोग करें।
३) भले ही हमारे अलग–अलग धर्म हों, अलग–अलग जातियाँ हों,
फिर भी हमारी एकता और मानवता के रिश्ते हमेशा मजबूत बने रहें।
सभी दूरियाँ, संदेह, क्रोध और द्‌वेष मन से निकाल दें।
एकता और भाईचारे की आवाज पूरे देश में गूँजने दें।)

समूह गीत के अन्य कुछ उदाहरण

१) मंगल देशा पवित्र देशा
२) माणुसकीच्या शत्रू संगे

इन गीतों को सुनकर गाने का प्रयास करो।

- समूह गीत का गायन ताल और सुर में करवाएँ।
- पारंपरिक तथा आधुनिक समूह गीतों के बारे में जानकारी दें।
- प्रथम पृष्ठ पर दिए गए क्यू आर कोड को स्कैन करके समूह गीत सुनवाएँ और गवाएँ।

CG –1
C– 1.2
LO–06AE38

युगल गीत (द्वंद्व गीत) (Duet Song) : 'युगल' का अर्थ है जोड़ी। जब दो कलाकार मिलकर किसी गीत को प्रस्तुत करते हैं, तो उसे युगल गीत कहा जाता है।

यह गीत संवाद के रूप में या एक-दूसरे के प्रति भावनाएँ व्यक्त करने के लिए गाया जाता है।

युगल गीत सुनेंगे और गाएँगे – काळ्या मातीत मातीत

स्त्री – काळ्या मातीत मातीत तिफन चालते,
तिफन चालते, तिफन चालते
पुरुष – ईज थयथय नाचते ढग ढोल वाजवितो,
ढोल वाजवितो, ढग ढोल वाजवितो
स्त्री – सदाशिव हाकारतो नंदी बैलाच्या जोडीला
संग पारवती चाले ओटी बांधून पोटाला
पुरुष – सरीवर सरी येती माती न्हाती धुती होते
कस्तुरीच्या सुवासानं भूल जिवाला पडते
स्त्री – भूल जिवाला पडते वाट राघूची पाहते
पुरुष – राघू तिफन हाकतो मैना वाटुली पाहते
पुरुष – सर्जा रं माझ्या ढवळ्या रं माझ्या
पवळ्या रं माझ्या आहा!
स्त्री – झोळी झाडाला टांगून राबराबते माऊली
तिथं झोळीतल्या जिवा व्हते पारखी साऊली
पुरुष – अभिषेकात घामाच्या आसं देवाचं पूजन
पिकं हालती डोलती जनू करती भजन
स्त्री – गव्हा जोंधळ्यात तवा सोनं चांदी लकाकते
पुरुष – जशी चांदी लकाकते कपाशी फुलते॥
पुरुष – चालं ऊनपावसाचा पाठशिवणीचा खेळ
लोनी पायाला वाटती मऊ भिजली ढेकळं
स्त्री – काळ्या ढेकळात डोळा हिरवं सपान पाहतो
डोळा सपान पाहतो काटा पायांत रुततो
पुरुष – काटा पायांत रुतता लाल रगात सांडतं
स्त्री – लाल रगात सांडतं हिरवं सपान फुलतं

गीत : विठ्ठल वाघ

(युगल गीत "काळ्या मातीत मातीत" का सरल हिंदी अर्थ :)

स्त्री : काली मिट्टी वाले खेतों में हल/तिफन चल रहा है, खेतों में खेती का काम शुरू है।

पुरुष : बिजली चमकती है, बादल ढोल की तरह गरजते हैं और बारिश का वातावरण बनता है।

स्त्री : सदाशिव किसान बैलों की जोड़ी को पुकारता है और उसके साथ पार्वती भी खेत के काम में साथ देती है।

पुरुष : बार-बार बारिश होती है, मिट्टी नहाकर साफ और ताजी हो जाती है। गीली मिट्टी से कस्तूरी जैसी सौंधी सुगंध आती है और मन उस खुशबू में खो जाता है।

स्त्री : उस सुगंध में मन मोहित हो जाता है और वह राघू (किसान) की राह देखती है।

पुरुष : राघू तिफन चलाता है और मैना (उसकी साथी) उसे देखती रहती है। वह अपने बैलों को प्यार से पुकारता है।

स्त्री : माँ अपने काम में इतना मेहनत करती है कि पेड़ पर अपनी झोली टाँग देती है। उस झोली में रखा बच्चा माँ के स्नेह की छाया से दूर रह जाता है।

पुरुष : पसीने की बूंदों से किसान जैसे भगवान की पूजा करता है। खेतों में लहलहाती फसलें ऐसे हिलती हैं मानो जैसे भजन कर रही हों।

स्त्री : गेहूँ और ज्वार की बालियों में सोने-चाँदी जैसी चमक दिखाई देती है।

पुरुष : जैसे चाँदी चमकती है, वैसे ही कपास के सफेद फूल खिलते हैं।

पुरुष : धूप और बारिश का जीवन में लगातार खेल चलता रहता है। कीचड़ और मिट्टी से भरे खेतों में भी किसान को मेहनत का सुख मिलता है।

स्त्री : काली मिट्टी में किसान की आँखें हरे सपनों (अच्छी फसल और सुखी जीवन) को देखती हैं। लेकिन रास्ते के काँटे भी पैरों में चुभते हैं।

पुरुष : काँटा चुभने पर खून बहता है।

स्त्री : फिर भी उसी संघर्ष और मेहनत से हरे सपने साकार होकर खिल उठते हैं।

(भावार्थ : यह गीत किसान के जीवन, उसकी मेहनत, प्रकृति से उसका संबंध, खेती की खुशी और कठिनाइयों के बीच आशा और सपनों को दर्शाता है। किसान अपने पसीने से धरती को सजाता है और उसी से जीवन की खुशहाली आ जाती है।)

युगल गीतों के प्रकार

अ) स्त्री-पुरुष युगल गीत **ब) दो पुरुष युगल गीत** **क) दो स्त्री युगल गीत**

स्त्री-पुरुष युगल गीत : यह सबसे सामान्य प्रकार का युगल गीत होता है और प्रायः प्रेम गीत (Romantic Songs) की श्रेणी में आता है।

दो पुरुष युगल गीत : ये गीत मित्रता या संघर्ष पर आधारित होते हैं। उदाहरण- शोले फिल्म का "ये दोस्ती"।

दो स्त्री युगल गीत : ये गीत सहेलियों के संवाद या नृत्य के लिए गाए जाते हैं। उदाहरण - "पिंगा" या "डोला रे डोला"।

युगल गीत की सांगीतिक विशेषताएँ

संवाद : गीत की पंक्तियाँ इस प्रकार रची जाती हैं कि मानो दो व्यक्ति आपस में बातचीत कर रहे हों।

स्वर संगति (हार्मनी) **:** दोनों गायकों की आवाजें एक-दूसरे के पूरक होनी चाहिए जिससे गीत मधुर और सुरीला लगे।

भाव : इन गीतों के माध्यम से नायक-नायिका के प्रेम, विरह या आनंद के भाव तथा दो मित्रों के बीच की मित्रता व्यक्त की जाती है।

युगल गीतों के कुछ अन्य उदाहरण।

१) मन उधान वाऱ्याचे... २) तू मेरा दिल तू मेरी जान...

इन युगल गीतों को सुनो और उनका अभ्यास करो।

स्वाध्याय

१) सही या गलत लिखो।

अ) समूह गीत का अर्थ है विद्यार्थियों द्वारा एक साथ समूह में गाया गया गीत।

ब) समुह गीत स्फुर्तीदायक/ प्रेरणादायक नहीं होता।

क) समूह गीत में केवल एक विद्यार्थी गाता है।

ड) 'हा देश माझा' गीत के गीतकार श्री सेनापति बापट हैं।

२) युगल गीतों के प्रकार लिखो।

३) आकृतिबंध पूरा करो।

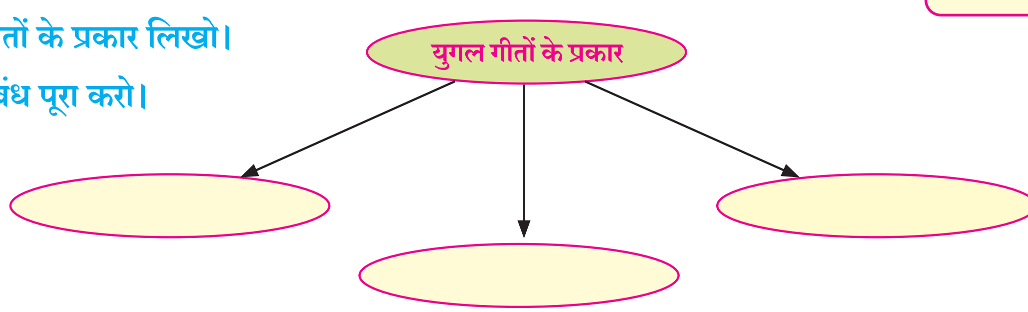

- विद्यार्थियों से युगल गीत का ताल और सुर में गायन करवाएँ।
- युगल गीत तथा समूह गीत के उदाहरण बताने के लिए कहें।
- पुस्तक के प्रथम पृष्ठ पर दिए गए क्यू आर कोड को स्कैन करके विद्यार्थियों को गीत सुनवाएँ।

CG - 2
C- 2.1
LO-06AE39

१३ आओ, सीखें शास्त्रीय संगीत

अभिजात शास्त्रीय संगीत सीखने से पहले उसमें मौजूद कुछ महत्त्वपूर्ण बातों का परिचय प्राप्त करेंगे ।

संगीत में स्वरों के पूरे नाम :

१) सा-षड्ज
२) रे-रिषभ
३) ग-गांधार
४) म-मध्यम
५) प-पंचम
६) ध-धैवत
७) नि-निषाद

करके देखो :

भारतीय शास्त्रीय संगीत में स्वर को आत्मा माना जाता है। मुख्य रूप से सप्तक के बारह सुरों के स्थान को समझना चाहिए। इसके लिए मूल प्राकृतिक स्थान पर स्थित सात शुद्ध स्वर, चार कोमल स्वर और एक तीव्र स्वर, इस प्रकार कुल बारह स्वर स्थानों की पहचान हारमोनियम के माध्यम से करेंगे। साथ ही हार्मोनियम पर बजाए गए शुद्ध, कोमल और तीव्र स्वरों के अंतर को पहचानने का प्रयास करेंगे।

शुद्ध स्वर : सा रे ग म प ध नि

कोमल स्वर : रे_ ग_ ध_ नि_

तीव्र स्वर : ॑म

संगीत के पारिभाषिक शब्दों की परिभाषाएँ :

१) **आरोह :** ऊपर की ओर चढ़ते क्रम में जाने वाले स्वर समूह को 'आरोह' कहते हैं।
उदाहरण : सा रे ग म प ध नि सां

२) **अवरोह :** नीचे उतरते क्रम में आने वाले स्वर समूह को 'अवरोह' कहते हैं।
उदाहरण : सां नि ध प म ग रे सा

- स्वरों के पूरे नाम पूछें।
- हार्मोनियम पर स्वर बजाकर दिखाएँ और विद्यार्थियों को स्वरों के अंतर को पहचानने का अवसर दें।
- प्रथम पृष्ठ पर दिए गए क्यू आर कोड को स्कैन करके विद्यार्थियों को गीत सुनाएँ।

CG – 2
C– 2.2
LO-06AE40/42

३) **अलंकार :** नियमबद्ध आरोह-अवरोह के समूह को 'अलंकार' कहते हैं।

उदाहरण :आरोह : सारेग रेगम गमप मपध पधनि धनिसां

अवरोह : सांनिध निधप धपम पमग मगरे गरेसा

४) **राग :** मनोरंजन करने वाले विशिष्ट स्वरों की नियमबद्ध रचना को 'राग' कहते हैं।

५) **वादी स्वर :** राग में बार-बार आने वाला मुख्य स्वर 'वादी स्वर' कहलाता है।

६) **संवादी स्वर :** राग के वादी स्वर के बाद आने वाला दूसरा मुख्य स्वर 'संवादी स्वर' कहलाता है।

७) **वर्ज्य स्वर :** राग में जिन स्वरों का उपयोग नहीं किया जाता, उन्हें वर्ज्य स्वर कहते हैं।

८) **पकड :** राग को पहचान बताने वाले स्वर समूह को 'पकड़' कहते हैं।

९) **सम :** ताल की पहली महत्त्वपूर्ण मात्रा को 'सम' कहते हैं।

१०) **खाली (काल) :** हाथ पर ताली की सहायता से ठेका देते समय बिना ताली दिए हाथ को अलग करके दिखाई जाने वाली मात्रा को 'खाली' कहते हैं।

११) **ताली :** सम और खाली के अलावा बचे हुए प्रत्येक खंड की पहली मात्रा को 'ताली' कहते हैं।

१२) **राग जाती :** राग के आरोह-अवरोह में स्वरों की संख्या के आधार पर राग की जाति निश्चित की जाती है। ५ स्वर-ओडव, ६ स्वर-षाडव, ७ स्वर-संपूर्ण जाती.

राग – भूप (शास्त्रीय जानकारी)

राग भूप, जिसे 'भूपाली' भी कहा जाता है, भारतीय शास्त्रीय संगीत का अत्यंत मधुर और शांत रस प्रधान राग है।

राग परिचय : यह राग 'कल्याण' थाट से उत्पन्न हुआ है।

स्वर विशेषताएँ : इस राग में सभी स्वर शुद्ध लगते हैं। इसमें 'म' (मध्यम) और 'नि' (निषाद) इन दो स्वरों का प्रयोग नहीं किया जाता, अर्थात ये वर्ज्य हैं।

जाति : आरोह और अवरोह दोनों में ५-५ स्वर लगते हैं, इसलिए इस राग की जाति 'ओडव-ओडव' है।

वादी स्वर : 'ग' (गंधार) **संवादी स्वर** : 'ध' (धैवत) है।

गायन समय : यह राग रात के पहले प्रहर में (सामान्य रूप से शाम ६ से ९ बजे के बीच) गाया जाता है।

भारतीय शास्त्रीय संगीत में प्रत्येक राग को उसके निश्चित समय पर ही गाया या बजाया जाता है।

आरोह : सा रे ग प ध सां
अवरोह : सां ध प ग रे सा
पकड : ग रे सा, ध़ सा रे ग, प ग, ध प ग, रे सा.

लक्षण गीत : जिस गीत में राग का संपूर्ण वर्णन काव्य रूप में प्रस्तुत किया जाता है, उसे 'लक्षण गीत' कहते हैं।

राग की जानकारी का वर्णन करने वाले गीत को लक्षण गीत कहते हैं। इस वर्ष हम भूप राग के लक्षण गीत का अध्ययन करेंगे।

लक्षण गीत– ताल तिनताल

स्थायी : गुणी जन राग भूपाली सुनावत,

सब सूर शुद्ध म नी न लगावत।

अंतरा : ग ध वादी संवादी बनावत,

प्रथम प्रहर निशी गान सुनावत,

ओडव रचना मन को लुभावत॥

मंद्र सप्तक:
स्थान: मध्य सप्तक की पट्टी के नीचे (नीचे वाली पट्टी) होता है।
आवाज: इसमें गाए जाने वाले स्वरों की आवाज बहुत गंभीर होती है।
चिह्न : इस सप्तक के स्वरों के नीचे बिंदी (.) दी जाती है।
(उदाहरण : नि, ध, प)
तार सप्तक:
स्थान: यह मध्य सप्तक की पट्टी में होता है।
आवाज: इसमें गाए जाने वाले स्वरों की आवाज पतली होती है।
चिह्न : इस सप्तक के स्वरों के ऊपर बिंदी (-̇) दी जाती है।
(उदाहरण : सां, रें, गं)

लक्षण गीत का नोटेशन :

स्थायी **ताल – त्रिताल**

ग ध प ग	रे सा – रे	सा ध़ सा रे	ग रे ग ग
गु णी ज न	रा ऽ ग भू	पा ऽ ली सू	ना ऽ व त
०	३	×	२
ग ग प प	ध ध ध प	ध सां ध प	ग रे सा सा
स ब सु र	शु ऽ ध्द म	नी ऽ न ल	गा ऽ व त
०	३	×	२

अंतरा

ग ध प –	ध ग प ध	सां – सां सां	ध ध – सां सां
ग ध वा ऽ	दी ऽ सं ऽ	वा ऽ दी ब	ना ऽ व त
०	३	×	२
ध ध सां सां	रें रें रें रें	सां रें गं रें	सां ध प प
प्र थ म प्र	ह र नि शी	गा ऽ न सु	ना ऽ व त
०	३	×	२
ध गं रें रें	सां सां ध प	ध सां ध प	ग रे सा सा
ओ ऽ ड व	र च ना ऽ	म न को लु	भा ऽ व त
०	३	×	२

- लक्षण गीत का ताल और सुर में अभ्यास करवाएँ।
- प्रथम पृष्ठ पर दिए गए क्यू. आर. कोड को स्कैन करके लक्षण गीत सुनाएँ और विद्यार्थियों से गायन करवाएँ।

CG – 3
C– 3.2
LO–06AE46

बंदिश अर्थात शास्त्रीय संगीत में ताल और सूर में बाँधी गई काव्य रचना।

बंदिश – ताल तीनताल

स्थायी : सुरासूर भजत मुनीवर शंकर
समदर्शी प्रभू हर गिरीजावर।
अंतरा : जटाजूट शिर गौंग बिराजे
कर त्रिशूल अहि भूखन साजे
उग्र वेष अत हृदय दयाधर॥

राग – भूप बंदिश (गीत/गाना)

स्थायी — **ताल – तिनताल**

प ग – प	ग रे सा रे	सा ध़ सा रे	ग रे ग ग
सु रा ऽ सू	र भ ज त	मु नी व र	शं ऽ क र
०	३	×	२
ग ग प ध	सां – ध प	ध सां ध प	ग रे सा रे
स म द र	शी ऽ प्र भू	ह र गि रि	जा ऽ व र
०	३	×	२

अंतरा

प ग – प	– प सां ध	सां – सां सां	सां रें सां –
ज टा ऽ जू	ऽ ट शि र	गौं ऽ ग बि	रा ऽ जे ऽ
०	३	×	२
ध ध ध सां –	सां रें रें	सां रें गं रें	सां रें सां ध
क र त्रि शू	ऽ ल अ ही	भू ऽ ख न	सा ऽ जे ऽ
०	३	×	२
प – ग प	– प ध प	ध सां ध प	ग रे सा रे
उ ऽ ग्र वे ऽ	ष अ त	ह द य द	या ऽ ध र
०	३	×	२

- बंदिश का ताल और सुर में गायन करवाएँ।
- प्रथम पृष्ठ पर दिए गए क्यू. आर. कोड को स्कैन करके बंदिश गीत सुनाएँ और विद्यार्थियों से गायन करवाएँ।

CG – 3
C– 3.2
LO–06AE46

भारतीय फिल्म संगीत और भाव संगीत में राग भूप (भूपाली) अत्यंत लोकप्रिय है। इस राग के कुछ प्रसिद्ध गीत निम्नलिखित हैं :

मराठी गीत (गाने) :

१. घनश्याम सुंदरा श्रीधरा (फिल्म : अमर भूपाली) – पं. हृदयनाथ मंगेशकर और लता मंगेशकर।

२. ऐरणीच्या देवा तुला (फिल्म : साधी माणसं) – लता मंगेशकर।

३. शुक्रतारा मंद वारा – अरुण दाते और सुधा मल्होत्रा।

४. माझे माहेर पंढरी – पं. भीमसेन जोशी।

५. देहाची तिजोरी (फिल्म : आम्ही जातो आमुच्या गावा) – सुधीर फडके।

हिंदी गीत (गाने) :

१. ज्योति कलश छलके (फिल्म : भाभी की चूड़ियाँ) – लता मंगेशकर।

२. पंख होते तो उड़ आती रे (फिल्म : सेहरा) – लता मंगेशकर।

वाद्यों के प्रकार :

संगीत शास्त्र में गायन के साथ-साथ वादन कला का भी महत्त्व है। वाद्यों का वर्गीकरण उनके आकार, प्रकार, आवाज, गुणधर्म और शैली के अनुसार किया जाता है। वाद्यों के कुल चार प्रकार हैं, उनका वर्गीकरण निम्न प्रकार है :

१) **तंतु वाद्य :** इस प्रकार के वाद्यों में तारों को छेड़ने, आघात करने या तारों पर घर्षण के कारण ध्वनि उत्पन्न होती है।

उदाहरण : सितार, तानपुरा, वीणा, सारंगी, गिटार, एकतारी, वायलिन, संतूर, सरोद, कोका आदि।

२) **सुषिर वाद्य :** ये वाद्य हवा की सहायता से बजाए जाते हैं। उदाहरण : बाँसुरी, शंख, पावा, तुतारी, शहनाई, सेक्सोफोन, ट्रंपेट, क्लैरिनेट आदि।

३) **अवनद्ध वाद्य :** चमड़े से मढ़े हुए और आघात करके बजाए जाने वाले वाद्य इस प्रकार में समाविष्ट होते हैं।

उदाहरण : तबला, पखावज, ढोल, ताशा, नगाड़ा, मृदंग, ड्रमसेट, कोंगो, बोंगो आदि।

४) **घनवाद्य :** धातु या लकड़ी से बने हुए और एक-दूसरे पर आघात करके बजाए जाने वाले वाद्य इस प्रकार में समाविष्ट होते हैं। उदाहरण : झाँझ, ताल, करताल, घंटा, टिपरी, ट्रायंगल, खँजिरी, झांजरी आदि।

वाद्यों की देखभाल :

कलाकार के लिए जितना संगीत का अभ्यास (साधना) महत्त्वपूर्ण है, उतना ही वाद्यों की देखभाल करना भी महत्त्वपूर्ण है। आपके पास मौजूद सुषिर वाद्यों की उचित देखभाल के लिए निम्नलिखित बातों का ध्यान रखना चाहिए।

सुषिर वाद्य जैसे - बाँसुरी, शहनाई, क्लैरिनेट, बिगुल, तुतारी आदि बहुत नाजुक होते हैं। उनकी सही देखभाल करने से उनका मधुर स्वर और आयु लंबे समय तक बनी रहती है।

१. दैनिक सफाई और देखभाल :

- वाद्य बजाने के बाद उसके अंदर के भाग को मुलायम और सूखे कपड़े (Cleaning Cloth) से साफ करना चाहिए।
- शहनाई या इसी प्रकार के वाद्यों में उपयोग की जाने वाली 'दो पत्तियों वाली जीभ' (Reed) को बजाने के बाद अलग निकालकर सुखाना चाहिए।

२. सुरक्षित स्थान और वातावरण :

- वाद्यों को खिड़की में या सीधे सूर्यप्रकाश में नहीं रखना चाहिए, अन्यथा लकड़ी या बाँस में दरारें आ सकती हैं। धातु के वाद्यों में मौसम के अनुसार परिवर्तन हो सकते हैं।
- वाद्यों को अधिक गर्म या नम जगह पर रखने से बचना चाहिए।
- वाद्य का उपयोग करने के बाद उसे बॉक्स में या उचित आवरण में सुरक्षित स्थान पर रखना चाहिए।

३. रासायनिक पदार्थों का उपयोग न करें :

वाद्यों में चमक लाने के लिए घरेलू क्लीनर या रसायनों का उपयोग नहीं करना चाहिए, इससे वाद्य को नुकसान हो सकता है।

४. व्यक्तिगत उपयोग :

वाद्य को संभव हो तो दूसरों को बजाने के लिए नहीं देना चाहिए। वाद्य बजाने से पहले हाथ साफ धो लेने चाहिए जिससे वाद्य पर पसीने या तेल के दाग नहीं पड़ते।

संगीत में रंगमंच शिष्टाचार और रीति-रिवाज :

भारतीय संगीत में अनेक रीति-रिवाज, परंपराएँ और शिष्टाचार का पालन किया जाता है। ये गुरु-शिष्य परंपरा का हिस्सा हैं। इनमें संगीत साधना (रियाज), गुरु वंदना, राग के समय का पालन और प्रस्तुति की विशेष पद्धति आदि तत्व समाविष्ट होते हैं। इनमें से कुछ रीति-रिवाज निम्नलिखित हैं :

१) **गुरु शिष्य परंपरा :** संगीत क्षेत्र में गुरु को सर्वोच्च स्थान दिया जाता है। गुरु के सानिध्य में रहकर ज्ञान प्राप्त किया जाता है।

२) **संगीत साधना :** किसी तत्व का बार-बार अभ्यास करके स्वरों और आवाज पर नियंत्रण प्राप्त करना ही "संगीत साधना" कहलाता है। संगीत में साधना का अर्थ है लंबे समय तक नियमित अभ्यास करना। यह अभ्यास प्रायः रात में देर तक या सुबह जल्दी उठकर किया जाता है।

- संगीत के रीति-रिवाज और रंगमंच शिष्टाचार की जानकारी दें।
- वाद्यों के प्रकारों के बारे में उदाहरण सहित जानकारी दें।

CG - 3
C- 3.1
LO-06AE43/44

३) **गुरुओं को नमन** : गायन या वादन से पहले गुरुजनों को प्रणाम करना तथा गुरु और वाद्यों के प्रति सम्मान व्यक्त करना।

४) **प्रस्तुति में अनुशासन** : गायन या वादन से पहले तबला, तानपुरा आदि आवश्यक वाद्यों को सही स्वर में मिलाना।

५) **राग और समय** : भारतीय संगीत में विशेष रागों को विशेष समय पर गाने की परंपरा है। इसे शास्त्रीय संगीत का आधार माना जाता है।

ये परंपराएँ संगीत की गंभीरता और पवित्रता को बनाए रखती हैं। यहाँ अनुशासन, सम्मान और अभ्यास का बहुत महत्त्व होता है। इससे आत्मविश्वास और कलात्मक कौशल का विकास होता है।

रंगमंच व्यवस्था (प्रबंधन

रंगमंच व्यवस्था (प्रबंधन) के लिए आवश्यक घटकों की जानकारी :

संगीत में रंगमंच व्यवस्था (प्रबंधन) एक अत्यंत महत्त्वपूर्ण कला है। इससे कार्यक्रम की प्रस्तुति सफल होती है। संगीत में रंगमंच व्यवस्था (प्रबंधन) की प्रमुख विशेषताएँ और जिम्मेदारियाँ निम्नलिखित हैं।

संगीत में रंगमंच व्यवस्था (प्रबंधन) के सामान्यतः दो प्रकार होते हैं–

अ) **संगीत सभा (महफिल) का रंगमंच व्यवस्था (प्रबंधन) :** इसमें यह निर्धारित किया जाता है कि कार्यक्रम गायन का है या वादन का। वाद्यों को कैसे और कहाँ रखा जाए, बैठने की व्यवस्था कैसी हो, आवश्यक सामग्री लाने और ले जाने की व्यवस्था कैसे की जाए आदि का नियोजन करना पड़ता है। साथ ही कलाकारों का समय, उनकी बैठने की व्यवस्था तथा उचित ध्वनि–विस्तारक (साउंड सिस्टम) की व्यवस्था भी करनी होती है।

आ) **संगीत नाटक :** इसमें उपरोक्त नियमों के साथ अभिनय और संगीत का समन्वय भी होता है। इसलिए नाटक की पटकथा के अनुसार प्रवेश, निकास (निर्गम) तथा संगीत के समय का पालन करना महत्त्वपूर्ण होता है।

संगीत में रंगमंच व्यवस्था (प्रबंधन) की प्रमुख विशेषताएँ और जिम्मेदारियाँ :

१) **समन्वयक :** रंगमंच प्रबंधक निर्देशक, कलाकार, संगीतकार और तकनीकी कर्मचारियों के बीच मुख्य कड़ी होता है। सभी के साथ समन्वय स्थापित कर कार्यक्रम को सफलतापूर्वक संपन्न कराने की जिम्मेदारी उसी की होती है।

२) **तकनीकी प्रबंधन :** कार्यक्रम के लिए लाइट, साउंड सिस्टम, माइक्रोफोन आदि की उचित व्यवस्था करना।

३) **रंगमंच सज्जा एवं व्यवस्था :** गायकों और वादकों की बैठने की व्यवस्था निर्धारित करना तथा आवश्यकता के अनुसार वाद्ययंत्र, माइक्रोफोन और अन्य सामग्री की उचित व्यवस्था करना।

४) **समय–सारिणी :** कार्यक्रम का समय निर्धारित करना। कार्यक्रम से पहले मंच पर अभ्यास तथा साउंड चेक करना।

५) **सुरक्षा और स्वास्थ्य** : कलाकारों, तकनीशियनों तथा दर्शकों की सुरक्षा का ध्यान रखना।

६) **संवाद :** प्रकाश व्यवस्था, ध्वनि संयोजन, वेशभूषा प्रबंधक, मुख्य कलाकार, गायक तथा वादकों के बीच समन्वय स्थापित करके कार्यक्रम को सफलतापूर्वक संपन्न करना।

- रंगमंच व्यवस्था (प्रबंधन) के लिए आवश्यक घटकों की जानकारी देना।

CG – 3
C– 3.1/3.2
LO–06AE43/45

संक्षेप में संगीत में मंच प्रबंधन कलाकारों को अपने कार्यक्रम की प्रस्तुति पर ध्यान केंद्रित करने में सहायता करता है तथा पर्दे के पीछे की सभी तकनीकी व्यवस्थाओं को संभालकर दर्शकों को एक उत्कृष्ट अनुभव प्रदान करता है।

कलाकारों की जानकारी

भारतीय संगीत को विश्व में सम्मानजनक स्थान दिलाने वाले अनेक प्रसिद्ध कलाकार हुए हैं। उनमें से कुछ कलाकारों की जानकारी इस प्रकार है।

• पं. विष्णु नारायण भातखंडे (शास्त्रीय संगीत गायक)

नाव : विष्णु नारायण भातखंडे उर्फ विष्णु शर्मा

जन्म : १० अगस्त १८६० को मुंबई में हुआ।

गुरु : उस्ताद अली हुसैन से ख्याल गायन तथा रावजीबुवा बेलबागकर से ध्रुपद गायन की शिक्षा प्राप्त की।

गायन शैली : उत्तर भारतीय (हिंदुस्तानी) शास्त्रीय संगीत।

प्रसिद्ध ग्रंथ : (१) 'लक्ष्यसंगीत' नामक संस्कृत ग्रंथ की रचना की।
(२) 'हिंदुस्तानी संगीत पद्धति' नाम से चार ग्रंथ लिखे।
(३) 'क्रमिक पुस्तक मालिका' नामक ग्रंथ छह भागों में लिखा।

संगीत संस्थाएँ : (१) 'मैरिस कॉलेज ऑफ म्यूजिक' नामक शिक्षण संस्था की स्थापना की।
(२) बड़ौदा में म्यूजिक कॉलेज की स्थापना की।

पंडित विष्णु नारायण भातखंडे द्वारा निर्मित स्वर-लिपि आज भी प्रचलित है।

शिष्यवर्ग : पं. रातंजनकर, राजाभैया पूँछवाले।

मृत्यु : १९ सितंबर १९३६

• एम.एस. सुब्बुलक्ष्मी

नाव : मदुरै षण्मुखवडिवु सुब्बुलक्ष्मी

जन्म : १६ सितंबर १९१६ - मदुरै , मद्रास

कार्य क्षेत्र : गायन, कर्नाटक संगीत

गुरु : माता अक्कम्माल तथा श्रीनिवास अयंगार, मुसिरी सुब्रह्मण्यम अय्यर से कर्नाटक संगीत की शिक्षा प्राप्त की तथा सिद्धेश्वरी देवी और पं. नारायणराव व्यास से उत्तर भारतीय (हिंदुस्तानी) संगीत की शिक्षा ग्रहण की।

गायन शैली : दक्षिण भारतीय शास्त्रीय संगीत (कर्नाटक शैली)

कार्यकाल : १० वर्ष की आयु में पहली कैसेट जारी की। १७ वर्ष की आयु में चेन्नई की 'म्यूजिक अकादमी' में

कार्यक्रम प्रस्तुत किया। 'मीरा' फिल्म में अभिनय किया। दक्षिण भारतीय संतों की रचनाओं के साथ-साथ संत मीराबाई, संत तुलसीदास, कबीर और संत तुकाराम की रचनाएँ, अभंग और दोहे भी गाए। इनके द्‌वारा गाए गए विष्णुसहस्रनाम, भज गोविंदम् तथा मधुराष्टकम् अत्यंत लोकप्रिय हैं।

सम्मान एवं पुरस्कार :

(१) पद्‌मभूषण (१९५४) (२) संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार (१९५६)
(३) संगीत कलानिधी पुरस्कार (१९६८) (४) रॅमन मॅगसेसे पुरस्कार (१९७४)
(५) पद्‌मविभूषण (१९७५) (६) संगीत कलाशिखरमणी पुरस्कार (१९७५)
(७) कालिदास सन्मान (१९८८) (८) भारतरत्न (१९९८)

मृत्यु : ११ दिसंबर २००४ चेन्नई, तामिळनाडू

- **उस्ताद जाकिर हुसैन**

नाव : उस्ताद जाकिर हुसेन अल्लारखाँ कुरैशी

जन्म : ९ मार्च १९५१

गुरु : उस्ताद अल्लारखाँ

वादनशैली : पंजाब घराने की प्रभावशाली और दमदार वादन शैली। शास्त्रीय संगीत, जैज और फ्यूजन संगीत में विशेष योगदान।

प्रसिद्‌ध अल्बम : १९७३ में 'लिव्हिंग इन द मटेरियल वर्ल्ड'

पुरस्कार : (१) पद्‌मश्री पुरस्कार (१९८८)
(२) सन १९९२ आणि २००९ मध्ये संगीतातील सर्वात प्रतिष्ठित पुरस्कार 'ग्रॅमी अवॉर्ड'
(३) पद्‌मभूषण पुरस्कार (२००२)

मृत्यु : १५ डिसेंबर २०२४ सॅन फ्रॅन्सिस्को (अमेरिका)

- **पं. हरिप्रसाद चौरसिया (वरिष्ठ बाँसुरी वादक)**

नाव : पंडित हरिप्रसाद चौरसिया

जन्म : १ जुलाई १९३८, इलाहाबाद, उत्तर प्रदेश

गुरु : पंडित राजाराम से हिंदुस्तानी गायन की शिक्षा पंडित भोलानाथ प्रसन्न से बाँसुरी वादन की शिक्षा प्राप्त की।

वादनशैली : सेनिया घराने की वादन शैली

पुस्तक : 'बासरीचा बादशहा' (बाँसुरी का बादशाह) पुस्तक प्रकाशित हुई।

पुरस्कार : (१) संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार (१९८४) (२) कोणार्क सम्मान (१९९२)
(३) पद्‌मभूषण (१९९२) (४) यशभारती सम्मान (१९९४)

(५) हाफिज अली खाँ सम्मान (२०००)　　　(६) दीनानाथ मंगेशकर पुरस्कार (२०००)

(७) पद्मविभूषण (२०००)

अल्बम : कॉल ऑफ द व्हॅली

शिष्य : संतोष संत, विवेक सोनार, राकेश चौरसिया

- **लता मंगेशकर**

नाव : लता दीनानाथ मंगेशकर

जन्म : २८ सितंबर १९२९, इंदौर। मूल गाँव मंगेशी, गोवा।

कार्यक्षेत्र : गायन

गुरु : मास्टर दीनानाथ मंगेशकर, अमान अली ख़ान भेंडीबाजारवाले, देवास के उस्ताद अमानत ख़ान, संस्कृत पंडित तुलसीदास शर्मा।

गायन शैली : सुगम संगीत.

कार्यकाल : पाँच वर्ष की आयु में संगीत नाटकों में बाल कलाकार की भूमिका निभाई। इसके बाद फ़िल्म जगत में पार्श्वगायन की शुरुआत की। भारत के विभिन्न प्रदेशों की भाषाओं का अध्ययन कर अनेक भाषाओं में गीत गाए। 'आनंदघन' उपनाम से फ़िल्मों का संगीत निर्देशन भी किया।

मानसम्मान :

(१) पद्मभूषण पुरस्कार (१९६९)

(२) दादासाहेब फाळके पुरस्कार (१९८९)

(३) इंदिरा गांधी पुरस्कार (१९९४)

(४) राजीव गांधी राष्ट्रीय सद्भावना पुरस्कार (१९९७)

(५) महाराष्ट्र भूषण पुरस्कार (१९९७)

(६) पद्मभूषण पुरस्कार (१९९९)

(७) भारतरत्न पुरस्कार (२००१)

(८) फिल्मफेयर पुरस्कार

(९) अनेक विश्व विद्यालयों द्वारा डी. लिट. की मानद उपाधि

(१०) पार्श्वगायन के क्षेत्र में उनके उत्कृष्ट योगदान के लिए उनका नाम गिनीज बुक में दर्ज किया गया।

(११) भारत की स्वर कोकिला के रूप में प्रसिद्ध।

मृत्यु : ०६ फरवरी २०२२, मुंबई।

- कलाकारों के जीवन-कार्य तथा उनकी गायन-वादन शैली का परिचय कराएँ।
- प्रथम पृष्ठ पर दिए गए क्यू आर कोड को स्कैन करके वीडियो दिखाएँ।

CG -4
C- 4.2
LO-06AE49/50

नि:शुल्क वितरण के लिए

स्वाध्याय

१) स्वरों के पूर्ण नाम लिखो।

उदाहरण : सा–षड्ज

१) ग – ....

२) प – ....

३) नि – ....

४) म – ....

५) ध – ....

६) रे – ....

२) आकृतिबंध पूर्ण करो।

राग – भूप

- वादी स्वर ....
- संवादी स्वर ....
- वर्ज्य स्वर ....

३) आकृतिबंध पूर्ण करो।

वाद्यों के प्रकार

- ....
- ....
- ....
- ....

- आकृतिबंध के अनुसार सांगीतिक घटकों का विश्लेषण करवाएँ।

CG –2
C– 2.2
LO–06AE42

१४ स्थानीय लोक संगीत का परिचय

भारत विविधताओं से सजा हुआ देश है। भारत में अनेक प्रदेश हैं। प्रत्येक प्रदेश की भाषा अलग-अलग है। प्रत्येक प्रदेश की रीति-रिवाज और परंपराएँ भी भिन्न हैं। लोक संगीत के माध्यम से उस प्रदेश के लोकजीवन, इतिहास और संस्कृति की पहचान होती है। इसलिए लोक संगीत को लोकजीवन और लोकसंस्कृति का दर्पण भी कहा जाता है।

लोक संगीत किसी भी समाज की संस्कृति, परंपराओं और भावनाओं का स्वाभाविक दर्शन कराने वाला एक महत्त्वपूर्ण माध्यम है। यह संगीत पीढ़ी-दर-पीढ़ी मौखिक परंपरा से संरक्षित किया जाता है और स्थानीय जनजीवन से गहराई से जुड़ा होता है।

लोक संगीत की विशेषताएँ :

१) **सामूहिकता :** लोक संगीत प्रायः समूह में गाया या प्रस्तुत किया जाता है। त्योहारों, कृषि कार्यों तथा सामाजिक समारोहों में इसकी सामूहिकता दिखाई देती है। उदाहरण : गोंधळ, किसान गीत, भलरी, भोंडला गीत, पोवाडा, भजन, भारूड आदि।

२) **मौखिक परंपरा :** यह संगीत किसी लिखित साहित्य के बिना केवल सुनकर और गाकर एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक पहुँचाया जाता है। उदाहरण : जाँत पर गाई जाने वाली ओवियाँ, नागपंचमी के गीत, धनगरी ओवियाँ, विवाह गीत, बहुरूपियों के गीत आदि।

३) **सरलता और गेयता :** लोक संगीत की रचना अत्यंत सरल होती है, जिससे सामान्य लोग इसे आसानी से सीख और गा सकते हैं। उदाहरण : आरती, श्लोक आदि।

४) **प्रादेशिक अस्मिता :** प्रत्येक प्रदेश की जलवायु, भाषा और व्यवसाय के अनुसार वहाँ का लोक संगीत भिन्न होता है। इससे उस क्षेत्र की बोली, कहावतें और शब्द-संपदा संरक्षित रहती हैं।

५) **पारंपरिक वाद्यों का उपयोग :** लोक संगीत में ढोलकी, मंजीरा, मृदंग, तुनतुना, घुँघरू, दिमड़ी, डफ, बाँसुरी, संबल, झाँझ, करताल, टिमकी, टिपरी तथा खँजरी जैसे स्थानीय वाद्यों का प्रमुख रूप से उपयोग किया जाता है।

स्थानीय लोक संगीत में लोकसंस्कृति :

१) **भक्तिप्रधान लोक संगीत :** इसमें भारूड, भजन, कीर्तन, जागरण-गोंधळ आदि प्रकार समाविष्ट होते हैं।

२) **मनोरंजन और शौर्य गाथाएँ :** इसमें महाराष्ट्र की लोकप्रिय लावणी तथा शाहिरों द्वारा डफ पर गाए जाने वाले वीरता-गीत और पोवाड़े समाविष्ट होते हैं।

३) **श्रमगीत और प्रकृति-गीत :** इसमें जाँत की ओवियाँ, भोंडला गीत, यल्लाह गीत, किसान गीत, भलरी आदि गीतों का समावेश होता है।

स्थानीय लोक संगीत में उपयोग किए जाने वाले वाद्य :

१) **ढोलकी :** मुख्यतः लावणी और पोवाडा जैसे गीत-प्रकारों की संगत के लिए ढोलकी बजाई जाती है। ढोलकी यह वाद्य क्षैतिज (आड़ा) रखकर दोनों हाथों से बजाया जाता है। इसे बनाने के लिए सामान्यतः लगभग दो फीट लंबे खोखले लकड़ी के तने का उपयोग किया जाता है। इसके दोनों सिरों पर चमड़ा मढ़ा होता है। बाईं ओर का भाग आकार में बड़ा तथा दाईं ओर का भाग छोटा होता है। छोटे भाग के चमड़े पर स्याही लगाई जाती है, जिससे मधुर और सुरीला नाद उत्पन्न होता है।

२) **मंजीरा :** यह वाद्‌य मुख्यतः भजन और कीर्तन में बजाया जाता है। मंजीरा पीतल अथवा काँसे जैसी धातुओं से बनाई जाती है। दोनों मंजीरों को आपस में हल्के से टकराने पर मधुर ध्वनि उत्पन्न होती है।

३) **तुनतुना :** यह वाद्‌य लावणी, पोवाड़ा, जागरण-गोंधळ आदि कार्यक्रमों में उपयोग किया जाता है। यह एक खोखले गोल लकड़ी के पात्र से बना होता है, जिसके निचले भाग पर चमड़ा मढ़ा होता है। इसमें एक बाँस की डंडी लगी होती है। इस वाद्‌य में केवल एक तार होती है, जो चमड़े के मध्य भाग से होकर डंडी के ऊपरी सिरे पर लगी खूंटी से बंधी होती है। तार को छेड़ने पर "तुन-तुन" जैसी विशेष ध्वनि उत्पन्न होती है, इसलिए इसे तुनतुना कहा जाता है।

४) **बाँसुरी :** इसे बंसी, मुरली या पावा भी कहा जाता है। बाँसुरी विशेष प्रकार के खोखले बाँस से बनाई जाती है। धातु की बाँसुरी भी बनाई जाती है। स्वर उत्पन्न करने के लिए बाँसुरी में निश्चित दूरी पर ६ से ८ छिद्र होते हैं। मुँह से हवा फूँककर तथा उँगलियों से छिद्रों को खोलने-बंद करने पर स्वर उत्पन्न होते हैं।

५) **दिमड़ी :** यह वाद्‌य लोक संगीत में भजन, भारूड, जागरण-गोंधळ, पोवाडा आदि लोकगीतों में उपयोग किया जाता है। इसके लिए सामान्यतः १५ सेंटीमीटर व्यास और ३ से ४ इंच चौड़ाई वाला गोल लकड़ी का घेरा प्रयोग किया जाता है। घेरे के एक ओर चमड़ा कसकर लगाया जाता है। दिमड़ी को बाएँ हाथ में पकड़कर दाएँ हाथ की उँगलियों से बजाया जाता है।

लोक संगीत के कलाकारों का परिचय : लोक कला को उच्चतम शिखर तक पहुँचाने वाले अनेक कलाकार हुए हैं। उनमें से एक प्रमुख कलाकार का परिचय निम्नलिखित है।

- **विठ्‌ठल बन्सी क्षीरसागर (तबला एवं ढोल वादक)**

जन्म : १ सितंबर १९४३ को सोलापुर में जन्म हुआ। उनके पिता शहनाई वादक थे, इसलिए उन्हें घर से ही संगीत की परंपरा और संस्कार प्राप्त हुए।

गुरु : सोलापुर के पंडित भीमराव कनकधर, हैदराबाद के उस्ताद शेख दाऊद खाँ तथा इंदौर के धूळजी खाँ से उन्हें मार्गदर्शन प्राप्त हुआ।

वादन शैली : लोक संगीत तथा शास्त्रीय संगीत।

सांगीतिक कार्य : भारत के अनेक प्रसिद्‌ध गायक और वादकों को संगत प्रदान की। लगभग १५० मराठी, हिंदी और कन्नड़ फिल्मों में तबला एवं ढोलकी की संगत की। वर्ष १९८४ से २००३ तक आकाशवाणी पुणे केंद्र में तबला वादक के रूप में कार्यरत रहे। उनकी 'तालयात्रा' यह तबला, ढोलकी, पखवाज, ढोलक वादन की कैसेट प्रसिद्‌ध हुई।

पुरस्कार : १) पं. भीमसेन जोशी स्वरभास्कर 'संगतकार' पुरस्कार

२) संगीतकार राम कदम जीवनगौरव पुरस्कार

मृत्यु : १७ जनवरी २०२४ को पुणे में निधन।

* शाहीर विठ्ठल उमप

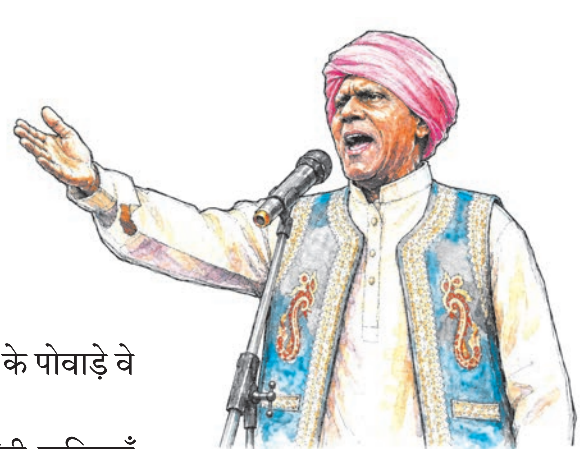

जन्म : १५ जुलाई १९३१, मुंबई में एक मिल कामगार के परिवार में हुआ।

गायन शैली : लोक संगीत

लोक कला में योगदान :

- संत एकनाथ के भारुड़ और छत्रपति शिवाजी महाराज के पोवाड़े वे अत्यंत तन्मयता और शक्ति के साथ प्रस्तुत करते थे।
- उन्होंने स्वयं अनेक सामाजिक और प्रबोधनपर शाहिरी कविताएँ लिखीं।
- महाराष्ट्र की लोक संस्कृति का दर्शन कराने वाले अनेक लोकगीत उन्होंने गाए।
- उनकी आवाज में "जांभूळ आख्यान" यह लोक कला प्रकार बहुत प्रसिद्‌ध हुआ।
- "माझी मैना गावावर राहिली, माझ्या जिवाची होतीया काहिली..." अण्णाभाऊ साठे का यह गीत उन्होंने अपनी आवाज से अमर कर दिया।

चित्रपट आणि रंगभूमि के कार्य :

- 'डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर', 'टिंग्या', 'विहीर' जैसे अनेक राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रसिद्‌ध फिल्मों में उन्होंने शानदार भूमिकाएँ निभाईं।
- 'श्यामची आई', 'आंधळं दळतं' जैसे नाटकों में उन्होंने काम किया।

पुरस्कार आणि सम्मान :

१) लोक कला के क्षेत्र में उनके लंबे समय के योगदान के लिए उन्हें 'संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार' देकर सम्मानित किया गया था।

२) महाराष्ट्र सरकार के भी अनेक सांस्कृतिक पुरस्कार उन्हें मिले थे।

मृत्यु: २६ नवंबर २०१०, नागपुर।

- स्थानीय लोक संगीत में उपयोग किए जाने वाले वाद्‌यों की जानकारी दें।
- स्थानीय लोक वाद्‌यों का वर्गीकरण करें।
- स्थानीय कलाकारों के जीवनकार्य का परिचय दें।

CG -4
C- 4.1/4.2
LO-06AE47/48/50

स्वाध्याय

१) आकृतिबंध पूर्ण करो।

(अ)

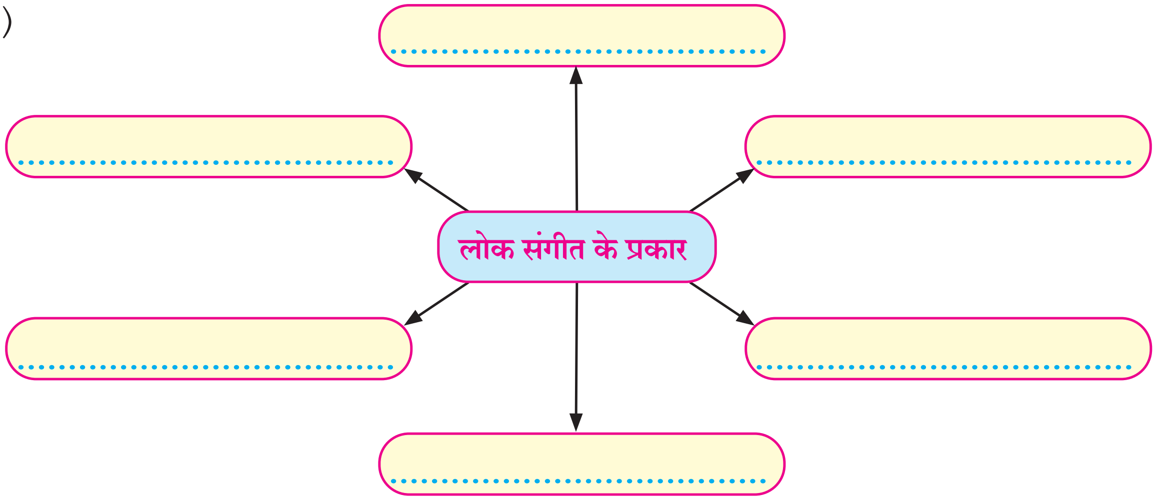

(ब)

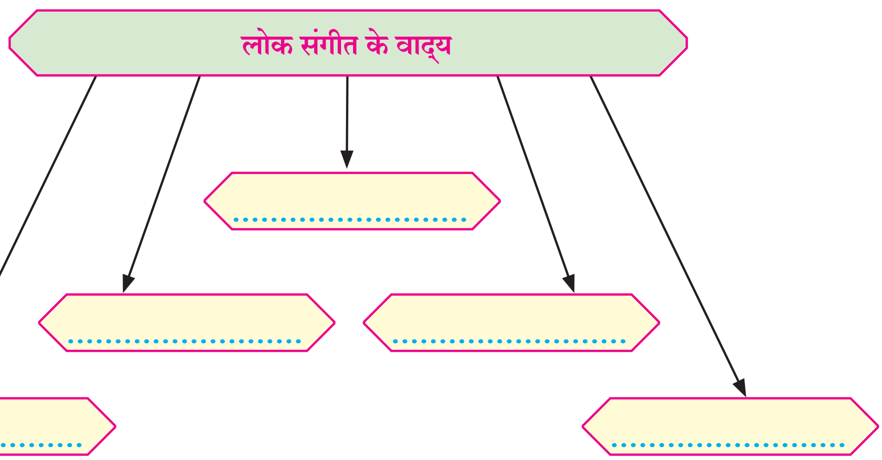

२) लोकवाद्यों का वर्गीकरण के अनुसार नाम लिखो।

अ] ताल वाद्य – ....

ब] तंतु वाद्य – ....

क] सुषिर वाद्य – ....

३) किसी एक वाद्य का चित्र बनाओ और उसके भागों के नाम दो।

४) तुम्हें पसंद आने वाला कोई एक लोकगीत लिखो।

नृत्य और गतिविधि (हलचल)

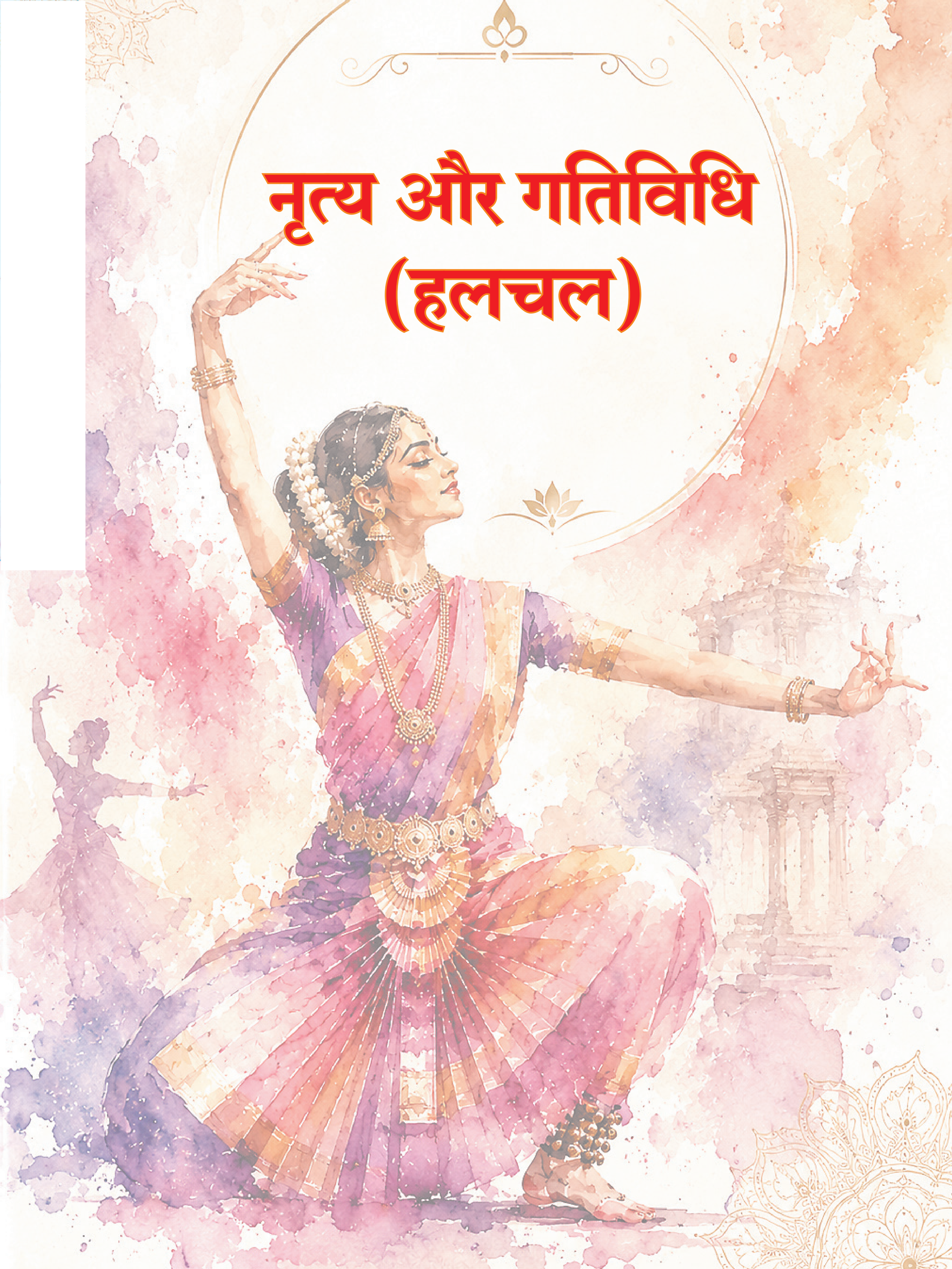

१५ अपनी शास्त्रीय नृत्य शैलियाँ

शास्त्रीय ग्रंथों के अनुसार पारंपरिक पद्धति से प्रस्तुत किया जाने वाला नृत्य ही भारतीय शास्त्रीय नृत्य कहलाता है। भारत के अलग-अलग प्रांतों में सामान्यतः नौ शास्त्रीय नृत्य शैलियाँ मानी जाती हैं। ये नृत्य शैलियाँ हमारे देश की सांस्कृतिक पहचान कराती हैं।

१. कत्थक :

कत्थक नृत्य शैली का उत्तर भारत में उद्‌गम हुआ है और इसमें हिंदुस्तानी संगीत का उपयोग किया जाता है। कत्थक नृत्य एकल तथा सामूहिक रूप में भी प्रस्तुत किया जाता है। इस नृत्य का प्रदर्शन स्त्रियाँ और पुरुष दोनों करते हैं। स्त्रियों के पहनावे में घाघरा, अनारकली और कुंदन के आभूषण, घुंघरू आदि का उपयोग किया जाता है। जबकि पुरुष कुर्ता, सलवार अथवा धोती और पैरों में घुंघरू पहनकर प्रस्तुति देते हैं। समपाद स्थान, तेज घूमना, लयबद्‌ध पदन्यास और विभिन्न कथाओं की गतिविधियों तथा अभिनय के माध्यम से प्रस्तुति देना इस नृत्य शैली की विशेषताएँ हैं।

इस नृत्य शैली के संगीत में मुख्य रूप से उपयोग किए जाने वाले वाद्‌य हैं पखवाज, तबला, हार्मोनियम, सारंगी। कत्थक नृत्य शैली में महत्त्वपूर्ण योगदान देने वाले कुछ कलाकार हैं पंडित बिरजू महाराज और गुरु डॉ. रोहिणी भाटे।

२. भरतनाट्‌यम् :

भरतनाट्‌यम् तमिलनाडु राज्य की नृत्य शैली है। इसमें कर्नाटक संगीत का उपयोग किया जाता है। कत्थक की तरह ही यह नृत्य भी एकल तथा सामूहिक रूप में प्रस्तुत किया जाता है। इस शैली का प्रदर्शन स्त्रियाँ तथा पुरुष दोनों करते हैं। स्त्रियों के पहनावे में ब्लाउज, दुपट्‌टा, पायजामा अथवा उससे जुड़ा हुआ जरी किनारे वाला दुपट्‌टे का भाग (fan) आदि तथा दक्षिण भारतीय आभूषण और पैरों में घुंघरू पहने जाते हैं। पुरुषों के पहनावे में कुरता, धोती (वेष्टी), दक्षिण भारतीय आभूषण और पैरों में घुंघरू पहने जाते हैं। अरैमंडी / आयत स्थान, मध्य लय, शारीरिक गतिविधियों और अभिनय का सामंजस्य तथा विविध कथाओं का कथन इस शैली की विशेषताएँ हैं। इस शास्त्रीय नृत्य प्रकार के संगीत के लिए सामान्यतः उपयोग में लाए जाने वाले वाद्‌य मृदंग, घटम्, बाँसुरी, वायलिन हैं। भरतनाट्‌यम् नृत्य शैली में महत्त्वपूर्ण योगदान देने वाली कलाकार हैं गुरु डॉ. सुचेता भिडे-चाफेकर।

३. कुचिपुड़ी

कुचिपुड़ी नृत्य शैली का उद्गम आंध्र प्रदेश की नाट्य परंपरा से हुआ है और इस शैली में कर्नाटक संगीत का उपयोग किया जाता है। कुचिपुड़ी नृत्य एकल तथा समूह में भी प्रस्तुत किया जाता है और यह नृत्य स्त्रियाँ तथा पुरुष दोनों प्रस्तुत करते हैं। स्त्रियों के पहनावे में ब्लाउज, दुपट्टा, पायजामा अथवा उससे जुड़ा हुआ जरी किनारे वाले दुपट्टा का भाग (fan), आदि तथा दक्षिण भारतीय आभूषण, सुंदर केश सज्जा और पैरों में घुंघरू पहने जाते हैं। पुरुषों के पहनावे में कुरता, धोती (वेष्टी), दक्षिण भारतीय आभूषण और पैरों में घुंघरू पहने जाते हैं। कुचिपुड़ी में नृत्य की गतिविधियाँ लयबद्ध, चपल और आकर्षक होती हैं। अभिनय का संतुलन तथा कुछ मात्रा में प्रादेशिक गतिविधियों का समावेश इस नृत्य की विशेषता है।

इस नृत्य शैली के संगीत में मुख्य रूप से उपयोग में लाए जाने वाले वाद्य मृदंगम, वायलिन, बाँसुरी और तानपुरा हैं। महत्त्वपूर्ण योगदान देने वाले कुचिपुड़ी कलाकार हैं गुरु विजया प्रसाद।

४. ओडिसी :

ओडिसी नृत्य शैली का उद्गम ओडिशा राज्य के मंदिरों में उद्गम हुआ है और इसमें ओडिशा के प्रादेशिक संगीत का उपयोग किया जाता है। इस शैली का एकल और सामूहिक पद्धति से प्रदर्शन किया जाता है। पारंपरिक पद्धति के अनुसार यह शैली पुरुष और स्त्रियाँ दोनों प्रस्तुत करते हैं। स्त्रियों के पहनावे में ब्लाउज, दुपट्टा, विजारी से जुड़े हुए जरी किनारे वाले दुपट्टा का भाग (fan) आदि तथा स्थानीय चाँदी के आभूषण और पैरों में घुंघरू पहने जाते हैं। पुरुषों के पहनावे में धोती, कम आभूषण और पैरों में घुंघरू पहने जाते हैं। त्रिभंगी स्थान, चौक हस्त, मध्य लय, शारीरिक गतिविधियों और अभिनय का संतुलन तथा विविध कथाओं का कथन इस शैली की विशेषताएँ हैं।

इस नृत्य शैली के संगीत में मुख्य रूप से उपयोग में लाए जाने वाले वाद्य बाँसुरी, वीणा, मंजीरा और मर्दलम हैं। महत्त्वपूर्ण योगदान देने वाले ओडिसी कलाकार हैं – गुरु झेलम परांजपे।

५. मोहिनीअट्टम् :

मोहिनीअट्टम् नृत्य शैली का उद्गम केरल राज्य में हुआ है और इसमें कर्नाटक संगीत (सोपान संगीत) का उपयोग किया जाता है। यह नृत्य शैली मुख्य रूप से एकल शैली है और इसे स्त्रियों द्वारा प्रस्तुत किया जाता है।

पहनावे में सफेद वस्त्र पहनने की परंपरा है, जिसमें ब्लाउज, दुपट्टा, परकर, सुनहरे आभूषण और पैरों में घुंघरू पहने जाते हैं।अरमंडल, लयबद्ध गतिविधियाँ, पूरे शरीर की सुंदर और कोमल गतिविधियाँ तथा विभिन्न कथाओं का कथन इस शैली की विशेषताएँ हैं।

इस नृत्य शैली के संगीत में मुख्य रूप से उपयोग में लाए जाने वाले वाद्य मृदंगम, मड्डलम, इडक्का, वीणा, वायलिन और बाँसुरी। महत्त्वपूर्ण योगदान देने वाले मोहिनीअट्टम् कलाकार हैं गुरु डॉ. कनक रेळे।

६. कथकली :

कथकली का उद्गम केरल राज्य में हुआ है और इसमें कर्नाटक संगीत (सोपान संगीत) का उपयोग किया जाता है। यह सामूहिक प्रस्तुति वाली नृत्य शैली है और इसे मुख्य रूप से पुरुष कलाकार प्रस्तुत करते हैं। पात्रों के अनुसार विभिन्न पोशाक और रंगों का उपयोग किया जाता है। हस्त मुद्राओं की भाषा का प्रमुख उपयोग तथा विशेष प्रकार की रंगभूषा और वेशभूषा इस शैली की विशेषता है। इस नृत्य शैली के संगीत में मुख्य रूप से उपयोग में लाए जाने वाले वाद्य चेंडा, मड्डलम, इडक्का, चेंगिला और इलताळम (झांज) हैं। महत्त्वपूर्ण योगदान देने वाले कथकली कलाकार हैं कलामंडलम गोपी।

७. मणिपुरी :

मणिपुरी यह नृत्य शैली मणिपुर राज्य में उदित हुई है और इसमें लोक संगीत, संकीर्तन संगीत और हिंदुस्तानी संगीत का उपयोग किया जाता है। यह नृत्य शैली एकल और सामूहिक पद्धति से प्रस्तुत की जाती है। स्त्री और पुरुष दोनों कलाकार यह नृत्य प्रस्तुत करते हैं।पहनावे में स्थानीय वस्त्रों और आभूषणों का उपयोग किया जाता है। (उदाहरण - ब्लाउज, पेटीकोट, धोती आदि।)वैष्णव परंपरा के नृत्य, कोमल और लयबद्ध नृत्य गतिविधियाँ, पूंग जैसे वाद्यों के साथ नृत्य करना इस शैली की विशेषताएँ हैं। इस नृत्य शैली के संगीत में मुख्य रूप से उपयोग में लाए जाने वाले वाद्य हैं पूंग, कर्ताल (झांज), बाँसुरी, शंख और पेन (मणिपुरी तंतुवाद्य)।महत्त्वपूर्ण योगदान देने वाले मणिपुरी कलाकार हैं गुरु दर्शना झवेरी।

८. सत्रीय :

सत्रीय यह नृत्य शैली असम के सत्रों (मंदिरों) में उदित हुई है। इसमें असम के प्रादेशिक संगीत और धार्मिक संगीत का उपयोग किया जाता है। परंपरा के अनुसार पुरुष इस शैली को प्रस्तुत करते हैं, लेकिन अब स्त्रियाँ भी यह नृत्य प्रस्तुत करती हैं। स्थानीय सफेद वस्त्रों तथा आभूषणों का उपयोग किया जाता है। (धोती, पेटीकोट, ब्लाउज, आभूषण, घुंघरू आदि)। वैष्णव परंपरा की विभिन्न नृत्य रचनाएँ और लयबद्ध गतिविधियाँ इस शैली की विशेषताएँ हैं।

इस नृत्य शैली के संगीत में मुख्य रूप से उपयोग किए जाने वाले वाद्य हैं खोल, भोरताल/मंजीरा, नगाड़ा, बाँसुरी और शंख। महत्त्वपूर्ण योगदान देने वाले सत्रीय कलाकार हैं गुरु जतिन गोस्वामी।

९. छाऊ :

छाऊ यह ओडिशा, झारखंड और पश्चिम बंगाल में विकसित हुई नृत्य शैली है। इसमें शास्त्रीय संगीत और लोक संगीत का उपयोग किया जाता है। यह शैली मुख्य रूप से समूह में प्रस्तुत की जाती है और इसे स्त्री तथा पुरुष कलाकार प्रस्तुत करते हैं। मयूरभंज, सेराइकेला और पुरुलिया छाऊ नृत्य के प्रकार हैं। जोशपूर्ण गतिविधियाँ, युद्ध पर आधारित गतिविधियाँ, विभिन्न कथाएँ और कुछ प्रकारों में मुखौटों का उपयोग इस शैली की विशेषताएँ हैं।

इस नृत्य शैली के संगीत में मुख्य रूप से उपयोग किए जाने वाले वाद्य हैं ढोल, घुमसा, नगाड़ा, मोहुरी, शहनाई और झांज/ताल। महत्त्वपूर्ण योगदान देने वाले कुछ छाऊ कलाकार हैं गुरु शशधर आचार्य।

निरीक्षण एवं चर्चा :

सभी शास्त्रीय नृत्य प्रकार मंदिर अथवा नाट्य परंपरा से उदित हुए हैं। लेकिन प्रत्येक शैली में उस-उस प्रदेश की पसंद और परंपरा के अनुसार बदलाव दिखाई देते हैं। पुस्तक में दिए गए शास्त्रीय नृत्य प्रकारों के वीडियो देखें और उनमें पदन्यास, मुद्रा आदि का निरीक्षण करके उन नृत्य प्रकारों की उत्पत्ति, संगीत, वेशभूषा, एकल/सामूहिक प्रस्तुति, विशेषताएँ आदि के संदर्भ में समानता और भिन्नता के विषय में कक्षा में चर्चा करनी चाहिए।

निरीक्षण, अभ्यास और प्रस्तुति :

विद्‌यार्थियों को विभिन्न शास्त्रीय नृत्य प्रकारों के वीडियो देखने चाहिए और उनमें की मूलभूत गतिविधियों तथा मुद्राओं का निरीक्षण करके शिक्षक के मार्गदर्शन में अभ्यास और प्रस्तुति करनी चाहिए।

इसके लिए निम्नलिखित मुद्‌दों का आधार लेना चाहिए।

अ. मूल स्थिति/खड़े होने की पद्‌धति (उदाहरण : भरतनाट्‌यम् : अरैमंडी)

ब. हाथ रखने की स्थिति (उदाहरण — ओडिसी : चौक)

क. वीडियो में दिए गए गीत या संगीत की ताल को समझकर उस पर सरल पैरों, हाथों और पूरे शरीर की गतिविधियों का अभ्यास करके प्रस्तुति करनी चाहिए।

स्वाध्याय

१. उचित जोड़ियाँ मिलाओ।

नृत्यप्रकार	राज्य
१. भरतनाट्यम्	अ. केरल
२. कत्थक	ब. तमिलनाडू
३. कथकली	क. मणिपुर
४. कुचिपुड़ी	ड. उत्तर प्रदेश
५. मणिपुरी	इ. आंध्र प्रदेश

२. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखो ।

१. तुमने देखे हुए शास्त्रीय नृत्य प्रकारों में से कौन-सा नृत्य प्रकार आपको अधिक पसंद आया? क्यों?

२. तुम्हारे प्रदेश में कौन-कौन से शास्त्रीय या लोकनृत्य प्रकार पाए जाते हैं? उन नृत्य प्रकारों की क्या विशेषताएँ हैं?

३. तुमने देखे हुए शास्त्रीय नृत्य प्रकारों में समानता और भेद लिखो।

- शिक्षक विद्यार्थियों को विभिन्न शास्त्रीय नृत्य शैलियों के वीडियो दिखाएँ। सभी नृत्यों का निरीक्षण करने के बाद उनमें से किसी भी एक नृत्य प्रकार का अनुकरण, अभ्यास और प्रस्तुति करने के लिए प्रेरित करना चाहिए।
- अधिक जानकारी के लिए प्रथम पृष्ठ पर दिए गए क्यू आर कोड को स्कैन करें।

CG - 1
C-1.1, 1.2
LO06AE51/52/53

१६ नृत्य एवं अभिव्यक्ति

शास्त्रीय नृत्य का मूलभूत घटक 'अभिनय' है। ('अभि' का अर्थ है — की ओर और 'नय' का अर्थ है – ले जाना।) दर्शकों को नृत्य में / प्रस्तुति में छिपे अर्थ की ओर ले जाना अर्थात 'अभिनय' है। नृत्य में शारीरिक गतिविधियों, हाथों के उपयोग, चेहरे के भावों के माध्यम से कलाकार किसी भावना को व्यक्त करता है और दर्शकों को अर्थ की ओर ले जाता है।

अभिनय के चार प्रकार

अभिनय के चार प्रकार माने गए हैं, वे निम्नलिखित हैं।

१. आंगिक अभिनय –

शरीर की गतिविधियों, हस्तमुद्राओं और चेहरे के भावों के माध्यम से भाव / अर्थ व्यक्त करना। (उदाहरण — दुख दर्शाने के लिए झुकी हुई रेखाओं का उपयोग, आनंद व्यक्त करते समय उछलना अथवा उत्साहपूर्ण गतिविधियाँ आदि।)

२. वाचिक अभिनय –

शब्दों, आवाज, संवाद और गायन के माध्यम से भाव / अर्थ व्यक्त करना।(उदाहरण — नृत्य के निवेदन के माध्यम से अर्थ प्रस्तुत करना, नृत्य के संगीत के शब्द / बोल आदि।)

३.आहार्य अभिनय –

वेशभूषा, रंगभूषा, आभूषण और नेपथ्य (मंच सज्जा) की सहायता से किसी पात्र को दर्शाना और उसके माध्यम से भाव/अर्थ व्यक्त करना।(उदाहरण मणिपुरी नृत्य में राधा की भूमिका करने वाली नर्तिका, विशेष वेशभूषा, आभूषण और शिरोभूषण परिधान करती है इस सजधज के साथ राधा का पात्र साकार होता है।)

सात्त्विक अभिनय : मन की भावनाएँ, संवेदनाएँ और अंतर्मन की स्थिति को स्वाभाविक रूप से व्यक्त करने वाले अभिनय को सात्विक अभिनय कहते हैं। इसमें चेहरे के भाव, आँखों में बदलाव, आँसू, रोमांच, कंप, पसीना, आवाज में बदलाव आदि का उपयोग किया जाता है। इन चारों अभिनय प्रकारों का समावेश सभी भारतीय नृत्यों में (विशेष रूप से शास्त्रीय नृत्यों में) किया जाता है। शास्त्रीय नृत्य में वाचिक और आहार्य अभिनय की तुलना में आंगिक और सात्विक अभिनय प्रकारों का उपयोग अधिक मात्रा में किया जाता है।

अभिनय के लिए मानवीय भाव-भावनाओं को समझना आवश्यक होता है। इन भावनाओं को जब रंगमंच पर प्रस्तुत किया जाता है, तब उनका रस में रूपांतरण होता है। सामान्य रूप से मानवीय भाव और रसों के नौ प्रकार माने जाते हैं। वे निम्नलिखित हैं :

क्रमांक	भाव	रस	अर्थ	चित्र
१.	रति	शृंगार	प्रेम	
२.	हास	हास्य	हँसना	
३.	शोक	करुण	दुख	
४.	क्रोध	रौद्र	गुस्सा	
५.	उत्साह	वीर	शौर्य	

- शास्त्रीय नृत्य में अभिनय के चार प्रकार उदाहरण सहित स्पष्ट करें।
- नवरसों के नाम और नृत्य में उनका उपयोग स्पष्ट करें।

CG – 2
C–2.2
LO06AE51

६.	भय	भयानक	डर	
७.	जुगुप्सा	भत्स	घृणा	
८.	विस्मय	अद्‌भुत	आश्‍चर्य	
९.	निर्वेद/शम	शांत	शांति	

नृत्य में मानवीय भावनाओं और भावनाओं के विभिन्न प्रकारों को रसों के माध्यम से व्यक्त किया जाता है। चेहरे के हाव-भाव, आँखों की गतिविधि और हस्तमुद्राओं की सहायता से इन रसों को प्रभावी रूप से प्रस्तुत किया जाता है। उदाहरण –

१. शृंगार रस : प्रेम, आनंद और अपनापन दर्शाने वाला रस शृंगार रस कहलाता है।

हाव-भाव : हल्की मुस्कान, शर्मीले भाव, कटाक्ष।

उदाहरण : राधा-कृष्ण के प्रेम भाव को नृत्य के माध्यम से प्रस्तुत करना।

२. वीर रस : साहस, धैर्य और पराक्रम दर्शाने वाला रस वीर रस कहलाता है।

हाव-भाव : आत्मविश्‍वास से भरा चेहरा, सीधे और दृढ़ होकर खड़ा होना।

उदाहरण : छत्रपति शिवाजी महाराज के युद्‌ध में शौर्य का प्रदर्शन।

३. रौद्र रस : क्रोध और गुस्से को व्यक्त करने वाला रस रौद्र रस कहलाता है।

हाव-भाव : बड़ी आँखें, तीव्र और शक्तिशाली भाव-भंगिमाएँ।

उदाहरण : देवी दुर्गा द्‌वारा महिषासुर का वध।

सभी भारतीय शास्त्रीय नृत्य प्रकारों की एक विशेषता यह है कि उनमें उपयोग की जाने वाली विभिन्न हस्तमुद्राओं या हाथों की भाषा के माध्यम से नर्तकी विभिन्न अर्थ प्रकट करती है। एक हाथ से की जाने वाली हस्तमुद्राओं को 'असंयुक्त हस्त' कहा जाता है। ये असंयुक्त हस्त कुल २८ हैं।

१. पताक

२. त्रिपताक

३. अर्धपताक

४. कर्तरीमुख:

५. मयूर

६. अर्धचंद्र

७. अराल

८. शुकतुंड

९. मुष्टी

१०. शिखर

११. कपित्थ

१२. कटकामुख

१३. सूची

१४. चंद्रकला

१५. पद्मकोष

१६. सर्पशीर्ष

१७. मृगशीर्ष

१८. सिंहमुखशिखर

१९. कांगुल

२०. अलपद्म

२१. चतुर

२२. भ्रमर

२३. हंसास्य

२४. हंसपक्ष

२५. संदंश

२६. मुकुल

२७. ताम्रचूड

२८. त्रिशूल

हस्तमुद्राओं का भावपूर्ण उपयोग :

भरतनाट्यम्, कथकली या कत्थक जैसे शास्त्रीय नृत्यों में हस्त मुद्रा संवाद का मुख्य भाग होती है। नर्तक शब्दों के बिना केवल मुद्राओं के माध्यम से विभिन्न भावनाएँ और कथाएँ प्रस्तुत करते हैं।

- विद्यार्थियों को हस्तमुद्राएँ सीखने के लिए प्रोत्साहित करें। उनका अभ्यास करवाएँ। साथ ही हस्तमुद्राओं के क्रम को बदलकर स्मरणशक्ति को बढ़ावा देने वाले खेल खेलवाएँ।
- अधिक जानकारी के लिए प्रथम पृष्ठ पर दिए गए क्यू आर कोड को स्कैन करें।

CG – 2
C–2.1/2.2
LO06AE55
/56

पताका हस्त (हाथ पूरी तरह खुला हुआ): आकाश, बादल या आशीर्वाद दर्शाने के लिए।

शिखर हस्त: अभिमान, पुरुषत्व या पर्वत दर्शाने के लिए।

मुकुल हस्त (कमल की कली): देव, प्रेम या कली दर्शाने के लिए।

करके देखो!

हस्तमुद्राओं का निरीक्षण और प्रदर्शन।

ऊपर दी गई हस्तमुद्राओं का निरीक्षण करके उनमें से कौन-सी हस्तमुद्राएँ हम दैनिक जीवन में उपयोग करते हैं, इस पर चर्चा करें और उन हस्तमुद्राओं को स्वयं करके देखो ।

उदाहरण : फूल इकट्ठा करते समय / रंगोली बनाते समय उपयोग की जाने वाली हस्तमुद्रा।

हाथों से बोलों और नृत्य करो ।

दी गई हस्तमुद्राओं का निरीक्षण करो । उनमें से तीन या चार हस्तमुद्राएँ चुनें और उन्हें गतिविधियों के साथ जोड़कर वास्तविक हाथों की गतिविधियों के साथ करके देखो ।

- **अपनी भावनाओं से पहचान।**

विद्यार्थियों को अपने दैनिक जीवन की विभिन्न भावनाओं को पहचानकर इन भावों और रसों को नृत्यात्मक गतिविधियों में बदलने का प्रयास करना चाहिए।

उदाहरण : कोई मीठा या पसंदीदा पदार्थ खाने के बाद हमारा चेहरा किस प्रकार खुशी से खिल उठता है। कड़वा या नापसंद पदार्थ खाने के बाद हमारे चेहरे पर कौन-से भाव दिखाई देते हैं, इसका निरीक्षण करें और प्रदर्शन करके देखो ।

- **अभिनय से व्यक्त हों!**

आपने सीखे हुए रस, भाव और अभिनय प्रकारों को ध्यान में रखते हुए उनमें से किसी एक रस का चयन करो और शिक्षक के मार्गदर्शन में उस पर आधारित नृत्य गतिविधियों की प्रस्तुति करो। (कम से कम ४ से ५ गतिविधियाँ अपेक्षित हैं।)

उदाहरण : छत्रपति शिवाजी महाराज या झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई के जीवन से संबंधित युद्ध के प्रसंग को प्रस्तुत करना।(वीर रस की निर्मिति)

- **कहानी पर आधारित नृत्य प्रस्तुति**

किसी भी पौराणिक कथा के पात्रों का चयन करके उसमें से किसी एक प्रसंग या घटना पर नृत्य या नाटिका प्रस्तुत करो।

उदाहरण : भक्त प्रल्हाद, सीता हरण, जातक कथा या बोधकथा आदि।

- शिक्षक विद्यार्थियों को यह पहचानने में सहायता करें कि वे भाव और रस का उपयोग अपने दैनिक जीवन में किस प्रकार करते हैं तथा विभिन्न गतिविधियों के माध्यम से विद्यार्थियों को अभिव्यक्ति के लिए मार्गदर्शन दें।
- समान समूह बनाकर प्रत्येक समूह को कहानी बाँटें और प्रस्तुति के लिए आवश्यक मार्गदर्शन दें।
- समूह बनाकर एक-एक प्रसंग चुनने में सहायता करें। इसमें विभिन्न भावनाओं का समावेश हों।
- प्रथम पृष्ठ पर दिए गए क्यू. आर. कोड को स्कैन करके वीडियो दिखाएँ।

CG - 2
C-2.1\2.2
06AE54, 55, 56, 57

स्वाध्याय

१. नीचे दी गई हस्त मुद्राओं का उपयोग हम कैसे कर सकते हैं, यह लिखो।

१. कर्तरीमुख – ....

....

....

२.कपित्थ – ....

....

....

३. अर्धचंद्र – ....

....

....

४. कटकामुख – ....

....

....

२. चेहरे के भाव दर्शाना और उन्हें पहचानना।

कृति : एक विद्‌यार्थी छह रसों में से किसी एक रस का चेहरे पर भाव दर्शाए और अन्य विद्‌यार्थियों को उस भाव और रस को पहचानना है। उदाहरण : शृंगार रस, हास्य रस, भय रस, अद्‌भुत रस, बीभत्स रस, करुण रस।

३. दैनिक जीवन के प्रसंग या घटनाओं का निम्नलिखित बातों को शामिल करके और विचार करके प्रस्तुतीकरण करो।

- दैनिक जीवन का प्रसंग चुनो।
- इस प्रसंग में आने वाले विभिन्न भाव-भावनाओं के रसों को पहचानो।

४. कल्पनाशक्ति का उपयोग करके कोई सरल कथानक तैयार करो।

(उदाहरण- बच्चे और जंगल के जानवर, बच्चे और पेड़ों के बीच संवाद) और उस पर गीत के आधार पर (गायन, वाद्य संगीत) नृत्य प्रस्तुत करो ।(आवश्यकतानुसार शब्दों का उपयोग करो।)

- विद्‌यार्थियों को विभिन्न हस्तमुद्राओं का निरीक्षण और प्रदर्शन करने के लिए प्रेरित करें। हस्तमुद्राओं की सहायता से गतिविधियाँ करने के लिए प्रोत्साहित करें। इसके लिए विद्‌यार्थियों को अपनी पसंद का गीत / ताल चुनने के लिए कहें।
- प्रथम पृष्ठ पर दिए गए क्यू आर कोड को स्कैन करके वीडियो दिखाएँ।

CG – 2
C–2.1\2.2
06AE54, 55, 56, 57

१७ नृत्य प्रस्तुति के विभिन्न पहलू

हमने शास्त्रीय नृत्य के विभिन्न प्रकार देखे। नृत्य का अभ्यास करने के बाद प्रत्यक्ष नृत्य प्रस्तुति अधिक प्रभावी हो, ऐसा प्रत्येक व्यक्ति को लगता है। नृत्य को प्रभावी रूप से प्रस्तुत करने के लिए अभ्यास के साथ-साथ कुछ अन्य तकनीकी बातें भी महत्त्वपूर्ण होती हैं।

१. नृत्य प्रस्तुति की तकनीकी व्यवस्था

जिस प्रकार नृत्य प्रस्तुति के लिए नृत्य की गतिविधियाँ और उसका शास्त्र सीखना आवश्यक होता है, उसी प्रकार निम्नलिखित तकनीकी घटकों और उपकरणों की जानकारी होना भी प्रस्तुति के लिए महत्त्वपूर्ण होता है।

१. **संगीत सामग्री** – नृत्य के लिए उचित संगीत सामग्री (ग्रंथ, पुस्तकें) का चयन करते समय उस सामग्री के शब्दों की लयबद्धता और उसके पीछे की भावनाओं का विचार करना चाहिए।

- विद्यार्थियों को नजदीकी नाट्यशाला की यात्रा का नियोजन करना चाहिए और नाट्यशाला तथा प्रस्तुति की विभिन्न तकनीकी व्यवस्थाओं का निरीक्षण करके उसे लिखने और चित्र बनाने के लिए कहना चाहिए।
- स्थानीय रंगमंच या नाट्यगृह में जाकर प्रत्यक्ष मंच का परिचय करवाना चाहिए।
- स्थानीय शास्त्रीय नृत्य कलाकारों को आमंत्रित करके उनकी नृत्य विषयक कार्यशाला आयोजित करनी चाहिए।

CG – 3
C–3.1
06AE58, 59,

२. **संगीत –** संगीत के स्वरों को नृत्य के माध्यम से दृश्य रूप देते समय उसमें स्वरों के उतार-चढ़ाव, आवाज में बदलाव आदि बातों को ध्यान में रखकर नृत्य करना चाहिए।

३. **रंगभूषा एवं वेशभूषा –** नृत्य के विषय के अनुसार रंगभूषा और वेशभूषा तय की जाती है। नृत्य प्रकार के अनुसार पोशाक, आभूषण, घुंघरू, मेकअप, मुखौटे, पगड़ी आदि वस्तुओं का उपयोग आवश्यक होता है।

४. **नेपथ्य –** नृत्य के विषय वस्तु / भाव को स्पष्ट करने के लिए नेपथ्य का उपयोग करना चाहिए। (उदाहरण — रंगमंच के पर्दे पर फूलों की मालाओं की सजावट आदि।)

५. **ध्वनि योजन –** नृत्य में उपयोग किए जाने वाले संगीत (गायन, वादन आदि) की आवाज दर्शकों तक पहुँचाने के लिए विशेष ध्वनि व्यवस्था की आवश्यकता होती है।(उदाहरण – माइक्रोफोन के प्रकार, माइक स्टैंड, केबल, साउंड मॉनिटर, साउंड बोर्ड, स्पीकर आदि।)

६. **प्रकाश योजना –** रंगमंच पर प्रस्तुत किए जाने वाले नृत्य की गतिविधियाँ स्पष्ट रूप से दिखाई दें, इसके लिए विभिन्न प्रकार के प्रकाशों का उपयोग किया जाता है।(उदाहरण — स्पॉट लाइट, हैलोजन, एल.ई.डी. लाइट आदि।) इन प्रकाशों पर विभिन्न रंगीन कागजों का उपयोग करके उनसे आने वाले रंगीन प्रकाश के कारण नृत्य में विशेष भाव प्रदर्शन अधिक प्रभावशाली दिखाई देता है।(उदाहरण — लाल रंग का उपयोग रौद्र रस / क्रोध दर्शाने के लिए।)

७. **नाट्यशाला –** नाट्यशाला के विभिन्न भागों का निरीक्षण करो।

२. रंगमंच शिष्टाचार

नृत्य, नाटक और संगीत जैसी कलाओं की प्रस्तुति का पूरा आनंद लेने के लिए, इन कलाओं को प्रस्तुत करते समय और देखते समय कुछ बातों / नियमों का पालन करना चाहिए।

कलाकारों द्‍वारा रंगमंच पर व्यवहार करते समय रखी जाने वाली सावधानियाँ :

- प्रस्तुति के समय से पहले ही नाट्यशाला में तैयार रहना चाहिए।
- हाथ में लिए जाने वाले विभिन्न उपकरणों का उचित उपयोग करना चाहिए।
- प्रस्तुति के लिए उपयोग की जाने वाली वस्तुओं (छड़ी, रुमाल, दीप आदि) की सावधानी रखनी चाहिए।
- मंच पर प्रवेश करते समय सामान्यतः जूते-चप्पल नहीं पहनने चाहिए।
- शास्त्रीय नृत्य की प्रस्तुति करते समय यदि पैरों में घुंघरू बंधे हों तो पैरों में जूते-चप्पल नहीं पहनने चाहिए।
- अपनी प्रस्तुति के लिए कब प्रवेश करना है और कब मंच से बाहर जाना है, इसका ध्यान रखना चाहिए।
- सामूहिक प्रस्तुति के समय अपने साथ के अन्य नर्तकों का सम्मान करना चाहिए और सामूहिक कार्य में एकता बनाए रखने का प्रयास करना चाहिए।
- प्रस्तुति करते समय रंगमंच की विभिन्न दिशाओं का ध्यान रखते हुए नृत्य प्रदर्शन करना चाहिए।

- विद्‍यार्थियों को उनके द्‍वारा देखी गई किसी प्रस्तुति का उदाहरण लेकर उस प्रस्तुति के विवरण पूछने चाहिए और रंगमंच के शिष्टाचार के विषय में कक्षा में चर्चा करनी चाहिए।

CG – 3
C-3.1
06AE58, 59,

दर्शकों द्वारा नाट्यशाला में व्यवहार करते समय रखी जाने वाली सावधानियाँ :

- कलाकार जब रंगमंच पर प्रस्तुति कर रहे हों, तब उचित प्रतिक्रिया देनी चाहिए।
- कलाकारों की कला का सम्मान करने के लिए प्रस्तुति के दौरान आवाज नहीं करनी चाहिए।
- प्रस्तुति चल रही हो तब खाद्य पदार्थ खाने से बचना चाहिए और एकाग्र मन से कला का आनंद लेना चाहिए।
- नाट्यशाला में शांति बनाए रखनी चाहिए।

नृत्याचे नियोजन व सादरीकरण.

नृत्य का नियोजन और प्रस्तुति करते समय निम्नलिखित बातों का विचार करना चाहिए।

१. नृत्य के लिए विषय का चयन।

२. चुने गए विषय के अनुसार उपयुक्त संगीत का चयन।

३. विषय और संगीत के अनुसार शिक्षक के मार्गदर्शन में नृत्य की संरचना करनी चाहिए।
(ऊर्जा, स्थान का उपयोग, विभिन्न रेखाओं का उपयोग आदि।)

४. नृत्य का नियमित अभ्यास।

५. नृत्य के अनुसार उपयुक्त रंगभूषा और वेशभूषा का चयन।(पोशाक, आभूषण, वस्तुएँ आदि।)

६. नृत्य के अनुसार नेपथ्य, ध्वनि, प्रकाश योजना आदि तकनीकी बातों का नियोजन।

७. नृत्य की आत्मविश्वास के साथ प्रस्तुति।

स्वाध्याय

अ] नृत्य प्रस्तुति के लिए कौन–कौन सी बातें आवश्यक होती हैं, यह लिखो।

ब] नजदीकी नाट्यशाला में जाकर वहाँ का निरीक्षण करो और उसका चित्र बनाओ।

१. रंगमंच   २. स्टेज वींगज्

३. पडदा   ४. बॅकस्टेज

क] नजदीकी नाट्यशाला में जाकर वहाँ का निरीक्षण करो और उसका चित्र बनाओ।

१. विषय   २. सामग्री   ३. संगीत

४. संरचना   ५. रंगभूषा   ६. वेशभूषा

७. नेपथ्य   ८. ध्वनि संयोजन   ९. प्रकाश योजना

ड] नृत्य प्रस्तुति के लिए आवश्यक घटकों के नाम लिखो ।

- विद्यार्थियों को नृत्य के लिए विषय चुनने में सहायता करें। साथ ही नृत्य प्रस्तुति के लिए आवश्यक तकनीकी व्यवस्था (प्रकाश योजना, ध्वनि संयोजन, नेपथ्य आदि) उपलब्ध कराने का प्रयास करें।

CG – 3
C–3.2
06AE60, 61

१८ स्थानीय नृत्य शैली और नर्तक

हमारे परिसर में अनेक नृत्य और कला प्रकार किए जाते हैं। इन कला प्रकारों का संरक्षण अनेक स्थानीय कलाकार करते हैं। उनके कार्य की जानकारी लेने से हमें अपने परिसर की कलात्मक पहचान और समृद्धि का अंदाजा होता है।

महाराष्ट्र के कुछ नृत्य कलाकारों की जानकारी।

१. विठाबाई नारायणगावकर : विठाबाई भाऊमांग नारायणगांवकर महाराष्ट्र की अत्यंत लोकप्रिय और प्रसिद्ध तमाशा सम्राज्ञी तथा लावणी कलाकार थीं। महाराष्ट्र की लोक कला (तमाशा) में उनके योगदान के कारण उन्हें 'तमाशा सम्राज्ञी' के रूप में जाना जाता है।

पूर्ण नाव: विठाबाई भाऊमांग नारायणगावकर (विठाबाई भाऊ खुडे)

जन्म: १ जुलाई १९३५, पंढरपुर (महाराष्ट्र)

मृत्यु: १५ जनवरी २००२, नारायणगाव (वय ६६ वर्षे)

परिवार: उनके पिता भाऊ खुडे प्रसिद्ध शाहीर पठ्ठे बापूराव के शिष्य थे और उनका अपना 'भाऊ-बापू मांग नारायणगांवकर तमाशा मंडल' नामक फड़ था।

कलाकृति और योगदान

कला की शिक्षा : विठाबाई को बचपन से ही घर से गायन और नृत्य की शिक्षा मिली। केवल ४-५ वर्ष की आयु से ही उन्होंने स्कूल जाने के बजाय अपने पिता के तमाशा फड़ के साथ गाँव-गाँव घूमना शुरू किया।

कला में निपुणता : मधुर आवाज, आकर्षक व्यक्तित्व और अद्भुत लावणी नृत्य के कारण उन्होंने दर्शकों के मन पर राज किया। गवळणी, लावणी और संवाद प्रस्तुति में वे अत्यंत कुशल थीं।

देशभक्ति : १९६२ के भारत-चीन युद्ध के दौरान (नेफा सीमा पर) उन्होंने भारतीय सैनिकों का मनोरंजन करने और उनका मनोबल बढ़ाने के लिए स्वयं सीमा पर जाकर तमाशा प्रस्तुत किया था।

सम्मान और पुरस्कार : लोक कला में सर्वोच्च योगदान के लिए उन्हें भारत के राष्ट्रपति के हाथों राष्ट्रपति पदक (संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार) देकर सम्मानित किया गया था।

महाराष्ट्र सरकार ने उनकी स्मृति में लोक कलाकारों के लिए 'विठाबाई नारायणगांवकर जीवनगौरव पुरस्कार' शुरू किया है, जो हर वर्ष प्रदान किया जाता है।

२. सदानंद राणे : सदानंद राणे महाराष्ट्र के एक अत्यंत प्रसिद्ध, वरिष्ठ लोक कला-लोक नृत्य के अभ्यासक, शोधकर्ता और नृत्य-नाट्य निर्देशक हैं। उन्होंने महाराष्ट्र की पारंपरिक लोक कलाओं, विशेष रूप से लावणी और लोक नृत्यों की विरासत को सुरक्षित रखने और उसे अगली पीढ़ी तक पहुँचाने के लिए पिछले ४० से अधिक वर्षों से निरंतर कार्य किया है। सदानंद राणे का संक्षिप्त परिचय और उनकी प्रमुख विशेषताएँ निम्नलिखित हैं :

१. लोक कला के अभ्यासक और लेखन : सदानंद राणे ने केवल नृत्य निर्देशन ही नहीं किया बल्कि महाराष्ट्र के विभिन्न लोक नृत्यों और लावणी के मूल स्वरूप पर गहन शोध और अध्ययन किया है। उनके इस अध्ययन का लाभ अनेक युवा कलाकारों और नृत्यांगनाओं को मिलता है।

२. परीक्षक : दूरदर्शन की 'सह्याद्री' वाहिनी पर प्रसारित होने वाली अत्यंत लोकप्रिय 'धिना धिन धा' इस नृत्य प्रतियोगिता के वे मुख्य परीक्षक रह चुके हैं।

३. सांस्कृतिक कार्यक्रम: उन्होंने अनेक ऐतिहासिक और सांस्कृतिक कार्यक्रमों का सफल निर्देशन किया है। संयुक्त महाराष्ट्र आंदोलन पर आधारित उनके 'सांस्कृतिक जागर' कार्यक्रम को बहुत लोकप्रियता मिली।

४. विभिन्न नृत्य प्रकार : लावणी के साथ-साथ कोली नृत्य, तारपा, गोंधळ और भारत के अन्य राज्यों के लोक नृत्य प्रकारों पर भी उनकी अच्छी पकड़ है।

५. प्रमुख पुरस्कार और सम्मान : महाराष्ट्र के सांस्कृतिक क्षेत्र में दिए गए योगदान के लिए उन्हें अनेक प्रतिष्ठित पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है :

राज्य सांस्कृतिक पुरस्कार (२०२३): महाराष्ट्र शासन के सांस्कृतिक कार्य विभाग द्‌वारा दिया जाने वाला प्रतिष्ठित 'राज्य सांस्कृतिक पुरस्कार (नृत्य क्षेत्र)' देकर उन्हें सम्मानित किया गया है।

लावणी गौरव पुरस्कार (२०२२): 'लावणी कलावंत महासंघ' द्‌वारा दिया जाने वाला प्रतिष्ठित 'लावणी गौरव पुरस्कार (नृत्य निर्देशक)' सदानंद राणे को प्रदान किया गया।

महाराष्ट्र लोक गौरव पुरस्कार (२०२४): महाराष्ट्र लोक कलावंत प्रतिष्ठान द्‌वारा लोक कला में उनके योगदान के लिए यह विशेष पुरस्कार दिया गया।

६. भावी पीढ़ी के मार्गदर्शक (गुरु) :

सदानंद राणे ने मुद्रा आर्ट अकैडमी जैसी संस्थाओं और सरकारी कार्यशालाओं के माध्यम से सैकड़ों युवक-युवतियों को लावणी और लोकनृत्य का शास्त्रीय प्रशिक्षण दिया है। आज अनेक प्रसिद्ध लावणी कलाकार और नृत्य निर्देशक उन्हें अपना 'गुरु' मानते हैं।

- विद्‌यार्थियों को परिसर के स्थानीय नृत्य प्रकारों का परिचय कराएँ और उन्हें इस विषय पर वृत्तांत (रिपोर्ट) प्रस्तुत करने के लिए प्रोत्साहित करें।
- स्थानीय नर्तकों और उनकी नृत्य शैली तथा नृत्य प्रकारों के बारे में कक्षा में जानकारी दें। (उदाहरण : रोहिणी भाटे, डॉ. सुचेता भिडे-चापेकर)

CG - 4
C-4.1\4.2
LO06AE62, 63

स्वाध्याय

१. स्थानीय (लोक/शास्त्रीय) नृत्य कलाकारों की जानकारी प्राप्त करो और उनके जीवन तथा कार्य के बारे में कक्षा में चर्चा करो । इन कलाकारों से भेंट/साक्षात्कार/प्रस्तुति देखो और उनके बारे में कॉपी में संक्षेप में जानकारी लिखो।

२. स्थानीय परिसर के नृत्य (लोक/शास्त्रीय) इस विषय पर जानकारी प्राप्त करके उसका वृत्तांत (रिपोर्ट) प्रस्तुत करो।

वृत्तांत (रिपोर्ट) प्रस्तुत करते समय निम्नलिखित मुद्दों पर विचार करो।

१. वृत्तांत (रिपोर्ट) का शीर्षक

२. नृत्य प्रकार का नाम

३. नृत्य प्रकार का उद्‌गम स्थान

४. नृत्य प्रकार का इतिहास तथा इसे क्यों और कहाँ प्रस्तुत किया जाता है ?

५. प्रस्तुति की पद्‌धति – एकल/सामूहिक, स्त्री/पुरुष/दोनों

६. नृत्य की रंगभूषा और वेशभूषा

७. प्रस्तुति की विशेषताएँ

नोंदी

प्रिय विद्‌यार्थी मित्रो और सहेलियो,

यदि तुम्हें कोई अयोग्य ढंग से स्पर्श करता है और तुम असमंजस या असहज अनुभव करते हो तो तुम कदापि चुप मत रहो। ऐसी घटना होने पर तुम्हें निम्न बातें करना आवश्यक है।

१) स्वयं को दोष मत दो।

२) जिन लोगों पर तुम्हें विश्वास है; उनसे घटित घटना के बारे में बताओ।

३) तुम पॉक्सो ई–बॉक्स के माध्यम से तुम्हारे अधिकारों की रक्षा हेतु स्थापित राष्ट्रीय आयोग को भी सूचित कर सकते हो।

जब कोई तुम्हें अनुचित/अयोग्य ढंग से छूता है/स्पर्श करता है तब तुम्हें बुरा लग सकता है। तुम परेशान और भ्रमित हो सकते हो। तुम स्वयं को असहाय महसूस कर सकते हो परंतु तुम्हें 'बुरा' लगने का कोई कारण नहीं होना चाहिए क्योंकि ऐसी घटना में तुम्हारा कोई दोष नहीं होता है।

इस बटन को दबाओ।

POCSO यह e-box ncpcr@gov.in इस वेबसाईट पर उपलब्ध है।

यदि तुम्हारी आयु १८ वर्ष से कम है और तुम्हें किसी ने सताया है/ तंग किया है और तुम कुछ समझ नहीं पा रहे हो, चिंतित अथवा तनावग्रस्त महसूस कर रहे हो अथवा इस प्रकार की परेशानी अनुभव करने वाले किसी लड़का/लड़की को जानते हो तो तुम १०९८ (दस नौ आठ) पर संपर्क करो। ऐसा करने से तुम्हारा और तुम्हारे मित्रों/सहेलियों का जीवन बदल सकता है।

चाइल्ड लाईन १०९८ (दस नौ आठ) : यह २४ घंटे टोल फ्री राष्ट्रीय आपातकालीन फोन सेवा है। महिला एवं बालविकास मंत्रालय द्‌वारा पीड़ित लड़कों/लड़कियों के लिए यह उपक्रम चाइल्ड लाईन फाउंडेशन ने प्रारंभ किया है।

नए समाज की ओर
Towards a new dawn

- विद्यार्थियों को उनके आयुगुट के अनुसार अच्छा स्पर्श और बुरा स्पर्श पहचानने के लिए शारीरिक एवं भावनिक दृष्टि से मार्गदर्शन करें।

महाराष्ट्र राज्य पाठ्यपुस्तक निर्मिती व
अभ्यासक्रम संशोधन मंडळ, पुणे.
कलाशिक्षण इयत्ता सहावी (हिंदी माध्यम)

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
(नि:शुल्क वितरण के लिए)

कलाशिक्षण इयत्ता सहावी (हिंदी माध्यम)